मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान
गोपनीय तंत्र विशेषांक
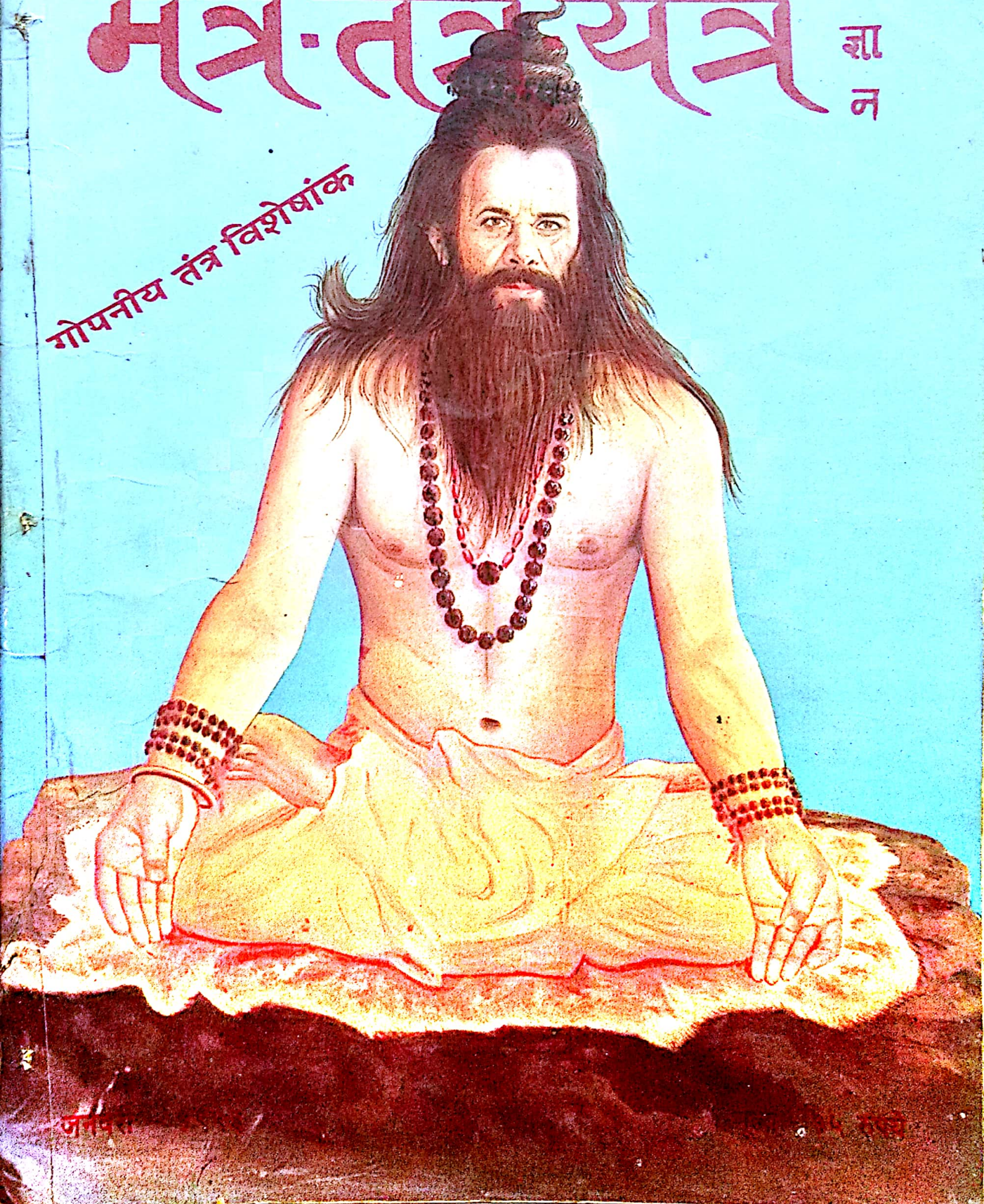
दिनांक 28-1-93
बसंत पंचमी
भाग्योदय उत्सव- नव निर्माण सिद्धि दिवस
सौभाग्य जागरण दीक्षा गुरु शक्ति पीठ जोधपुर में

अंग्रेजी में एक कहावत है कि "बोर्न विद गोल्डन स्पून" अर्थात जो बच्चा करोड़-पति घर में जन्म लेता है उसके लिये यह कहा जाता है कि यह तो जन्म से ही श्री और सौभाग्य युक्त है, ऐसा व्यक्ति अपने जीवन में और भी अधिक उन्नति करता है तो कोई विशेष नई बात नहीं होती, क्योंकि वह जन्म से ही हजारों-लाखों में खेलता है, और उसे आगे बढ़ने के सारे अवसर विद्यमान रहते है। उसे तो केवल जो मिल रहा है उसे सार संभालकर उसकी रक्षा करनी है, बाकी बढ़ोत्तरी तो अपने आप ही हो जाती है।

लेकिन जो बालक गरीब घर के परिवार में अथवा मध्यम वर्ग में जन्म लेते है, उन्हें संघर्ष करना पड़ता है। अपनी राह अपने आप बनानी पड़ती है। रास्ते के कांटे चुन-चुन कर हटाने पड़ते है, अपने श्रेष्ठ जीवन का निर्माण नींव से प्रारम्भ करना पड़ता है।

और ऐसे व्यक्ति के लिये तीन गुण जीवन में होने आवश्यक है

(1) वाक् सिद्धि (2) आत्म शक्ति (3) आकर्षण शक्ति

जब इन तीन गुणों को जो व्यक्ति अपने भीतर जाग्रत कर देता है तो फिर उसे आगे बढ़ने से, जीवन में पूर्ण उन्नति प्राप्त करने से कोई नहीं रोक सकता, और फिर इनके बच्चों को जीवन में वे समस्याएं नहीं उठानी पड़ेगी जिसके कारण जिन्दगी साधारण सी बनकर रह जाय यह ध्यान रहे कि बच्चे की बुद्धि के विकास का द्वार, उन्नति के विकास का द्वार खोलने की पूर्ण जिम्मेदारी प्रारंभिक अवस्था में उसके माता पिता की ही है।

बसंत पंचमी पर्व

बसंत पंचमी पर्व को तीन विशेष नामों से जाना जाता है

(1) बसंत पंचमी (श्री पंचमी) (2) वागीश्वरी "सरस्वती जयंती" (3) रतिकाम जयंती, इस प्रकार उपरोक्त तीनों से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि बसंत ऋतु के आगमन के सूचक इस पर्व का कितना महान विशेष महत्व है।

जब भी कोई महत्वपूर्ण दिवस आता है तो पूज्य गुरुदेव आश्रम में कह देते है कि अमुक पर्व विशेष महत्व का है, और इस दिवस को तुम लोगों को यह कार्य करना है, जो शिष्य पूज्य गुरुदेव के इन संकेतों को समझ जाते वे इस प्रकार के सिद्ध मुहूर्तों का पूर्ण लाभ उठाकर श्रेष्ठ साधना में श्रेष्ठ सफलता प्राप्त करते है।

अजय कुमार उत्तम 4396

आनो भद्राः कृतयो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

प्रार्थना

सर्वेभवन्तु सुखिनः
सर्वे शन्तु निरामय ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मां कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ।

अर्थात् सभी सुखी हो, पूरे विश्व में शांति बनी रहे सभी लड़ाई झगड़े बन्द होकर लोग सुखमय जीवन व्यतीत करें, और किसी को भी किसी प्रकार का दुःख न हो।

वैधानिक नियम

इस महीने

क्या हमारे पूर्वज पारे से सोना बनाते थे
निश्चय ही, और यह कोई कठिन या असंभव क्रिया नहीं है, आप भी इस ओर प्रयत्न करिये न।

सहस्त्ररूपा लक्ष्मी सिद्धि
एक महत्वपूर्ण प्रयोग, जिसके माध्यम से हम हजारों वर्षों की गरीबी दरिद्रता और अभाव को हमेशा के लिये मिटा सकते है

अपने सूक्ष्म शरीर से कहीं पर भी यात्रा कीजिये
हाँ ! विश्व के किसी भी भाग में अपने सूक्ष्म शरीर से यात्रा की जा सकती है, कुछ विशेष प्रयोगों से, कुछ विशेष क्रियाओं से।

इसके अलावा भी

– और भी बहुत कुछ – इसी अंक में

सम्पादकीय

जीवन का अर्थ है निरन्तर उर्ध्वमुखी होना, निरन्तर ऊंचाई की ओर उठना, निरन्तर सफलता प्राप्त करना, पर यह सब मनुष्य के बस की बात नहीं हैं। जीवन में पूर्णता तक पहुंचना, या जिस क्षेत्र में हों उस क्षेत्र में प्रसिद्धि, सम्मान, यश और शिखर-पुरूष बनने के लिये दैवी सहायता अत्यन्त आवश्यक है, और दैवी सहायता प्राप्त हो सकती है, तंत्र, मंत्र एवं साधना पद्धति से।

यह विषय इतना सामान्य नहीं है कि हर ऐरा, गैरा व्यक्ति आपको मंत्र समझा दें, या साधना विधि सिखा दें। जो खुद अज्ञानी है जो खुद अधकचरा है, जिसको खुद को अनुभव नहीं है वह आपको पूर्णता कैसे दिला सकता है? वह आपको सफलता की ओर कैसे अग्रसर कर सकता है? जो स्वयं दरिद्री और भिखारी है, और आपसे धन की याचना करता है वह आपको सम्पन्न कैसे बना सकता है?

पर यह विषय इतना कठिन और दुरूह भी नहीं है कि आप इसे समझ न सकें या साधना न कर सकें, गृहस्थ में रहते हुए, गृहस्थ के कर्तव्यों का पालन करते हुए नौकरी अथवा व्यापार करते हुए भी आप किसी योग्य गुरु के निर्देशन में संबंधित साधना प्राप्त कर सकते है, और उनकी बताई हुई विधि से साधना संपन्न कर सफलता प्राप्त कर सकते है।

यह हमारा सौभाग्य है कि हमारे बीच परम पूज्य गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त जी श्रीमाली विद्यमान है जिनकी सैकड़ों पुस्तकों ने लाखों लोगों को रोशनी दी है, मार्ग दर्शन दिया है, और उन्हें पूर्णता की ओर अग्रसर किया है, मंत्र और तंत्र, योग और ज्योतिष, आयुर्वेद और कर्मकाण्ड सभी क्षेत्रों में उनका समान रूप से वर्चस्व है, पूर्णता है, श्रेष्ठता है, और उनके निर्देशन में हजारों साधक शिष्य सफलता की ओर अग्रसर हुए है, पूर्णता की ओर बढ़े है, ऐसे हजारों उदाहरण है जिन्होंने पूज्य गुरुदेव से दीक्षा लेकर साधनाएं संपन्न की है, और अपने जीवन की न्यूनताओं को पूरा किया है। व्यापार में उन्नति की है, दरिद्रता को मिटाया है, पूर्ण रूप से आरोग्य प्राप्त किया है, और अपनी आंखों से इष्ट देव के दर्शन कर जीवन को पूर्णता दी है, यह हमारा सौभाग्य है कि उनका इस अद्वितीय पत्रिका ''मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान'' पर वरदहस्त है, आशीर्वाद है, और पत्रिका का एक एक पन्ना उनके द्वारा निर्मित है।

यह पत्रिका सन् 1981 से बराबर प्रकाशित हो रही है, और इन 12 वर्षों में इसकी देखा देखी मंत्र तंत्र से संबंधित सैकड़ों पत्रिकाएं प्रकाशित हुई, और बंद हो गई, जब तक किसी युग पुरुष का सहयोग या वरद हस्त प्राप्त नहीं होता तब तक पत्रिका उन्नति की ओर अग्रसर नहीं हो सकती, क्योंकि इस प्रकार की पत्रिकाओं के मूल में श्रेष्ठ मंत्र और प्रामाणिक साधना विधि आवश्यक है।

हमारी पत्रिका की नीति प्रारम्भ से ही यह रही है कि इसमें जो भी मंत्र तंत्र या साधना पद्धति प्रकाशित हो, वह अपने आप में पूर्ण रूप से प्रामाणिक हो, वह अपने आप में शास्त्र-सम्मत हो और हम बराबर इसी नीति का पालन कर रहे हैं, हम वे ही साधनाएं देते है जो प्रामाणिक हो, साथ ही साथ अनुभव की कसौटी पर खरी उतरी हो।

साधना में सफलता प्राप्ति के लिये यह जरूरी है कि व्यक्ति योग्य गुरु से दीक्षा प्राप्त करें, तभी वह आगे की ओर बढ़ सकता है, और निरन्तर एक के बाद एक इस प्रकार जो शास्त्रो में छः दीक्षाएं वर्णित की है, उन छहों दीक्षाओं को प्राप्त कर साधना क्षेत्र में प्रवेश करता है तो सफलता ज्यादा निकट होती है, फिर भी यह सब कुछ श्रद्धा और विश्वास पर आधारित हैं। ये छः दीक्षाएं है- 1. सामान्य दीक्षा 2. तेजस दीक्षा 3. चैतन्य दीक्षा 4. साफल्य दीक्षा 5. कुण्डलिनी जागरण दीक्षा और 6 पूर्णत्व दीक्षा ।

कोई भी साधक या पाठक ऊर्ध्वगामी विषयों की ओर उन्मुख होना चाहता है, तो उसे भली प्रकार से दीक्षित होकर साधना क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहिए फिर भले ही वह मंत्र शास्त्र हो या तंत्र का क्षेत्र, ज्योतिष हो या पारद विज्ञान, सूक्ष्म शरीर साधना हो या स्वर्ण निर्माण प्रक्रिया, पारद विज्ञान...... किसी भी विषय में वह सफलता पा सकता है।

और फिर जब पूज्य गुरुदेव श्रीमाली जी जैसे युग पुरुष हमारे बीच हो तो फिर इससे बड़ा सौभाग्य हम लोगों का हो भी क्या सकता है उनका मार्ग दर्शन पाने के लिए तो बड़े बड़े योगी भी तरसते है।

गुरुदेव ने तो कहा है कि मुझे समर्पित शिष्य दे दो मैं उसे जाज्वल्यमान हीरक खण्ड बना कर दिखा दूंगा।

आपके सहयोग से हम यह चाहते है कि ऐसी पत्रिका लाखों व्यक्तियों के हाथों में पहुंचे और यह तभी संभव है जब आप ऐसा बीड़ा उठाएं प्रत्येक साधक, प्रत्येक पाठक यह निर्णय कर लें कि मुझे एक महिने के भीतर-भीतर पांच नये पत्रिका सदस्य बनाने ही है, उन्हें साधना पथ पर अग्रसर करना ही है, तो निश्चय ही इस युग में एक क्रांति हो सकेगी और यह क्रांति ही इस भौतिकमय युग में व्यक्ति को सत्य पुरुष, देव पुरुष, साधना पुरुष बना सकेगी और यह काम तो कठिन नहीं है, थोड़ा सा विचार करने करने की जरूरत है, थोड़ी सा अग्रसर होने की जरूरत है।

पूज्य गुरुदेव श्रीमाली जी से नित्य सैकड़ों, हजारों व्यक्ति मिलने के लिये आते है इन सब से एक साथ मिलना संभव नहीं होता, इसलिये यथा संभव टेलीफोन पर उनसे संपर्क स्थापित कर मार्ग दर्शन प्राप्त कर लें और जरूरी हो तो उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलकर साधना की बारीकी समझे अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त कर लें, आप जोधपुर या दिल्ली दोनों स्थानों पर टेलीफोन कर ज्ञात कर सकते है कि वे कहां पर विद्यमान है।

एक बार मैं फिर नये वर्ष के शुभ अवसर पर आप सब की मंगलकामना करता हुआ उम्मीद करता हूं कि आप तेजी के साथ साधना पथ पर अग्रसर हों, सफलता प्राप्त कर सकें, और हमारा सिद्धाश्रम साधक परिवार का विस्तार ज्यादा से ज्यादा हो सके।

स्नेहयुक्त

संपादक मंडल

मैंने पत्रिका में प्रकाशित कई साधनाएं पूज्य गुरुदेव के सानिध्य में संपन्न की और मुझे प्रत्येक साधना में सफलता प्राप्त हुई। वास्तव में ही पूज्य गुरुदेव मंत्र, तंत्र, योग, ज्योतिष, आदि विषयों के उच्चतम ज्ञाता है, उनके पास क्षण भर बैठना ही जीवन की श्रेष्ठता है.

-श्याम कुमार बनर्जी, फैजाबाद

मैंने पिछले दिनों कई साधकों को अपने साथ ले जाकर श्मशान साधनाएं संपन्न करवाई और प्रत्येक साधना अपने आप में सफलता दायक और स्मरणीय रही। मैं ही नहीं, अपितु कई साधकों ने इससे लाभ उठाया।

वास्तव में ही पत्रिका में प्रकाशित एक-एक अक्षर हीरे जवाहरात की तरह मूल्यवान है, प्रामाणिक है, सफलता दायक है।

-हरीराम चौधरी, फैजाबाद

मैं पिछले कई वर्षों से पूज्य गुरुदेव और इस पत्रिका से जुडा हुआ हूं मेरा मूल विषय "तंत्र" रहा है और तंत्र के क्षेत्र में मैंने काफी सफलताएं प्राप्त की है, मैं अब किसी भी स्थिति को तंत्र के माध्यम से अपने अनुकूल बनाने में समर्थ हूं।

-चन्द्रगुप्त जायसवाल, गाजियाबाद

मेरा प्रिय विषय ध्यान और कुण्डलिनी जागरण रहा है, और मैंने पूज्य गुरुदेव से इसी संबंध में प्रार्थना की थी, उन्होंने जिस तरीके से मुझे समझाया, वह सरल होने के साथ-साथ पूर्ण सफलता दायक रहा, आज मैं कुण्डलिनी जागरण के क्षेत्र में अपनी उपलब्धियों पर गर्व करता हूं।
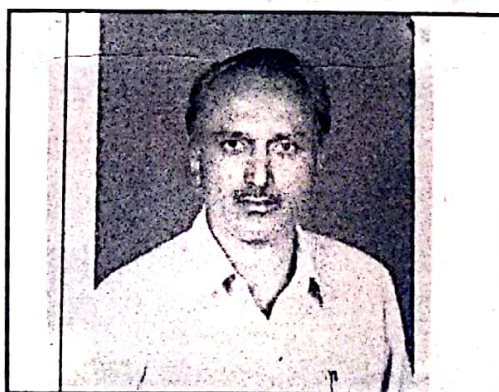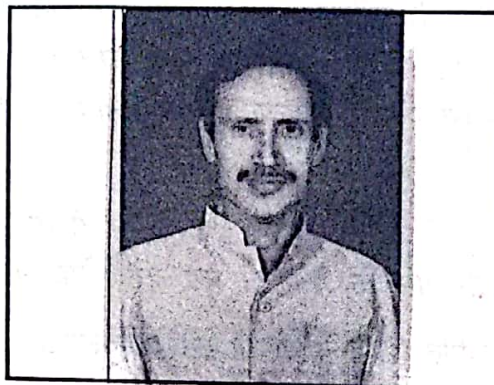
-पी.सी. अग्रवाल, मुजफ्फरनगर

मैंने पत्रिका में प्रकाशित लक्ष्मी प्राप्ति से संबंधित तारा साधना संपन्न की मुझे भगवती तारा के प्रत्यक्ष दर्शन तो नहीं हुए, परन्तु मुझे आर्थिक क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त हुई, मेरी कहानी रंक से राजा बनने की कहानी है, मैं निरन्तर आर्थिक उन्नति की ओर अग्रसर हूं तो इसका मूल कारण लक्ष्मी से संबंधित ये साधनाएं ही है, जिनका मैंने उपयोग किया।

-वासुदेव पाण्डेय, बस्ती

पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में मैंने तीन-चार शिविरों में भाग लिया और प्रत्येक शिविर अपने आप में एक उपलब्धि था। पूज्य गुरुदेव सैकड़ों शास्त्रों एवं साधनाओं के उदाहरण देकर जो कुछ बारीकियां समझाते है वे अपने आप में अद्वितीय होती है।

वास्तव में ही मैं पूज्य गुरुदेव का सानिध्य पाकर और उनका शिष्य बनकर अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करता हूं।

-प्रवीण जोशी, बड़ौदा

मैं तो एक कोरा कागज था, न तो मुझे शास्त्र का ज्ञान था और न साधना का। परन्तु पिछले कई वर्षों से मैं पत्रिका के संपर्क में हूं और उसके माध्यम से जो कुछ ज्ञान प्राप्त कर सका हूं उससे आज मैं सैकड़ों हजारों लोगों के आंसू पौछने में सहायक बन सका हूं।

इसका सम्पूर्ण श्रेय पूज्य गुरुदेव और इस पत्रिका को है।

–सनद कुमार अधिकारी, काठमाण्डू

पत्रिका के पुराने अंक सन् 1981 से प्रकाशित) अपने आप में मूल्यवान धरोहर है और साधनाओं का खजाना है। मैंने इन सभी पत्रिकाओं को प्राप्त किया है, और मैंने अनुभव किया है कि पत्रिका के इन पन्नों पर जो कुछ प्रकाशित है उसका कोई मुकाबला ही नहीं है। मेरी तो राय है कि प्रत्येक साधक को सन् 1981 से अब तक प्रत्येक वर्ष के अंकों का संग्रह अभी से प्राप्त कर लेना चाहिये, अन्यथा बाद में तो देखना, पढ़ना भी असंभव सा हो जायेगा।

–हरिनाथ, लखनऊ
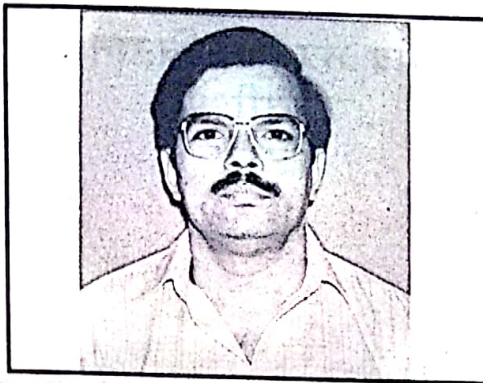
गोल्डन कार्ड योजना के अन्तर्गत मैं कई साधनाओं में भाग ले सका, और वह भी लगभग निः शुल्क, इससे मुझे लाभ ही लाभ हुए है, मैं इस योजना का तहे दिल से स्वागत करता हूं।

–सुभाष, बांकुरा

मैंने दीपावली पर जो लक्ष्मी साधना पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में की, वह अपने आप में अद्वितीय रही, और एकदम से मेरा व्यापार ऊंचाई की ओर बढ़ गया।

–हरीश, कलकत्ता

एक एक लेख मोती की तरह पिरोया हुआ है जो कि स्मरणीय ही नहीं भावी पीढ़ी की धरोहर है, संग्रहणीय है

–गजानन शर्मा हापुड़

पूज्य गुरुदेव तो इस विश्व की धरोहर है, आनेवाली पीढियां विश्वास ही नहीं करेगी, कि हम अर्थात् उन पीढ़ियों के पूर्वज कभी श्रीमाली जी के चरणों में भी बैठे थे।

–वटाणी, बम्बई

प्रत्येक साधना अपने आप में अद्वितीय है मैंने पत्रिका के माध्यम से साधना की और पहली ही बार में सफलता प्राप्त हो गई

–सूर्यकान्त गेलाणी, बम्बई

वर्ष 12 अंक 1 **सम्पादक मंडल** **जनवरी 93**

पंत्र व्यवहार– मंत्र तंत्र यंत्र कार्यालय, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)
टेलीफोन-0291-32209

दिल्ली कार्यालय– गुरुधाम-306 कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली- टेलीफोन-011-7182248

सम्पादक मंडल– डॉ. श्यामल कुमार बनर्जी, कृष्ण मुरारी श्रीवास्तव, गुरु सेवक

सहायक– सुभाष बांकुरा

प्रधान सम्पादक
योगेन्द्र निर्मोही

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान
जनवरी 93
केसेट

जो बोलकर एक एक साधना, मंत्र ध्यान और बारीकियां स्पष्ट करती है

एक महत्वपूर्ण केसेट

एक महत्वपूर्ण योजना, जो कि प्रत्येक साधक के लिये आश्चर्यजनक उपलब्धियों के साथ प्रस्तुत है।

काफी समय से साधकों की मांग थी कि पत्रिका के साथ-साथ यदि कैसेट भी प्राप्त हो जिसमें उस महिने की प्रमुख साधनाएं विस्तार से स्पष्ट की हुई हो, और वे बारीकियां बताई गई हो जो कि पत्रिका में स्पष्ट नहीं होती ।

इसके साथ ही साथ कई बार मंत्र का उच्चारण या स्तोत्र का उच्चारण ज्ञात नहीं होता। पत्रिका के पन्ने बोलते नहीं, और वे उस मंत्र का उच्चारण भली प्रकार से नहीं कर पाते, ऐसी स्थिति में केवल एक ही स्थिति बच जाती है कि प्रत्येक महीने की केसेट में उस महीने की साधनाएं ध्यान विनियोग आदि स्पष्ट किये हुए हों।

जनवरी 1993

पत्रिका केसेट

पत्रिका पाठकों के विचारों को ध्यान रखते हुए यह निश्चय किया है कि प्रत्येक महिने ऐसी केसेट 'रिलीज' की जाय जिसमें उस महीने की लगभग सभी साधनाएं प्रामाणिक रूप से बताई हुई हो और साथ ही साथ उस साधना से संबंधित बारीकियां स्पष्ट की हुई हो। साधना से संबंधित मंत्र उच्चारण आदि भी प्रामाणिकता के साथ वर्णित हों।

और अब प्रस्तुत है जनवरी सन् 1993 की यह दुर्लभ केसेट जिसमें महत्वपूर्ण साधनाओं उससे संबंधित विवरण और साथ ही साथ मंत्रों का उच्चारण आदि प्रामाणिकता के साथ वर्णित हैं। यह केसेट संग्रहणीय है इस प्रकार की केसेट ऐतिहासिक है और यह दुर्लभ केसेट प्रत्येक साधक, शिष्य और पाठक के लिये महत्वपूर्ण है।

जनवरी 1993 - केसेट - न्यौछावर 42/- रुपये

(उत्तम क्वालिटी की केसेट और श्रेष्ठ तकनीक से निर्मित)

आप धनराशि अग्रिम न भेंजे, हमें आप पर विश्वास है, आप मात्र सूचना भेज दें, हम आपको 42/- रुपये मूल्य तथा 6/- रुपये डाकखर्च लगाकर 48/- रुपये की वी.पी. से यह केसेट आपको भिजवा देंगे।

संपर्क– मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), टेलीफोन-0291-32209,

आप भी अपना आभा मंडल देख सकते हैं

अब यह विश्व के वैज्ञानिकों ने स्वीकार कर लिया है कि प्रत्येक प्राणी के शिर के चारों ओर राम, कृष्ण, बुद्ध, ईशा की तरह प्रभामण्डल है और इस प्रभा मंडल को पहिचानने से ही वह विश्व में प्रसिद्ध हो सकता है । आप भी अपने प्रभामण्डल के द्वारा अपने अन्दर छिपे प्रभामण्डल को विकसित कर सकते हैं एक गोपनीय और महत्वपूर्ण लेख, आपके लिये ।

इस संसार में मनुष्य सबसे अद्‌भुत प्राणी है । हम जितना ही ज्यादा इसे समझने की कोशिश करते है उतना ही ज्यादा यह मनुष्य शरीर रहस्यमय बनता रहता है ।

भारतीय दर्शन शास्त्र ने यह स्वीकार किया है कि मनुष्य का जो हम यह स्थूल शरीर देखते हैं केवल इतना ही शरीर नहीं अपितु इसके अलावा भी उसके छः शरीर और हैं । इस प्रकार इन सातों शरीरों से ही मनुष्य का निर्माण हुआ है । परन्तु हम केवल स्थूल शरीर को ही देख पाते हैं, और हमारी बुद्धि इस स्थूल शरीर तक ही सीमित है ।

जिस प्रकार एक्सरे मशीन से कपड़े पहने होने के बावजूद भी वह यंत्र या कैमरा शरीर के अंदर का चित्र खींच लेता है उसी प्रकार रूस के एक मनोवैज्ञानिक दम्पति ने एक ऐसा कैमरा बनाया है जिसके माध्यम से इस स्थूल शरीर के अंदर जो छः शरीर हैं उनका भी चित्र खींचा जा सकता है, और समझा जा सकता है । यह दम्पति है - इलेक्ट्रोनिक विशेषज्ञ सेमयोन किलियान तथा इनकी पत्नी वेलेन्टीना।

मानव शरीर के चारों ओर प्रभा मंडल की कल्पना सैकड़ों-हजारों वर्षो पहले भारत मिस्र, यूनान, रोम आदि देशो में संत महात्माओं के चेहरे के चारों ओर प्रभा मंडल दिखाया जाता है। भारत वर्ष में आज भी राम, कृष्ण, बुद्ध,

महावीर या नानक देव आदि के चित्र दिखाई देते हैं उनके मुख मंडल के चारों ओर ज्योतिर्मयी प्रभा चित्रित की जाती है।

हकीकत यह है कि जो इन महा पुरुषों के चेहरे के चारों ओर प्रभा मंडल है वह प्रत्येक मनुष्य के चेहरे के चारों ओर रहता है, यह बात अलग है कि जन साधारण अपनी सामान्य दृष्टि से देख नहीं पाता। ब्रिटेन की प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक श्रीमती एलीन गैरेट ने तो अपनी पुस्तक "अवेयरनेस" में यहां तक लिखा है कि मैंने अपने कैमरे से मनुष्यों के अलावा पौधों, पशुओं और प्रत्येक प्राणी के चारों ओर छोटा सा प्रभामंडल देखा है।

हमारे पूरे जीवन को यह प्रभामंडल संचालित करता रहता है। जैसा कि मैंने ऊपर बताया कि मनुष्य के इस स्थूल शरीर के अलावा छः शरीर और हैं, और उन्हें समझना भी जरूरी है।

(1) स्थूल शरीर:- यह ठोस पदार्थों से निर्मित शरीर है, जिसे "अन्नमय कोष" कहा गया है। यह सामान्य शरीर है, जो प्रत्येक पशु, पक्षी या मनुष्य को प्राप्त है। इस शरीर में कोई विशेषता नहीं हैं।

(2) प्राण शरीर:- यह स्थूल शरीर से थोड़ा महत्वपूर्ण है, और यही इस स्थूल शरीर को ऊष्मा और जीवन्तता देती है इसे "प्राणमय कोष" भी कहा गया है। यह शरीर, स्थूल शरीर तथा अगले पांच शरीरों के बीच में कड़ी के रूप में कार्य करता है। प्राण तत्व के माध्यम से ही अगले पांच शरीरों को देखा, परखा या स्पर्श किया जा सकता है।

(3) काम शरीर:- इसे "मनोमय कोष" भी कहा गया है और इसके माध्यम से ही व्यक्ति अपने समान एक और शरीर का निर्माण कर सकता है। इसीलिये इसको पशु शरीर भी कहा गया है। काम के माध्यम से ही व्यक्ति जीवन में जोश, उमंग और उत्साह का अनुभव करता है।

(4) सूक्ष्म मन शरीर:- यह भी काममय कोष का ही एक भाग है पर इससे व्यक्तित्व दिमाग और बुद्धि का निर्माण होता है। इसके माध्यम से ही व्यक्ति में चतुराई, किसी भी तथ्य को सूक्ष्मता से समझने की क्रिया, चालाकी, धूर्तता, मक्कारी आदि का विकास होता है।

(5) उच्च मन शरीर:- यह श्रेष्ठ शरीर का पहला चरण है, और इसे "विज्ञानमय कोष" कहा गया है। एक प्रकार से देखा जाय तो यह मनुष्य को ऊपर उठाने का एक भाग है, जहां से व्यक्ति पूर्णता की ओर छलांग लगा सकता है, इससे देवत्व की प्राप्ति अनुभव होती है, पर यदि यह विपरीत धारा की ओर बढ़ जाय तो इससे अहंकार की सृष्टि भी हो जाती है, इस शरीर पर ज्यादा नियंत्रण रखने की जरूरत है।

(6) बुद्धि शरीर:- इसको "निर्वाण शरीर" भी कहते हैं, और यहां पर पहली बार आदमी अपनी स्थूल देह को छोड़कर सूक्ष्म देह की ओर बढ़ता है, इसे आनन्दमय कोष कहा गया है, और इस शरीर में आकर ही आदमी अपनी आत्मा को देखने और पहिचानने की क्षमता का विकास कर सकता है।

(7) आत्म शरीर:- इसे "आत्मा" भी कहा गया है और यह अपने आप में पूर्ण रूप में सूक्ष्म शरीर है। यहां पर जब व्यक्ति पहुंचता है तो वह पूर्ण रूप से देवत्व को प्राप्त हो जाता है, और उसके चेहरे के चारों ओर प्रभामंडल तीव्र बन जाता है, जिसे कोई भी देख पाने में समर्थ होता है।

जब मनुष्य अपने गुरू के बतायें हुए रास्ते पर चल कर इस स्थूल शरीर से आत्म शरीर तक पहुंचता है तो फिर वह अपनी इच्छा से किसी भी स्थान पर जा सकता है, जितने भी चाहे अपने स्थूल शरीर बना सकता है, और हजारों-लाखों मील दूर घटी घटनाओं को प्रामाणिक रूप से देख सकता है, तथा उनमें हस्तक्षेप भी कर सकता है।

प्रभामंडल:- आत्म शरीर की यह आभा सूर्य ग्रहण के समान दिखाई देती है, जो पूरे शरीर को ढके रहती है, पर साथ ही साथ चेहरे के चारों ओर ऐसी किरणें निकलती

इस प्रकार से यह एक आश्चर्यजनक और क्रांतिकारी प्रयोग है जिस पर पश्चिम में करोड़ों-करोड़ों रुपये व्यय किये जा रहे हैं, और अधिकतर अपने बच्चे को जन्म देने से पहले ही उसमें ऐसी चेतना देने के लिये आतुर हैं, जिससे वह एक अद्वितीय बालक को जन्म दे सके।

वास्तव में ही सामान्य से प्रयोग के द्वारा मानव या कोई भी व्यक्ति इस क्षेत्र में अद्वितीय सफलता प्राप्त कर सकता है।

है, जिससे यह प्रकाशबिम्ब चेहरे के चारों और दिखाई देने लगता ।

जैसा कि मैंने बताया कि आभा मंडल केवल देवी, देवता या महापुरूषों के इर्द गिर्द ही नहीं होता, अपितु प्रत्येक जन्म लेने वाले व्यक्ति के चारों ओर होता है, पर वह ज्यादा तेज एवं ज्योतिर्मय नहीं होता, इसलिये उसे देख पाना सामान्यतः संभव नहीं है, पर यदि कोई भी व्यक्ति थोड़ी सी भी साधना करे तो किसी भी व्यक्ति के शरीर तथा चेहरे के आभा मंडल को देख सकता है, इसे अंग्रेजी में "ओरा" तथा महावीर स्वामी ने "लेश्या" कहा है ।

आभा मंडल को देखने और पहिचानने से कई तथ्यों का पता आसानी से लगाया जा सकता है। भारतीय शास्त्रों एवं पश्चिम के आधुनिक शोध ने निम्न तथ्य स्पष्ट किये हैं, और बताया है कि आभा मंडल से निम्न लिखित तथ्यों का पता तो आसानी से लगाया जा सकता है-

आभा मंडल पहिचानने से लाभः-

चाहे किसी भी व्यक्ति का आभा मंडल सामान्य हो और नंगी आंखों से दिखाई न देता हो परन्तु यदि कोई साधक इससे संबंधित साधना कर ले तो वह प्रत्येक व्यक्ति, पेड़, पौधे, पशु-पक्षी तथा सामान्य व्यक्ति के आभा मंडल को भी देख सकता है ।

(1) आभा मंडल देखने से एक ही क्षण में उस व्यक्ति के समस्त भूत काल को देखा जा सकता है, कि उसने अपने जीवन में क्या-क्या कार्य किये हैं? धोखेबाज, विश्वासघाती व्यक्ति का पता इससे आसानी के लगाया जा सकता है । इसके माध्यम से व्यक्ति के चरित्र का पता लग जाता है, और उसने क्या-क्या कार्य किये हैं उसका चरित्र कैसा रहा है, ये सब कुछ आसानी से पता लग जाता है।

(2) जिस प्रकार किसी भी व्यक्ति के भूत काल का आसानी से पता लगता है उसी प्रकार उसके पूरे भविष्य को भी हम आसानी से देख सकते है, और यह पता चल जाता है कि यह भविष्य में किस क्षेत्र में जायेगा, कितनी उन्नति करेगा, और जीवन में कब-कब, क्या-क्या घटनाएं घटित होगी ? आयु, स्वास्थ्य, विवाह, संतान, भाग्य, आत्म उन्नति, यात्राएं आदि सब कुछ इसके माध्यम से एक ही क्षण में जाना जा सकता है ।

(3) आभा मंडल के माध्यम से व्यक्ति के चरित्र को बदला जा सकता है, और उसके चरित्र को अनुकूल बनाया जा सकता है ।

(4) आभा मंडल में सात रंग अलग-अलग होते हैं। स्थूल शरीर युक्त व्यक्ति का आभा मंडल हरे रंग का होता है, इसी प्रकार प्राण शरीर का आभामंडल गुलाब के रंग का, काम शरीर का आभा मंडल पीले रंग का, सूक्ष्म मन का आभा मंडल पीला और हरा मिला हुआ, उच्च मन का आभा मंडल चांदी के रंग के समान, बुद्धि शरीर का आभा मंडल नीले रंग का तथा आत्म शरीर का आभामंडल 'गोल्डन कलर' या सुनहरे रंग का होता है ।

(5) किसी भी व्यक्ति की मृत्यु से छः महीने पहले उसका पूरा आभा मंडल काला सा हो जाता है, जिससे पता चल जाता है कि इस व्यक्ति की मृत्यु निकट ही है ।

(6) चरित्रहीन स्त्री का आभामंडल धुंधला सा पीलापन लिये हुए होता है, इसी प्रकार चालाक और मक्कार व्यक्ति का पूरा आभा मंडल धुएं के रंग का होता है ।

जैसा कि मैंने ऊपर बताया कि यदि मनुष्य चाहे तो अपना या किसी भी व्यक्ति के आभा मंडल को प्रभावित कर उसे परिवर्तनीय बनाया जा सकता है, और इस परिवर्तन से एक गरीब व्यक्ति संपन्न हो सकता है, बुद्धिहीन व्यक्ति तीव्र बुद्धि का बन सकता है और इस आभा मंडल में परिवर्तन करने से व्यक्ति निश्चय ही महापुरूष तथा आत्म शरीर युक्त बन सकता है ।

आभा मंडल के माध्यम से व्यक्ति अपने स्थूल शरीर जितने भी चाहे बना सकता है । आभा मंडल को तीव्र करने से व्यक्ति में यह क्षमता आ जाती है कि वह हजारों मील दूर घटी घटनाओं को देख सकता है, और आवश्यकतानुसार उसमें संशोधन कर सकता है, भविष्य में आने वाली दुर्घटनाओं को दूर कर सकता है ।

नवम्बर सन् 1981 की कादम्बिनी में जगदीश प्रसाद शर्मा ने लिखा है कि चेतना हमारे तेजस् शरीर को सक्रिय बनाती है, तब वह किरणों का विकीरण करता है, और यह

विकीरण व्यक्ति के चारों ओर वलयाकार घेरा बना देता है। यही आभा मंडल है। जैसा भाव मंडल होता है वैसा ही आभा मंडल होता है । भावमंडल मलिन होगा तो आभामंडल भी मलिन, धब्बों वाला काले रंग का होगा । यह आभामंडल भावमंडल के अनुसार बदलता रहता है । हमारे स्थूल शरीर की घटनाएं पहले सूक्ष्म शरीर पर घटित होती है । शरीर में होने वाले रोग की पूर्व सूचना आभामंडल के सहारे तीन महीने पूर्व मिल सकती है । तीन महीने से पूर्व रोग आभामंडल में उतर आता है ।

जैन आचार्यों की मान्यता है कि कोई भी व्यक्ति जिस आभा मंडल के साथ मरता है अगले जीवन में वह उसी आभा मंडल के साथ जन्म लेता है । इसके अलावा पश्चिम में जो नवीन शोध हो रहे है उसमें यह निश्चय हो गया है कि केवल आभा मंडल को देख लेने की शक्ति के विकास से ही व्यक्ति पूर्ण सिद्ध बन सकता है, और हजारों लाखों लोगों को उनके आभा मंडल में परिवर्तन कर लाभ पहुंचा सकता है।

शेष पृष्ठ 49 पर

इस प्रकार की साधना संपन्न कर व्यक्ति किसी के गर्भ स्थित बालक पर भी अपनी दृष्टि डालकर उसका आभा मंडल तेजस्वी बना सकता है, और साथ ही साथ अपनी साधना के बल पर गर्भस्थ बालक को मनोवांछित चेतना दे सकता है । वह बालक उस चेतना को समग्र रूप में स्वीकार करता ही है, और इस प्रकार चेतना दे कर बालक को बुद्धिमान, मेधावी वैज्ञानिक, गणितज्ञ, या किसी भी क्षेत्र में अद्वितीय बनाया जा सकता है ।

इस साधना से अपने आप अनुभव होने लगेगा कि आभा मंडल का कौनसा रंग गणित से संबंधित है, किन-किन रंगों के मेल से वैज्ञानिक बनने की चेतना दी जा सकती है, आभा मंडल में किस प्रकार का परिवर्तन करने से व्यक्ति विद्वान् या उच्च कोटि का धनाढ्य बन सकता है ।

सूर्य ग्रहण : जब वशीकरण क्रिया सिद्ध हो सकती है

और ४-१-९३ को सूर्य ग्रहण है, भले ही वह ग्रहण भारत में दिखाई न दे, पर दिन का तो महत्व है ही, आप भी इस तंत्र को आजमा कर देख लीजिये न ।

वशीकरण का तात्पर्य है सामने वाले व्यक्ति पुरुष या स्त्री को सर्वथा अपने वश में करना और उससे मनोवांछित कार्य संपन्न कराना, यह प्रयोग तंत्र का ही एक भाग है ।

परन्तु इस बात का ध्यान रहे कि वशीकरण के द्वारा सामने वाले व्यक्ति का अहित नहीं होना चाहिये और न उसका नुकसान करने की भावना मन में होनी चाहिये ।

यों तो यह वशीकरण प्रयोग किसी भी रविवार की रात्रि को किया जा सकता है परन्तु कुछ दिन इस प्रकार के तंत्र के लिये विशेष महत्वपूर्ण कहे गये हैं । जैसे - सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण, अमावस्या की रात्रि होली की रात्रि, दीपावली की रात्रि, नवरात्रि के दिनों में या किसी भी रविवार की रात्रि में ।

संयोग से ४-१-९३ को सूर्य ग्रहण है यह अलग बात है कि यह ग्रहण भारतवर्ष में दिखाई नहीं देगा, परन्तु फिर भी विश्व के किसी न किसी भाग में सूर्य ग्रहण है ही, अतः इस दिन यदि इस प्रयोग को किया जाय तो अचूक प्रभाव उत्पन्न होता है, और सफलता का अवसर ज्यादा होता है ।

इस प्रयोग को कोई भी किसी पर भी कर सकता है । उदाहरण के लिये प्रेमिका बेवफा हो गई है, तो उस पर इस प्रयोग को संपन्न किया जा सकता है । यदि पत्नी से मतभेद है या पति किसी और स्त्री में अनुरक्त हो गया है तो भी उस पर यह प्रयोग कर सकते हैं । पुत्र आज्ञापालन नहीं कर रहा है और गलत संगति में है, या पुत्री ज्यादा स्वच्छन्द हो गई है तो इस प्रकार के प्रयोग को करने में कोई हानि नहीं होती, इसी प्रकार अपने शत्रु पर अपने अधिकारी पर, या अपने कर्मचारियों पर यह प्रयोग कर उन लोगों को अपने अनुकूल बनाया जा सकता है ।
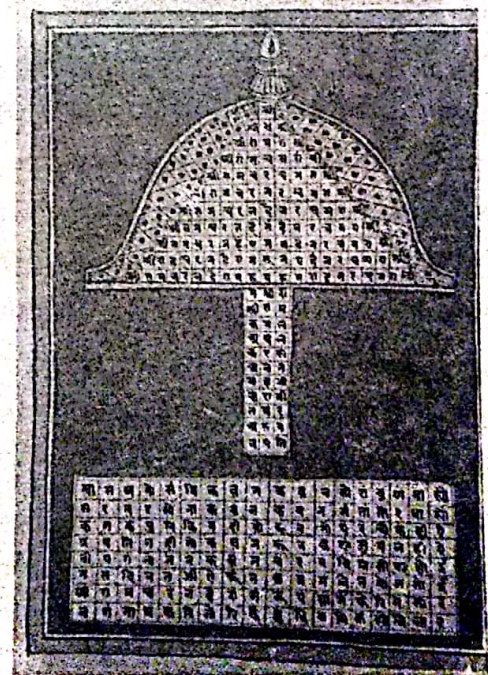
यह प्रयोग अपने आप में सरल और सामान्य है, तथाकोई भी व्यक्ति पुरुष या स्त्री इस प्रकार के प्रयोग को संपन्न कर सकता है । इस प्रयोग के लिये ताम्र पत्र पर अंकित **'वशीकरण यंत्र'** की आवश्यकता होती है । साधक चाहे तो भोज पत्र पर वशीकरण यंत्र को अंकित कर उसके माध्यम से भी वशीकरण क्रिया संपन्न कर सकता है परन्तु इस बात का ध्यान रहे कि यंत्र प्रामाणिकता के साथ अंकित किया हुआ हो, और वह सिन्दूर से लिखा हुआ हो।

यदि आपके पास ताम्र पत्र पर अंकित वशीकरण यंत्र है तो उस यंत्र का प्रयोग आप कर सकते हैं, परन्तु एक यंत्र पर एक ही बार प्रयोग किया जा सकता है ।

वशीकरण प्रयोग विधि:-

पुरुष या स्त्री जो वशीकरण प्रयोग करना चाहता है वह स्नान कर सफेद धोती पहिन लें, स्त्री हो तो सफेद साड़ी धारण कर लें, और फिर सफेद आसन पर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाए, सामने एक चावलों की ढेरी बनाकर उस पर तेल का दीपक लगा दें इसमें किसी भी प्रकार के तेल का प्रयोग हो सकता है दीपक की लौ साधक की ओर होनी चाहिये ।

फिर सामने तांबे की या स्टील की एक प्लेट रख दें और उस में ''वशीकरण यंत्र'' रख दें । आप जिसको वश में करना चाहते हैं यदि उसका फोटो आपके पास हो तो उसे भी बिलकुल अपनी आखों के सामने रख दें, पर यदि फोटो न हो तो कोई चिन्ता की बात नहीं है, उस यंत्र को सामने रख दें । यह प्रयोग या तो प्रात: पांच बजे से छ: बजे के बीच करना चाहिये अथवा रात्रि को १० बजे के बाद किया जाय, तो ज्यादा उचित रहेगा ।

वशीकरण प्रयोग प्रेमी अपनी प्रेमिका के प्रति तथा उसे अनुकूलतम बनाने का श्रेष्ठतम प्रयोग है । इसी प्रकार यदि पति किसी अन्य स्त्री में आसक्त है तो पत्नी अपने पति पर यह प्रयोग कर सकती है । इसी प्रकार किसी अधिकारी पर यह प्रयोग कर उसे अपने अनुकूल बनाया जा सकता है । यदि कार्यालय में दुकान पर या किसी प्रतिष्ठान में बार-बार हड़ताल हो रही है, या कर्मचारी भली प्रकार से कार्य संपन्न नहीं कर रहे हों तब भी यह वशीकरण प्रयोग उन पर कर, उन्हें सर्वथा अपने अनुकूल बना सकते हैं ।

पहले से ही सिन्दूर मंगवाकर रख देना चाहिये और उसे तेल या घी में मिलाकर स्याही की तरह बना लें जिससे कि सिन्दूर से लिखा जा सके, और चांदी के तार का एक टुकड़ा पहले से ही बनाकर अपने पास रख देना चाहिये ।

इसके बाद उस चांदी के तार से सिन्दूर के द्वारा यंत्र के ऊपर उस पुरुष या स्त्री का नाम लिख देना चाहिये जिसे आप वश में करना चाहते हैं । यदि एक से ज्यादा नाम हैं तो उन सारे नामों को सावधानी के साथ यंत्र पर अंकित कर सकते हैं । ये नाम आप अपनी भाषा में अथवा हिन्दी में लिख सकते हैं, पर अक्षर स्पष्ट और पठनीय होने चाहिये ।

इसके बाद कुछ समय तक बिना पलक झपकाये आप उस तांबे के यंत्र के मध्य में जहां नाम लिखा हुआ है उस पर दृष्टि स्थिर कीजिये इस बात का ध्यान रहे कि दृष्टि स्थिर करते समय पलक न झपके तो ज्यादा उचित रहेगा। इस प्रकार पांच या दस मिनिट तक करिये उस समय आपके मन में यह भावना होनी चाहिये कि यह पुरुष या स्त्री मेरे वश में हो और जैसा मैं कहूँ वैसा ही करे, किसी प्रकार का व्यवधान पैदा न करें और मेरी आज्ञा का पूर्णत: पालन करें ।

वशीकरण का तात्पर्य है जिसे हम चाहते हैं उस पुरुष या स्त्री को सर्वथा अपने वश में करना और उससे मनोवांछित कार्य संपन्न कराना । तंत्र के माध्यम से तो पत्थर से पत्थर दिल वाले व्यक्ति को भी अपने वशमें किया जा सकता है।

इसके बाद उस पुरुष या स्त्री का स्वरूप आंखें बंद कर अपनी आंखों के सामने लावें, यानि आपको उसका बिम्ब दिखाई न दे तो भी किसी प्रकार की चिन्ता करने की जरूरत नहीं है ।

शेष पृष्ठ 50 पर

आप भी अपना पिछला जीवन देख सकते हैं।

आप पिछले जीवन में कहां पैदा हुए थे, कहां बड़े हुए और किस प्रकार से मृत्यु को प्राप्त हुए जिज्ञासा तो होगी ही आपके मन में, पर आप ''पुनर्जन्म तंत्र'' से यह सब कुछ जान सकते हैं ।

जीवन वह नहीं है जो जन्म से मृत्यु तक होता है, हमने काल-खण्ड को देखा नहीं, और इस संबंध में कभी चिन्तन नहीं किया । समय तो एक अजस्त्र प्रवाह है जिसका न हमें ओर का पता है, और न छोर का, इस बीच में हम कई बार जन्म लेते हैं, और कई बार मृत्यु को प्राप्त होते हैं ।

यह हमारी न्यूनता है कि हमने जीवन का मतलब उस दिन से मान लिया है, जिस दिन से हमने जन्म लिया है और उस जीवन को उतना ही मान लिया है जिस दिन हमारी मृत्यु होती है। सामाजिक दृष्टि से तो निश्चय ही यह जीवन है, पर शास्त्रीय दृष्टि से यह मात्र जीवन का एक भाग है । इससे पहले भी हम कई बार जन्म ले चुके हैं, और मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं, और भविष्य में भी हम कई बार जन्म लेंगें, और हमारी मृत्यु होगी, यह तो एक प्रकृति का विधान है ।

प्रभु ने कुछ ऐसी व्यवस्था कर दी है कि हमें अपने पिछले जीवन का स्मरण नहीं रहता और यह ऐसा इसलिये किया गया है जिससे पिछले जीवन का मोह, हिंसा, वैर, आदि हमें स्मरण नहीं रहें, और जीवन ज्यादा अशांत न हो। आप कल्पना करें कि यदि हमें पिछला जीवन याद हो और यह भी स्मरण हो कि अमुक ग्राम या शहर में अमुक व्यक्ति ने उसकी हत्या कर दी थी तो वह क्रोध और बदले की भावना में जलता रहेगा और तब तक वह शांति से नहीं बैठ सकेगा जब तक वह अपनी मौत का बदला न ले ले।

इससे तनाव बना रहता है, इससे हिंसा की भावना पनपती है, और इससे जीवन में कई समस्याएं उठ खड़ी होती हैं, इसलिये प्रभु ने ऐसा जीवन के मोह, पिछले जीवन की पत्नी, आदि उत्तरदायित्वों से मुक्त रखा है, न हमें प्रतिहिंसा व्याप्त होती है और न हम पिछले जीवन की समस्याओं से ग्रस्त रहते हैं।

परन्तु यह हमारी स्वाभाविक इच्छा होती है कि वास्तव में हो हम पिछले जीवन में कौन थे, कहां उत्पन्न हुए थे हमारी शिक्षा और लालन-पालन कहां हुआ था, किस स्त्री के साथ हमारी शादी हुई थी और पिछले जीवन के जो पुत्र थे क्या वे अभी तक जीवित हैं, वे क्या कर रहे हैं, उनका जीवन कैसा है ? आदि जिज्ञासाएं होनी स्वाभाविक है ।

भारतीय तंत्र में ऐसी कई साधनाएं या तंत्र प्रयोग दिये हैं जिसके माध्यम से अपने पिछले जीवन को हम देख सकते हैं, अनुभव कर सकते हैं, और उन स्थानों पर जाकर बातचीत के माध्यम से ज्ञात कर सकते हैं कि वास्तव में ही यह तंत्र अपने आप में प्रामाणिक और सत्य है । वहां जाने पर आप अपने पिछले जीवन की पत्नी या पुत्र से मिल सकेंगे, साधना में जिस स्थानों को आपने देखा है उन स्थानों को वास्तविक रूप में देख सकेंगें, और अपने जीवन की घटनाओं को उन लोगों के मुंह से सुनकर अनुभव कर सकेंगें कि वास्तव में ही आपका पिछला जीवन वर्तमान जीवन से अच्छा रहा या बुरा, पिछले जीवन में कौन सी गलतियां की थी जिसका परिणाम इस जीवन में भुगतना पड़ रहा है, या पिछले जीवन के कौन से ऐसे भले कार्य थे, जिसका लाभ इस जीवन में हमें मिल रहा है । इस प्रकार के तंत्र को ''पुनर्जन्म तंत्र'' कहते हैं ।

पुनर्जन्म तंत्रः-

यह प्रयोग बहुत पेचीदा या कष्टसाध्य नहीं है पर यदि हम थोड़ा सा प्रयत्न कहें, और जो विधि बताई हुई है उस विधि के अनुसार प्रयोग करें तो अवश्य ही हमारी आंखों के सामने वे सारे तथ्य घूम जायेगें जो पिछले जीवन से संबंधित रहे हैं पिछले जीवन का गांव या शहर, घर, संबंधी पुत्र, पत्नी आदि सब कुछ आंखों के सामने स्पष्ट हो जायेगा।

इसके माध्यम से आप अपना पिछला जीवन तो देख ही सकते है, दूसरे व्यक्ति का भी पूर्व जीवन आप देख सकते हैं, समझ सकते हैं । तभी आपको ज्ञात होगा कि आपकी पत्नी पिछले जीवन में कौन थी, कहां थी ? यदि वर्तमान जीवन में परस्पर लड़ाई या मतभेद है तो जरूर इसका कारण पिछले जीवन की घटनाओं से रहा होगा, वे कौन सी घटनाएं थीं जिनकी वजह से इस जीवन में भी मतभेद है, यदि किसी अन्य स्त्री से आपके स्वाभाविक संबंध बन गये है तो जरूर उस स्त्री का पिछले जीवन में भी आपसे कोई न॰कोई संबंध रहा ही होगा । वे क्या संबंध थे, और किन कारणों से वह आपके जीवन में अनुकूलता प्रदान कर रही है, इन सारे प्रश्नों के उत्तर तभी स्पष्ट हो सकेंगे जब हम अपना और सामने वाले के पिछले जीवन का तथा पारस्परिक संबंधों का अध्ययन करेंगे ।

पर जैसा कि मैं बता चुका हूं कि साधनाएं विवेक; श्रद्धा और धैर्य पर आधारित होती हैं, हो सकता है कि आपको एक दो बार में ऐसी सिद्धि न मिले और पांचवीं या सातवीं बार सिद्धि मिल जाय, या कई बार 15-20 बार करने के बाद ही सिद्धि मिल पाती है । पर जब एक बार सिद्धि मिल जाती है तो वह पूरे जीवन के लिये उपयोगी रहती है, और उसके माध्यम से आप किसी का भी पूर्व जीवन देख सकते हैं, उसे मार्ग दर्शन दे सकते है, इसीलिये इस प्रकार की साधनाओं में उतावलापन या अविश्वास ठीक नहीं रहता । आपको विश्वास और श्रद्धा हो तभी आप साधना में प्रवेश करें और तभी साधना करें ।

शेष पृष्ठ 51पर

कोई भी युद्ध बिना शस्त्रों के नहीं लड़ा जा सकता, युद्ध में सफलता पाने के लिये तीक्ष्ण और श्रेष्ठ हथियार अथवा शस्त्र आवश्यक होते हैं । इसी प्रकार साधना में भी यंत्र साधना सामग्री आदि की आवश्यकता होती है । एक प्रकार से ये साधना के हथियार भी हैं, जिनके माध्यम से देवताओं पर विजय पाई जाती है ।

कुछ दुर्लभ तांत्रिक मंत्र

जिन्होंने साधनारत मनुष्यों एवं साधकों का जीवन ही बदल दिया।

मंत्र अपने आप में ही प्रभाव उत्पन्न करने वाले शस्त्र है-

शब्द पूर्ण ब्रह्म है, और प्रत्येक शब्द का अपने आप में प्रभाव होता है, ऐसा कोई शब्द नहीं है जिसका हम उच्चारण करें, और उसका प्रभाव न हो। यह अलग बात है कि हम सही प्रकार से उच्चारण न कर सकें या हमें उन शब्दों पर विश्वास न हो ।

कुछ शब्दों या अक्षरों के समूह को मंत्र कहते हैं । यदि हम इन शब्दों का प्रयोग सही रूप में करते है तो हम जिस लक्ष्य के लिये या जिस प्रयोजन के लिये उस शब्द या मंत्र का उपयोग करते हैं, उसका फल भी हमें प्राप्त हो जाता है ।
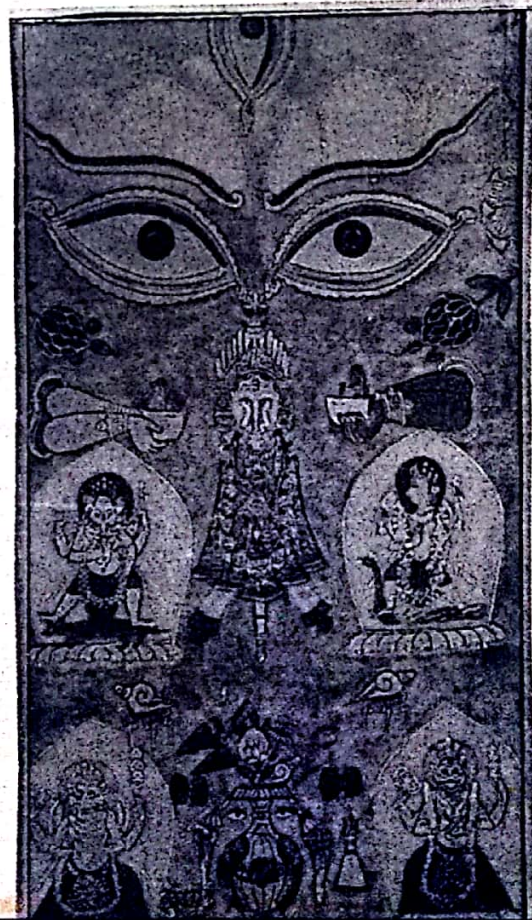
मैं एक सर्वथा लौकिक उदाहरण देकर इस बात को स्पष्ट कर रहा हूं आपके सामने आपका शत्रु या कोई व्यक्ति खड़ा है और आप उसे उत्तेजित या क्रोधित करना चाहते हैं और यदि आपका उसे क्रोधित करने का ही लक्ष्य है तो आप गुस्सा दिखाते हुए उसे माद.... पांच अक्षरों की इस गाली को बोलेंगे तो इन पांच अक्षरों अथवा इस शब्द का प्रभाव एक सेकण्ड में ही उस पर होगा, और वह क्रोध से आग बबूला हो जायेगा, हाथ में पत्थर उठा लेगा, और आप पर आक्रमण करने के लिये तैयार हो जायेगा।

आप बताइये कि आपने क्या किया ? आप उससे पांच-सात फीट की दूरी पर थे. आपने उसे स्पर्श भी नहीं किया, केवल पांच अक्षरों के एक मंत्र का उच्चारण किया और उच्चारण करते ही जो आपका लक्ष्य था वह प्राप्त हो गया । क्या इससे यह स्पष्ट नहीं होता कि शब्द का अपने आप में प्रभाव होता ही है, यदि हम सही प्रकार से उसका उच्चारण करें ।

ठीक इसी प्रकार से अन्य शब्दों या मंत्रों का प्रभाव भी होता है । अलग-अलग कार्यो के लिये अलग-अलग मंत्र निर्धारित है, और यदि हम भली प्रकार से उन शब्दों का उच्चारण करते हैं, तो उससे हमें मनोवांछित सफलता प्राप्त होती ही है ।

नीचे मैं उन मंत्रों को दे रहा हूं, जो अपने आप में अचूक है, जिनका प्रभाव तुरन्त होता है, और यदि धैर्यपूर्वक विश्वास के साथ इन शब्दों या मंत्रों का उच्चारण किया जाता है तो हमें अपने जीवन में अनुकूल लक्ष्य की प्राप्ति होती ही है ।

और फिर ऐसे सैकड़ों उदाहरण है कि इन मंत्रों के प्रभाव से उनका पूरा जीवन ही बदल गया । जीवन में वे जो परिवर्तन चाहते थे वह उन्हें प्राप्त हो गया। यदि इस विषय पर लिखा जाय तो एक पूरा ग्रन्थ तैयार हो सकता है, परन्तु मैं आगे की पंक्तियों में उन अनुभवों को विधिवत दे रहा हूं जो मैंने देखें हैं, या अनुभव किया है ।

जो घोर कंगाली से समृद्ध बना:-

कलकत्ता के राम प्रसाद चौरसिया आज करोड़पति है, और उनकी जूट की 3-4 मीलें है, पर जब वह मेरे पास आया था तो उस समय उसकी आयु मात्र 18-19 साल की थी, न तो मां बाप का पता था और न खाने के लिये रोटी का ।

मेरे घर शिष्य के रूप में कुछ समय रहा, पर उसमें मैंने अनुशासन, आज्ञापालन और सेवा की भावना देखी। मैंने अनुभव किया कि इसके मन में श्रद्धा है, और आत्मविश्वास से यह लबालब भरा हुआ है ।

लगभग दो वर्ष बाद मैंने उसे ''श्रीयंत्र साधना'' दी । मैंने उसे बताया कि पंचधातु या ताम्रपत्र पर अंकित यह श्रीयंत्र मैं तुम्हें दे रहा हूं, तुम ऊपर के कमरे में इसे लाल कपड़े पर स्थापित कर दो और सामने दीपक लगाकर धोती पहन कर निम्न मंत्र के सवा लाख जप करो, निश्चय ही तुम्हारा भाग्य परिवर्तन होगा और हमेशा-हमेशा के लिये इस दरिद्रता से मुक्ति मिल जायेगी। मैंने उसे जो श्रीयंत्र से संबंधित मंत्र दिया था वह निम्न प्रकार से था:-

मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥

गिड़गिड़ाने से प्रार्थना करने से, आरती करने से या आंखों में आंसू भरकर बोलने से देवी या देवता पसीजे या न पसीजे, साधक का कार्य करें या न करें परन्तु तंत्र में ऐसी कोई स्थिति नहीं होती, उसमें तो देवी या देवता पर फिर चाहे वह लक्ष्मी, दुर्गा, काली, शिव, कामदेव या कोई भी हो, साधक हावी रहता है, और तांत्रोक्त मंत्र बल पर जो भी चाहें, जिस प्रकार से भी चाहें अपना कार्य संपन्न करा ही देता है, इसी को तंत्र कहते हैं ।

मंत्र और तंत्र का परस्पर घनिष्ठ संबंध है। यदि आप कोई भी साधना मांत्रिक तरीके से करते हैं इसकी अपेक्षा यदि उसी साधना को ''तंत्र'' के माध्यम से करते हैं तो वह ज्यादा प्रभाव पूर्ण होती है, और जिस कार्य के लिये वह प्रयोग करते हैं उसका तुरन्त प्रभाव होता है ।

उसने मेरे कहने के अनुसार ही सवा लाख का यह पुरश्चरण संपन्न किया तो मैंने उसे श्रीयंत्र को देकर कहा कि अब तुम्हें कलकत्ते चले जाना है, और वहां निश्चय ही कुछ ऐसे अवसर प्राप्त होंगे, जिससे कि तुम्हारे जीवन में अनुकूलता और समृद्धता प्राप्त हो सकेगी ।

जब वह घर से रवाना हुआ तब कलकत्ता में न तो उसका कोई परिचित था और न ठौर ठिकाना ही, पर उसे मेरे ऊपर भरोसा था । मैंने उसे कुछ रुपये दिये और गाड़ी में बिठा दिया ।

आगे की कहानी तो लम्बी है, पर वहां उसे कुछ ऐसे अवसर मिले कि वह निरन्तर आर्थिक उन्नति की ओर अग्रसर होता ही गया, और वह ''रामू'' आज राम प्रसाद जी चौरसिया है, और करोड़पति है, आज भी उनके पूजा स्थान में वह श्रीयंत्र सुरक्षित है, और वे उपरोक्त मंत्र की एक माला मंत्र जप करने के बाद ही घर से निकलते हैं।

जब मृत्युदण्ड से छुटकारा मिला

हरिलाल के बारे में मुझे अच्छी तरह से ज्ञान है, वह लखीमपुर खीरी का रहने वाला है, और शत्रुओं ने कुचक्र रचकर उसे मर्डर केस में फंसा दिया था, नीचे की अदालत में उस पर मुकदमा चला और फांसी की सजा हो गई

ऐसी स्थिति में उसका भाई मुझे मिला था और उसने जब इस सारी घटना को मुझे बताया तो मैंने उसे ''बगलामुखी मंत्र'' जप करने के लिये कहा, क्योंकि यह मंत्र अपने आप में मुकदमें में सफलता, शत्रुओं पर विजय एवं पूर्ण निर्भय तथा कारावास से मुक्ति का श्रेष्ठतम मंत्र है । यह मंत्र प्रचण्ड तूफानों से भी टक्कर लेने में समर्थ है।

उसके भाई ने कहीं से **''बगलामुखी यंत्र''** प्राप्त किया, मुझसे उसकी प्राणश्चेतना कराकर और उसका पूजन कर उसे अपने घर में स्थापित कर बगलामुखी देवी की पूजा अर्चना कर निम्न मंत्र का जप प्रारम्भ किया

बगलामुखी मंत्र

ॐ ह्लीं बगलामुखीं सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं फट् स्वाहा ॥

मंत्र जप प्रारम्भ करने के बाद से ही वातावरण अनुकूल बनने लगा, और जब उसके भाई ने पांच लाख मंत्र जप का पुरश्चरण पूरा किया तब सारी स्थितियां अनुकूल बन गई थी, न्यायाधीश यह समझ गया था कि इसे झूठे मामले में फंसाया गया है, फलस्वरूप उसे छोड़ दिया गया, जबकि उसके पास न तो सिफारिस थी और न अच्छा वकील करने के लिये धनराशि ही, परन्तु केवल इस मंत्र के प्रभाव से ही वह मृत्युदण्ड से मुक्त हो सका और आज वह श्रेष्ठ सामाजिक जीवन व्यतीत कर रहा है।

शीघ्र विवाह मंत्र

मेरे सामने किशनलाल का उदाहरण स्पष्ट है उसकी लड़की का विवाह हो ही नहीं रहा था, वह 24 साल की हो गई थी। उसकी जन्म कुण्डली में भी कुछ ऐसा ही योग था कि जीवन में उसका विवाह होगा ही नहीं।

तब मैंने उस बालिका को "कामदेव रति मंत्र" दिया और बताया कि यदि विश्वास पूर्वक इस मंत्र का जप करोगी तो निश्चय ही कुछ ही महीनों में तुम्हारा विवाह अच्छे कुल में हो जायेगा ।

मैंने उसे "कामदेव रति यंत्र" भी दिया और बताया कि इसे अपने घर में स्थापित कर दें, और नित्य प्रातः उठकर स्नान कर सूर्य को सात बार जल का अर्घ्य दें, और फिर आसन पर बैठकर हकीक माला से निम्न मंत्र का जप सवा लाख नियम पूर्वक करें ।

कामदेव रति मंत्र

॥ ॐ कामदेवाय विद्महे रति प्रियायै धीमहि तन्नो अनंग प्रचोदयात् ॥

उसने श्रद्धा और विश्वास पूर्वक ऐसा ही किया, और सवालाख मंत्र जप संपन्न होते-होते ही अच्छे घराने से उसका संबंध हो गया, और एक महीने के बाद उसका विवाह भी हो गया ।

आज वह दो बच्चों की मां और कुशल गृहणी है, तथा सुख समृद्धता मय जीवन व्यतीत कर रही है ।

वशीकरण प्रयोग मंत्र

यह मंत्र भी अपने आप में अचूक है एक दिन उर्मिला ने रोते हुए मुझे बताया कि उसके पति उससे नफरत करने लगे हैं, और किसी अन्य स्त्री से संबंधित हो गये हैं, फलस्वरूप वे मुझे तलाक देना चाहते हैं, और इस प्रकार हमारा गृहस्थ जीवन समाप्त होने की कगार पर है ।

तब मैंने उसे "वशीकरण यंत्र" देकर कहा कि इस यंत्र पर रोज जल चढ़ाकर उस जल को पूरे घर में छिड़क दें और साथ ही साथ इस यंत्र को स्थापित कर

तंत्र व्यवस्थित ढंग से साधना करने की क्रिया को कहते हैं, तंत्र का तात्पर्य है देवी या देवता के प्रति गिड़गिड़ाना नहीं, हाथ जोड़ना नहीं, प्रार्थना करनी नहीं, अपितु जोश खरोश के साथ उस देवता की आंख में आंख डालकर अपने कार्य को सफल बनाने की पद्धति है ।

निम्न मंत्र का निरन्तर तब तक जप करती रहें, जब तक तुम्हारे पति पूर्णतः अनुकूल न हो जाय ।

- वशीकरण मंत्र -

ॐ ह्री अनंगाय अमुकं वश्यमानाय ह्रीं ॐ फट् ॥

इसमें जहां " अमुक" शब्द आया है वहां पर उस व्यक्ति का नाम बोलना चाहिये, जिसे अपने अनुकूल बनाना है, उसने ऐसा ही किया और जब महीने भर बाद वह आई तो उसके चेहरे पर प्रसन्नता थी, उसने बताया कि वास्तव में ही मंत्र में अत्यधिक शक्ति होती है । मैंने आपके बताये हुए तरीके से ही यंत्र स्थापित कर मंत्र जप प्रारम्भ किया । दस-बारह रोज तो कुछ नहीं हुआ, पर एक दिन मेरे पति की उस स्त्री से भयानक लड़ाई हुई और पति ने हमेशा-हमेशा के लिये उससे किनारा कर दिया, आज मुझे वापिस अपना पति और बच्चों को उसके पिता मिल गये हैं, उन्होंने अपनी गलती भी स्वीकार कर ली है ।

इस मंत्र से पति अपनी पत्नी पर या प्रेमिका अपने प्रेमी पर या कोई व्यक्ति अपने शत्रु पर ऐसा प्रयोग कर उसे अपने अनुकूल बना सकता है, वास्तव में ही यह मंत्र अपने आप में अचूक और सिद्धिप्रद है । ●

ब्रह्माण्ड में गूंजते हुए रहस्यमय मंत्र

जिन्हें गोपनीय तांत्रिक प्रतीकों से सुने जा सकते हैं-
योगीराज चिन्तानंद के अनुभव

तंत्र अपने आप में सम्पूर्ण विद्या है । यह विज्ञान भी है और अपने आप में सम्पूर्ण ज्ञान भी । तंत्र एक ऐसा तथ्य है जो सम्पूर्ण मानव जीवन को पूरी तरह से परिवर्तित कर सकता है । सृष्टि के आदिकाल से तंत्र का भारत वर्ष में प्रचलन रहा है, और हमारे पूर्वजों ने ऋषियों और योगियों ने इस संस्कृति के माध्यम से वह सब कुछ प्राप्त किया, जिनकी उनको आवश्यकता थी जिसके माध्यम से जीवन सुखी, सफल और संपन्न बन सकता है ।

पर आलोचना से, तर्क से, और बुद्धि के अजीर्ण से तंत्र को नहीं समझा जा सकता । इसके लिये आवश्यकता है विश्वास की, श्रद्धा की, पूरी तरह से तंत्र को अपने आप में आत्मसात् कर देने की । यह सही है कि कुछ भ्रष्ट और स्वार्थी तत्वों ने अपने स्वार्थ के लिये तंत्र को बदनाम कर दिया, उसकी विश्वसनीयता समाप्त कर दी, और अपने देह-सुख के लिये व्यर्थ ही पंच मकार-मदिरा, मांस, मछली मुद्रा और मैथुन-को प्रचलित कर दिया, जबकि तंत्र में इसकी आवश्यकता ही नही है । तंत्र तो सीधा-साधा विज्ञान है, सरल और प्रामाणिक ज्ञान है, जिसे किसी भी धर्म, किसी भी वर्ग और किसी भी प्रकार का व्यक्ति संपन्न कर सकता है ।

और कोई दुष्प्रभाव नहीं:-

और फिर तंत्र का कोई दुष्प्रभाव भी नहीं होता, यदि आप तंत्र साधना कर रहे हैं, और किसी कारणवश वह अधूरी रह गई है, या मंत्र जप अशुद्ध हो गया तो इससे

किसी भी प्रकार की हानि या दुष्प्रभाव नहीं होता । ज्यादा से ज्यादा इससे यह हो सकता है कि आप जिस कार्य के लिये तंत्र साधना कर रहे हैं, वह सफल न हो, पर इससे किंचित् भी हानि नहीं होती । तंत्र के लिये न तो श्मशान की जरूरत है, और न तंत्र के लिये किसी विचित्र वेश धारण करने की जरूरत है। आप नौकरी या व्यापार करते हुए, सहज सामान्य जीवन जीते हुए भी तंत्र साधना संपन्न कर सकते हैं, न इसके लिये सिन्दूर का टीका लगाने की जरूरत है, न नग्न होकर मंत्र जप करने की, और न लाल-लाल आंखें बनाकर बैठने की, यह तो एक सामान्य सहज प्रयोग है जिसे आप बिना किसी हिचकिचाहट से संपन्न कर सकते हैं, और इन प्रयोगों के माध्यम से अपनी जीवन की बाधाओं को दूर कर सकते हैं, समस्याओं को सुलझा सकते हैं । कठिन स्थितियों को अपने अनुकूल बना सकते

कई बार जो कार्य बहुत अधिक परिश्रम से या धन खर्च करने पर भी नहीं हो पाते, वे कार्य छोटे से टोटके से ही संपन्न हो जाते हैं, और हम आश्चर्य चकित रह जाते हैं ।

1. **मनोरथ पूर्ति के लिये:-** छोटे से कागज पर अपने मन की इच्छा लिखकर उसकी गोली सी बनाकर आटे में लपेट लें, ऐसी सौ गोली बनाये और किसी भी रविवार के दिन वे गोलियां मछलियों को खिला दें तो मनोरथ पूर्ति हो जाती है ।

2. **मृत्युनाशक प्रयोग:-** मंगलवार के दिन सवा किलो चने लेकर यदि स्वयं या उसका कोई संबंधी बंदरों को वे चने खिला दें और इस प्रकार तीन या चार बार करें तो निश्चय ही मृत्यु बाधा समाप्त हो जाती है, और रोगी स्वस्थ होने लगता है ।

3. **राज कार्य बढ़ाने के लिये:-** शनिवार को सवा किलो गेहूं की एक रोटी बनावे और उस पर घी, शहद और शक्कर रखकर किसी हनुमान जी के मंदिर में उस रोटी को चढ़ा दें ऐसा दो या तीन बार करें तो राज्य कार्य में निश्चित ही सिद्धि प्राप्त होती है ।

4. **बिक्री बढ़ाने के लिये:-** रविवार के दिन मुट्ठी भर कालीमिर्च और उड़द के दाने लेकर अपनी दुकान में बिखेर दें और फिर स्वयं झाडू से वे दाने बुहार कर किसी खड्डे में गाड़ दें तो दुकान पर किया हुआ तांत्रिक प्रभाव समाप्त हो जाता है, और बिक्री बढ़ जाती है ।

5. **समस्त प्रकार की बाधा और अड़चन दूर करने के लिये:-** प्रामाणिक काले रंग की हकीक माला अपने कुर्ते के नीचे बराबर धारण करने से जीवन की बाधाएं दूर होने लगती है, और उसके प्रत्येक काम सरल और स्वाभाविक तरीके से होने लगते हैं ।

पत्नी की आयु पति को दी जा सकती है

यदि ज्योतिष की दृष्टि से पति की आयु कम हो या पत्नी की आयु कम हो तो पति या पत्नी एक दूसरे को अपनी आयु का कुछ भाग देकर उसकी आयु में कुछ वर्ष जोड़ सकते हैं । यद्यपि यह एक कठिन क्रिया है परन्तु तंत्र के माध्यम से यह संभव है, इसके लिये बिना किसी दबाब के आयु देने वाले की इच्छा आवश्यक है ।

किसी भी रविवार के दिन आयु देने वाला अपने गुरू के पास जाएं और उनसे प्रार्थना करें कि मैं ऐसी क्रिया करना चाहता हूं, या इससे संबंधित जानकार तांत्रिक के पास बैठकर यह क्रिया संपन्न करवा सकता है, इस कार्य के लिये दोनों की उपस्थिति अनिवार्य होती है ।

इसमें पहले 51 तेल के दीपक लगा दें और दोनों के चारों ओर वे दीपक रख दें, फिर संक्षिप्त **"आयु परिवर्तन प्रयोग"** संपन्न करें । जब ऐसा प्रयोग संपन्न हो जाय तो व्यक्ति किसी पलंग पर या जमीन पर लेट जाए और आयु देने वाला हाथ में जल का लोटा लेकर उस व्यक्ति की चार बार परिक्रमा करे और कहे कि मैं अपनी आयु में से इतने वर्ष अमुक व्यक्ति को दे रही हूं या दे रहा हूं, और फिर वह जल उसके पलंग के चारों ओर फैला दें या लकीर सी बना दें, ऐसा करने पर निश्चय ही उतने वर्ष की आयु दूसरे व्यक्ति को मिल जाती है, और वह ठीक होने लगता है, अकाल मृत्यु प्राप्त व्यक्ति जी उठता है, और स्वस्थ होने लगता है ।

जो आयु देता है उसका कुछ भी अहित नहीं होता, न तो वह बीमार पड़ता है, और न कोई तकलीफ ही होती है।

शेष पृष्ठ 52 पर

सिद्धाश्रम "गोल्डन कार्ड" योजना

"मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान" की एक अनूठी गौरवशाली योजना जिसके द्वार खुले हैं, आप सबके लिए इस योजना का विवरण पूरा पढ़ें, विचार करें, प्रस्तुत है आलेख–

गुरु शब्द की व्याख्या गुरु महानता का वर्णन और गुरु कृपा का अमृत फल पाना हर एक के वश की बात नहीं, शिष्य प्रारम्भिक अवस्था में बड़ा ही चतुर जीव होता है, वह गुरु का चयन बहुत ही सोच समझ कर करता है, गुरुदेव मन ही मन शिष्य की इन भावनाओं को देखते हुए मुस्कराते हैं, वे कुछ कहते नहीं, गुरुदेव तो अपने हृदय कपाट खुले रखते हैं, शिष्य को अपने भीतर समा लेने के लिए, उसे नवरंग से भी अनूठे गुरु रंग से सराबोर करने के लिए।

प्राचीन काल में शिष्य अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में अपने गुरु के पास रहता था, गुरु उसे हर प्रकार का ज्ञान देकर संसार के माया चक्र में विजय प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार के ज्ञानास्त्र, चेतनास्त्र देकर भेज देते थे, उसके बाद जब भी शिष्य को कोई कठिनाई आ पड़ती, जीवन में किसी चक्रव्यूह में उलझ जाता तो वह मार्ग प्राप्त करने के लिए वह सीधा अपने गुरु के पास ही दौड़ता था, क्योंकि उसे मालूम था कि सही ज्ञान सही दिशा और संकटहरण का मार्ग केवल अपने सद्गुरु देव के पास ही मिल सकता है।

आज भी वही सम्बन्ध है

कहते हैं कि समय बदलने से, युग बदलने से सम्बन्ध बदल जाते हैं, लेकिन जहां तक सच्चे गुरु और शिष्य का सम्बन्ध है, उस परम्परा में आज भी वही भक्ति वही श्रद्धा और गुरुदेव द्वारा वही प्रेम, स्नेह और कृपा की परम्परा विद्यमान है। इस सम्बन्ध में कहीं कोई लुकाव-छुकाव नहीं है, शिष्य जो बात अपने मां-बाप, भाई पत्नी अथवा मित्र को नहीं कह सकता, वह सब बात अपने गुरुदेव के समक्ष आकर स्पष्ट रूप से कह देता है, क्योंकि उसे मालूम है कि यहां गुरुदेव के समक्ष बात खुल कर ही कहनी पड़ेगी, केवल मीठी-मीठी बातें करने से काम नहीं चलेगा, जो सर्वज्ञाता है, उनसे क्या छिपाया जाय?

पूज्य गुरुदेव ने जब सन्यास से पुनः सांसारिक जीवन में प्रवेश किया तो उसके पीछे उनकी एक विराट् विचारधारा थी, स्व-कल्याण को छोड़ कर जन-कल्याण, सर्वजनहित भावना थी, इसके लिए पूज्य प्रभु ने ज्ञात-अज्ञात साधकों के लिए, शिष्यों के लिए एक नव चेतना का मार्ग जो सीधी सरल भाषा में उनके लिए साधना साहित्य का क्रियात्मक स्वरूप था,

जो संस्कृत नहीं जानते थे, जो प्राचीन भारतीय संस्कृति को भूल गये थे, जिनके पास जीवन में केवल मानसिक और शारीरिक कष्ट की वृद्धि हो गई थी उनके लिए नवीन मार्ग का यह पीड़ाहारी पाञ्चजन्य घोष था, जो 'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान' संस्था 'सिद्धाश्रम साधक परिवार' के नाम से जाना जाता है।

इस मार्ग में, इस यात्रा में आह्वान था उन शिष्यों को जो पूज्य गुरुदेव से जुड़ कर अपने जीवन को आलोकित करना चाहते थे, उनका अनुसरण कर अपने भीतर और बाहर के दोषों का नाश करना चाहते थे, जीवन को एक नई दृष्टि से देखना चाहते थे, लोग, साधक आते गये संस्था से जुड़ते गये और धीरे-धीरे एक विशाल परिवार की स्थापना हुई, पूज्य गुरुदेव कहते हैं कि जीवन में देना और लेना यह एक व्यापारिक कार्य है। मैं शिष्यों को मार्ग दिखाऊंगा, उन्हें स्वयं साधना की अग्नि में तपना पड़ेगा, शिष्यों को मैं मन्त्र, तन्त्र और यन्त्र का व्यावहारिक ज्ञान दूंगा तभी वे इसके मूल महत्व को समझेंगे और इस महान धरोहर को अपने पास रख कर इसे अपने दिन प्रतिदिन के जीवन में उपयोग में लायेंगे।

इसी श्रृंखला में शिविरों का आयोजन हुआ, इन शिविरों में जो कि गुरु शक्ति पीठ जोधपुर में हुए और कई बार शिष्यों के आग्रह एवं अनुरोध पर भारतवर्ष में भिन्न-भिन्न स्थानों पर आयोजित हुए, आज स्थिति यह है कि पूरे वर्ष भर में चार शिविर जोधपुर में और छः शिविर जोधपुर से बाहर आयोजित हो ही जाते हैं। यह सब शिष्यों के लिए, साधकों के लिए ही तो था, साधना किस प्रकार की जाती है और साधना से प्रत्यक्षत: किस प्रकार अनुभव किया जाता है और साधना के तात्कालिक और दीर्घकालिक लाभ क्या है यह सब एक-दो नहीं हजारों शिष्यों ने अनुभव किया, कष्ट पीड़ा भोगते हुए शिष्यों और साधकों के जीवन पर इन शिविरों में गुरुदेव के अमृत वचनों द्वारा एक अमृत वर्षा हुई जहां शिष्य है, शिविर है और साक्षात् गुरूदेव विद्यमान हैं वहां सिद्धि तो प्राप्त हो कर ही रहेगी।

सिद्धाश्रम गोल्डन कार्ड योजना

पिछले कुछ समय से कई शिष्यों के पत्र आये कि गुरुदेव हम प्रत्येक शिविर में भाग लेना चाहते हैं, हर शिविर में सभी, साधनाओं का पूरा-पूरा लाभ उठाना चाहते हैं, लेकिन कुल मिला कर व्यय अधिक बढ़ जाता है, इसके लिए वर्तमान में जो आर्थिक स्थिति है, वह हमें बार-बार आपके पास आने से रोकती है, क्या इस सम्बन्ध में कोई उपाय हो सकता है तो हमें इस संकट से पार उतार कर अनुग्रहीत करें। निश्चय ही शिष्यों का यह कहना सही था और गुरुदेव ने एक विशेष योजना हेतु हमें स्वीकृति दी है, जिसका प्रारूप निम्न प्रकार से है-

गोल्डन कार्ड योजना:

1. *निखिल ध्यान धारक शाश्वत योजना के अन्तर्गत साधक भारत वर्ष में होने वाले किसी भी शिविर में नि:शुल्क भाग ले सकता है।*

2. *यदि कोई गोल्डन कार्ड सदस्य किसी शिविर में भाग न ले सके तो वह अपने स्थान पर किसी अन्य को अथवा परिवार के किसी भी एक सदस्य को भाग लेने भेज सकता है।*

3. *प्रत्येक शिविर में होने वाली साधनाओं की सभी सामग्री उनके लिए नि:शुल्क रहेगी।*

4. *इस योजना के अन्तर्गत भाग लेने वाले सदस्य स्वर्णांकित सदस्य (गोल्डन कार्ड होल्डर मेम्बर) कहे जाएगें।*

5. *प्रत्येक अंक में गोल्डन कार्ड होल्डरों के लिए एक साधना अलग से छपी होगी, जिसकी सामग्री गोल्डन कार्ड वालों को मँगाने पर नि:शुल्क भेजी जाएगी।*

6. *प्रत्येक साधना शिविर में आगे की पंक्तियों में उनके लिए स्थान सुरक्षित रखने की यथासम्भव व्यवस्था होगी।*

7. गोल्डन कार्ड सदस्य को केवल एक बार धरोहर के रूप में रुपये 51000/- जमा कराने होंगे और यह पैसा बैंक ड्राफ्ट द्वारा अथवा नगद मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान कार्यालय में जमा कराना होगा जिसकी रसीद वे प्राप्त कर सेकेंगे। यदि एक साथ संभव न हो तो इसे तीन बराबर किश्तों में दे सकते हैं पर प्रत्येक किश्त एक महीने से ज्यादा अन्तराल में न हो।

8. यह धन राशि धरोहर धन राशि है। और जब तक सदस्य चाहें इस योजना के अन्तर्गत भाग ले सकते हैं, जब वे अपना यह गोल्डन कार्ड सरण्डर करना चाहें, वे कर सकते हैं, और इसकी लिखित सूचना तथा नोटिस रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा कार्यालय को अवश्य भेज दें।

9. इस प्रकार का नोटिस प्राप्त होने के दस वर्ष बाद उन्हें मूल धनराशि पुनः एकाउण्ट पेई चैक द्वारा लौटा दी जायेगी। इस धनराशि पर किसी प्रकार का कोई ब्याज नहीं दिया जायेगा।

10. गोल्डन कार्ड योजना सदस्य बनने पर सदस्य को सामान्य गुरुदीक्षा निःशुल्क दी जायेगी।

11. गोल्डन कार्ड योजना सदस्य बनने पर 'शिविर किट' निःशुल्क दिया जायेगा।

शिविर किटः

(क) एक गुरु चित्र (ख) एक गुरुमंत्र पीतांम्बर (ग) एक धोती (घ) एक माला (च) दो पीले आसन (छ) एक पंचपात्र

12. गोल्डन कार्ड सदस्य को प्रतिवर्ष एक उपहार (जो नवीन पत्रिका सदस्यता पर देय है), दिया जायगा।

13. नया गोल्डन कार्ड सदस्य बनाने वाले साधक शिष्य को 5 वर्ष की पत्रिका सदस्यता निःशुल्क दी जायगी या एक पारद लक्ष्मी गणेश पूज्य श्री गुरुदेव जी के कर कमलों द्वारा प्रदान की जायेंगी।

* * * * * * * * *

पत्रिका की आजीवन सदस्यता

(1) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका की आजीवन सदस्यता प्राप्त करने वाले साधक को उपहार स्वरूप पारद शिव लिंग या नवरत्न मुद्रिका प्रदान की जाएगी।

(2) पत्रिका की आजीवन सदस्यता दिलाने वाले सदस्य/शिष्य को एक वर्ष की पत्रिका सदस्यता या पारद श्रीयंत्र निःशुल्क प्रदान किया जायगा।

पत्रिका की पंचवर्षीय सदस्यता

जो जनवरी 93 से साथ 750.00 रु भेजकर पत्रिका के "पंच वर्षीय सदस्य" बनते हैं, उन्हें वर्ष भर रियायती दर पर साधना सामग्री प्रदान की जायगी।

अद्वितीय दुर्लभ संग्रहणीय ऑडियो कैसेट

स्वामी सच्चिदानंद
सिद्धाश्रम
गुरु गति
गुरु हमारो गोत्र है
गुरु गति पार लगावे
गुरु मोरो जीवन प्रेम अधार
गुरु पादुका पूजन
शिष्योपनिषद्
प्रेम धार तलवार की
प्रेम न हाट बिकाय
प्रेम पंथ अति कठिन है
अकथ कहानी प्रीत की
पिव बिन बुझे न प्यास
सूली ऊपर सेज पिया की
घूंघट के पट खोल री
बिरहिन दियरा जोवे बाट
काहि विधि करूं उपासना

पारद विज्ञान
पारदेश्वर शिवलिंग पूजन
पारदेश्वरी लक्ष्मी प्रयोग
लक्ष्मी मेरी चेरी
शिव सूत्र
शिव सूत्र
कुण्डलिनी योग
कुण्डलिनी नाद ब्रह्म
ध्यान योग
साधना सूत्र
ध्यान, धारणा और समाधि
समाधि के सात द्वार
मृत्योर्मा अमृतं गमय
समाधि रहस्य
अणिमा सिद्धि
लघिमा सिद्धि
विशेष लामा मंत्र

इस मास की पांच नवीनतम ऑडियो कैसेट

- ठुमक ठुमक मत चलोरी गुजरिया
- फिर प्राणों की पाजेब बजी
- पपीहा पिऊ पिऊ मत बोल
- कायाकल्प यों होता है
- धनप्राप्ति के आश्चर्य जनक प्रयोग

मैं खो गया तुम भी खो जाओ
मैं गर्भस्थ बालक को चेतना देता हूं
मैं अपना पूर्व जीवन देख रहा हूं
हिप्नोटिज्म रहस्य
परा विज्ञान

ऊँ मणि पद्मे हुं
महालक्ष्मी साधना
विशेष दीपावली साधना
अक्षय पात्र साधना
षोडश अप्सरा साधना

धनराशि अग्रिम भेजने की जरूरत नहीं है, आप हमें सूचना दे दें, हम वी.पी.पी. से आपको संबंधित कैसेट भेज देंगे

प्रत्येक कैसेट की न्योछावर 30/- रूपए

"प्राप्तिस्थान"

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग हाईकोर्ट कालोनी जोधपुर-342002 (राज.)

टेलीफोन-0291-32209

यहां से भी- गुरुधाम-306 कोहाट एन्क्लेव (पीतमपुरा) नई दिल्ली टेली-7182248

सिद्धाश्रम–पृथ्वी पर स्वर्ग की सुगन्ध

सिद्धों तपस्वियों योगियों की तपस्या भूमि जहां आज भी हजार-हजार वर्ष के सिद्ध तपस्वी विचरण करते हैं– पहली बार प्रामाणिक विवरण पत्रिका के माध्यम से ।

इस पृथ्वी पर ऐसे कई भू-भाग हैं जो अभी तक पहचाने ही नहीं गए हैं, या वहां पर अभी सामान्य मानव के चरण पड़े ही नहीं, और हकीकत में देखा जाय तो भारतवर्ष को हमने भली प्रकार से समझा ही नहीं है, और खासकर हिमालय को अभी पूरी तरह से समझना बाकी है।

हमने केवल विज्ञान को टटोलने का ही प्रयास किया है, ज्ञान को न तो भली प्रकार से पहचाना है, और न उसे समझने का प्रयत्न किया आज भी इस भू-भाग पर दो सौ तीन सौ और इससे भी ज्यादा आयु के योगी विचरण करते हैं, तो यह पढ़कर आश्चर्य तो हो सकता है परन्तु यदि आप सही अर्थो में ज्ञान के अधिकारी हैं, और यदि आपने हिमालय को टटोलने का अथवा देखने का प्रयास किया है तो मेरा यह कथ्य आश्चर्य पैदा करने वाला नहीं होगा । ऐसे सैकड़ों लोग हैं, जिन्होंने सात सौ आठ सौ वर्षो की आयु प्राप्त योगियों को भी देखा है, उनके पास बैठे हैं, उनसे बातचीत की है, और उन्हें कायाकल्प करते हुए अनुभव किया है ।

सिद्धाश्रम एक अद्वितीय भू-भागः-

भारत के सैकड़ों ग्रन्थों में ज्ञान गंज या सिद्धाश्रम का वर्णन आया है, और उन प्रामाणिक ग्रन्थों में यह भी स्पष्ट रूप से लिखा हुआ है कि यह भू-भाग अपने आप में अद्वितीय है, जहां मृत्यु की छाया नहीं पड़ती, अर्थात सिद्धाश्रम में तपस्या करने वाले योगियों की न तो मृत्यु होती है, और न उन्हें वृद्धावस्था व्याप्त होती है । इस भू-भाग पर सैकड़ों हजारों वर्षो की आयु का योगी निरन्तर अपनी साधना में रत है, और ज्ञान के उन रहस्यों को खोजने में तत्पर हैं, जो अभी तक अज्ञात है, जो सिद्धाश्रम से लौटकर संन्यासी या योगी आये हैं उन्होंने यह दावा किया है कि उन्होंने सिद्धाश्रम में विचरण करते हुए भगवान् श्रीकृष्ण, कृपाचार्य, अश्वत्थामा आदि पुराण पुरुषों को अपनी आंखों से देखा है, उनसे बातचीत की है, उनके पास बैठे है, और उनके द्वारा जीवन की समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया है, और यह बात है भी सत्य, क्योंकि इस प्रकार का विवरण प्रतिष्ठित विद्वान् और तांत्रिक श्री गोपीनाथ कविराज के ग्रन्थों में भी मिलता है, और अन्य जितने भी उच्च कोटि के महात्मा या योगी जिन लोगों के भी संपर्क में आये हैं उन्होंने इस बात की पुष्टि की है कि वास्तव में ही सिद्धाश्रम में उन महापुरुषों को देखा जा सकता है, जो पुराणों में वर्णित है ।
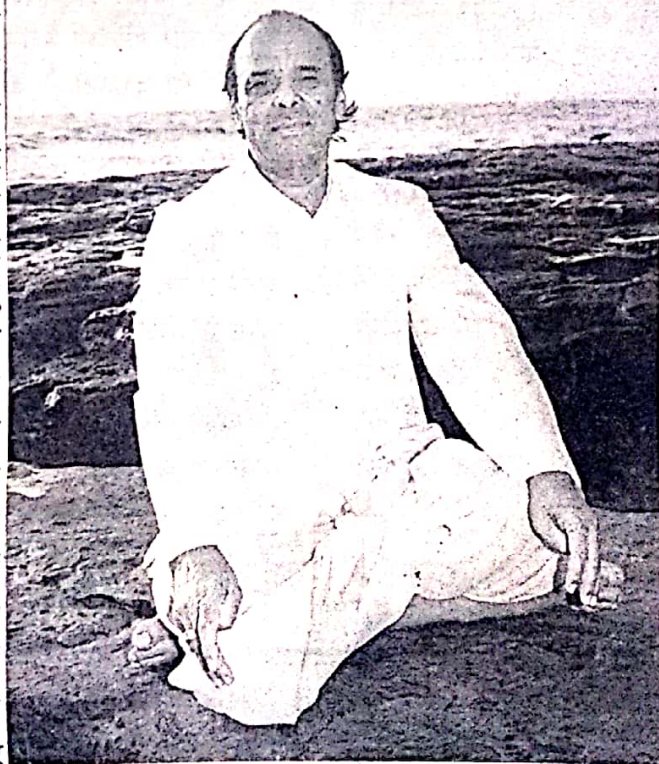
सिद्धाश्रम तो पृथ्वी का स्वर्ग है:-

यह शीर्षक तो सिद्धाश्रम के लिये बहुत सामान्य सा प्रतीत होता है, वास्तव में सिद्धाश्रम अपने आप में अद्वितीय है । जिसकी कोई तुलना हो ही नहीं सकती । हजारों-मील के दायरे में फैला हुआ यह सिद्धाश्रम तब से गतिशील है जब से भारतीय सभ्यता ने पहली-पहली आंख खोली थी। ऋग्वेद की पावन ऋचाएँ भी सिद्धाश्रम में ही पहली-पहली बार गुंजरित हुई थी । यह एक ऐसा भू-भाग है जहां मानव चिन्ता, परेशानियां, दु:ख, शोक से परे रहकर अपनी साधना में निरन्तर रत रहते हुए प्रकृति के उन रहस्यों की निरन्तर खोज करता रहता है, जो अभी तक रहस्यमय है, अथवा अज्ञात है ।

वायुयान के माध्यम से इस भू-भाग को देखना संभव नहीं है, क्योंकि विश्वकर्मा के द्वारा निर्मित यह सिद्धाश्रम एक ऐसे प्राकृतिक आवरण से आच्छादित है जो नंगी आंखों से देखा जाना संभव ही नहीं है । यद्यपि भारतवर्ष के वैज्ञानिकों ने इस संबंध में काफी प्रयत्न किया, परन्तु उन्हें यह तो आभास हुआ कि अवश्य ही ऐसा भू-भाग है जो अपने आप में अलौकिक है, पर उसे नंगी आंखों से देखा जाना संभव प्रतीत नहीं होता । पश्चिम के कुछ वैज्ञानिकों ने भारत सरकार की अनुमति से इस रहस्यमय भू-भाग से कई बार उड़ाने भरी और शक्तिशाली कैमरों के माध्यम से फोटो खीचनें का भी प्रयत्न किया, पर वे फोटो अस्पष्ट और घुधंले से ही दिखे, उसे स्पष्ट प्रतिबिम्ब नहीं दिखाई दिया, और उन्होंने भी एक स्वर से यह स्वीकार किया कि इस भू-भाग पर उड़ते समय अपूर्व मादक सुगन्ध का अनुभव होता है । हम वायुयान को जितना ही नीचे ले जाने का प्रयत्न करते हैं हमारा प्रयास लगभग असफल ही होता है, क्योंकि जब-जब भी पायलेट नीचे उड़ान भरने का प्रयत्न करता है तब तब एक अदृश्य शक्ति उसे ऊपर की ओर खींच लेती है, और काफी ऊंचाई पर वायुयान जाकर ही उस रहस्यमय आकर्षण से मुक्त हो पाता है ।

मानसरोवर और कैलाश पर्वत से भी उत्तर की ओर लगभग 800 किलोमीटर दूर स्थित यह सिद्धाश्रम तपस्वियों की तपस्या और साधना से आपूरित है । यह ऐसा भू-भाग है जहां न तो रात होती है और न सूर्य की प्रखर गर्मी ही। चौबीसों घंटे एक दूधिया सा प्रकाश बिखरा रहता है । जिसके फलस्वरूप वहां हजारों तरह के पुष्प विकसित हैं पर वे न तो सूखते हैं और न कुम्हलाते ही हैं ।

सिद्धाश्रम की विशेषता तो इस भूभाग में बहने वाली प्राकृतिक सिद्धयोगी झील है, जिसकी गहराई 75 से सवा सौ मीटर गहरी अनुभव हुई है, परन्तु इसका पानी इतना स्वच्छ और पारदर्शी है कि यदि झील में हम कोई सिक्का डाल दें तो तलहटी में उस पड़े हुए सिक्के के अक्षर भी नंगी आंखों से भली प्रकार से पढ़ सकते हैं ।

जो सिद्धाश्रम गये है और वापिस लौटे हैं उन्होने इस बात को स्वीकार किया है कि सिद्ध योगा झील में स्नान करने से स्वत: ही व्यक्ति सभी प्रकार के रोगों से मुक्त हो जाता है, उसे किसी भी प्रकार की आधि - व्याधि नहीं रहती, और एक या दो बार स्नान करने से ही उसकी वृद्धावस्था या शरीर की जीर्णता समाप्त होकर वह पुन: यौवनमय बन जाता है, एक प्रकार से उस पानी में मानव के कायाकल्प का रहस्य विद्यमान है ।
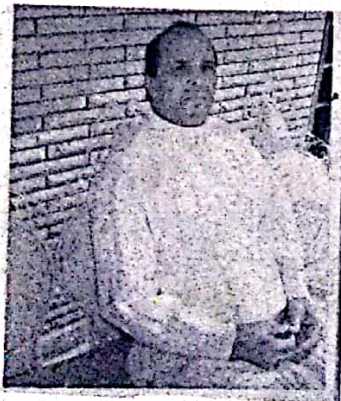
योगियों की साधनाएं:-

इस भूभाग पर सैकड़ों हजारों योगी अपनी-अपनी साधनाओं में व्यस्त हैं, न तो किसी के चेहरे पर विषाद की रेखा है, और न तनाव ही । ब्रह्म साधना उर्ध्वरेता साधना ब्रम्हाण्ड साधना, आदि कठिन और दुर्लभ साधनाओं में ये योगी अपने आश्रमों में साधनारत है। कई-कई योगी तो कई वर्षो से समाधि में हैं, और उन्हें अपने शरीर का भान ही नहीं है, पर इन योगियों के चेहरों पर एक अपूर्व तेज बिखरा रहता है, इनके पास घड़ी भर बैठने से ही मन को अद्वितीय शांति अनुभव होती है, ऐसा लगता है कि जैसे समय थम जाय और हम वर्षो तक इसी प्रकार इन योगियों के चरणों में बैठे रहें, कहीं पर यज्ञ हो रहे हैं तो कहीं पर उच्च कोटि के योगी अपने शिष्यों को साधना की बारीकियां समझा रहे है कहीं योगी अपने ही चिन्तन में लीन है, तो कई योगी समाधि से परे ब्रह्माण्ड से अन्य लोकों में विचरण करने के लिए प्रयत्न रत हैं, जहां अभी तक सामान्य मानव के चरण नहीं पड़े । एक प्रकार से देखा जाय तो पूरा वातावरण ही अपने आप में अद्वितीय तेजयुक्त प्रभाव पूर्ण और अध्यात्ममय है ।

वास्तव में ही ऐसे योगियों के दर्शन ही जीवन का सौभाग्य है, सिद्धाश्रम की यात्रा करना और इस मानव जीवन में ही इसमें प्रवेश करना ही जीवन की पूर्णता है ।

साधिकाओं की खिलखिलाहट:-

जहां योगी अपनी अपनी साधनाओं में रत है वहां साधिकाएं भी अपनी स्वाभाविक मुस्कान लिये यत्र-तत्र विचरण करती हुई दिखाई दे जाती हैं । कुछ साधिकाएं साधनाओं में रत हैं, तो कुछ साधिकाएं सिद्धाश्रम झील पर किलोलें करती हुई दिखाई दे जाती हैं । कुछ मृगछोनों के पीछे भागती हुई दिखाई देती हैं तो कुछ सुगन्धित पुष्पों के बीच अपने ख्यालों में मस्त अनुभव होती हैं ।

वास्तव में ही वहां का कण-कण सुरभिमय है, ज्ञान और चेतना, योग और साधना से अनुप्राणित है। यहां की हवा में एक अपूर्व मादकता है यहां पर रम्भा उर्वशी और मेनका जैसी अप्सराओं के नृत्य सहज ही दिखाई दे जाते है, वहां इसी धरती पर कल्पवृक्ष विद्यमान है, जिसकी छाया तलें बैठकर मानव जो भी इच्छा करता है वह तत्क्षण पूरी हो जाती है ।

परमहंस स्वामी सच्चिदानंदः सिद्धाश्रम के संस्थापक-संचालकः-

हजारों वर्षो की आयु प्राप्त परमहंस स्वामी सच्चिदानंद जी इस सिद्धाश्रम के संस्थापक संचालक है । जो ज्ञान के असीम भंडार है । जिनकी आयु के बारे में कुछ कहा भी नहीं जा सकता । मानव सभ्यता से भी पहले वे विद्यमान थे और साधनारत थे ।

पृथ्वी और इस विश्व में भौतिक और आध्यात्मिक संतुलन उनके द्वारा ही संभव है । जहां एक तरफ पृथ्वी पर भौतिकता बढ़ गई है, युद्ध लड़ाई झगड़े आदि हिंसा का वातावरण दिखाई देने लगा है वहीं योगीराज जी ने अपनी साधना से आध्यात्मिकता को बढ़ाकर एक संतुलन कायम किया है जिससे कि पृथ्वी से आध्यात्मिकता का लोप न हो जाय, जिससे कि पृथ्वी के मानव भौतिकता में ग्रस्त होकर बरबाद न हो जाय, जिससे कि मानव सभ्यता और मानव का अस्तित्व बना रह सके ।

उनकी आज्ञा से ही समय-समय पर कई योगी पुनः गृहस्थ जीवन में जाते हैं, और भारतवर्ष में स्थान स्थान पर वे अध्यात्म का वातावरण बनाये रखने का प्रयत्न करते हैं। संसार के सुख, दुख आघात प्रतिघातों से जूझते हुए यद्यपि योगी सामान्य व्यक्ति से प्रतीत होते हैं पर अन्दर से वे अपने आप में अद्वितीय होते हैं, और लगभग नित्य ही वे अपने सूक्ष्म शरीर से सिद्धाश्रम की यात्रा करते है, और पुनः लौट आते हैं, ऐसे कई योगी आज भी हम लोगों के बीच विद्यमान है ।

वास्तव में ही सिद्धाश्रम एक अद्वितीय अलौकिक और आनन्दमय भूभाग है, जहां कोई भी व्यक्ति प्रयत्न कर विशेष साधनाएं सिद्ध कर सिद्धाश्रम के किसी योगी के संपर्क में साधनाओं में पूर्णता प्राप्त कर उसके साथ सिद्धाश्रम की यात्रा कर अपने आंखों से इस विराट भूभाग को देख सकते है, अनुभव कर सकते है, और वास्तव में जीवन की सार्थकता तभी सफल है जब हम अपने जीवन काल में ही सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सकें और उन योगियों तथा परमपूज्य, परमहंस स्वामी सच्चिदानंद जी के दर्शन कर जीवन को पूर्णता दे सकें।

सिद्धाश्रम तो अपने आप में एक अद्वितीय सिद्धस्थली है, जिसकी तुलना है ही नहीं। मनुष्य तो क्या देवता भी सिद्धाश्रम में जाने के लिये तरसते है। कुछ विशेष सूत्रों और नियमों का पालन करने पर सिद्धाश्रम में पहुंचा जा सकता है ।

(1) सिद्धाश्रम में जाने के लिये ऐसे गुरु की खोज अत्यन्त जरूरी है जो सिद्धाश्रम गया हुआ हो, और उसे सिद्धाश्रम जाने और वहां से वापिस आने की सिद्धि प्राप्त हो ।

(2) जब ऐसा गुरु मिल जाये तो विनीत भाव से निष्कपट, स्वार्थ रहित उस से संपर्क स्थापित करें, और संपर्क बढ़ायें । ऐसे गुरू की सेवा करें और गुरु की इच्छा के अनुसार चलें । अपने पद या धन का घमण्ड न करते हुए निरन्तर उनके चरणों में रत रहें ।

(3) जब गुरु प्रसन्न अनुभव हो तो उनसे प्रार्थना करे कि वह आपको एक एक करके सातों दीक्षाएं-सामान्य दीक्षा, (2) सिद्ध दीक्षा (3) चैतन्य दीक्षा (4) सिद्धपीठ दीक्षा (5) पूर्णत्व दीक्षा (6) कुण्डलिनी जागरण दीक्षा (7) और साफल्य दीक्षा दें इसके बाद आप आठवीं और महत्वपूर्ण दीक्षा ''सिद्धाश्रम दीक्षा'' प्राप्त करें पहली सात दीक्षाएं लेने के बाद ही सिद्धाश्रम दीक्षा ली जा सकती है ।

(4) सिद्धाश्रम दीक्षा लेने के बाद सवा लाख गुरु मंत्र जाप करें जो गुरु आपको प्रदान करें ।

(5) इसके बाद आप सहस्त्रार जागरण की क्रिया सफलता के साथ संपन्न करें जिससे कि आप सिद्धाश्रम जाने के योग्य हो सकें, जब ऐसी सफलता आपको मिल जाये तब निरन्तर उसका अभ्यास करें ।

(6) फिर आप दो महाविद्याओं को गुरु की आज्ञानुसार सिद्ध करें और उसमें पूर्ण सफलता प्राप्त करें । दस महाविद्याओं में से कोई भी दो महाविद्याएं सिद्ध कर सकते हैं ।

(7) इसके बाद उचित अवसर पर गुरू से प्रार्थना करें कि वह आपको सिद्धाश्रम की तरफ ले जायें और फिर अपने साथ ही वापिस लाएं ।

(8) जब गुरु आपको सूक्ष्म शरीर पद्धति का ज्ञान दें तब आपको समझ लेना चाहिये कि अब आप सिद्धाश्रम जाने के लिये तैयार हैं, या गुरूदेव अपना मानस बना चुके हैं कि आपको सिद्धाश्रम ले जाय ।

(9) निश्चय ही इसके बाद गुरु अपने साथ ही आपको सिद्धाश्रम ले जायेंगे और आप स्वयं अनुभव करेंगें कि सिद्धाश्रम से श्रेष्ठ तपस्थली इस ब्रह्माण्ड में अन्यत्र कहीं है ही नहीं ।

यह सब कुछ धैर्य विश्वास, और श्रद्धा के माध्यम से ही प्राप्त हो सकता है, इसके लिये तर्क, कुतर्क, खींज या उतावलापन कोई मायने नहीं रखता । यह तो गुरुदेव की कृपा है कि वह आपको अपने साथ सिद्धाश्रम ले जांय ।

क्या हमारे पूर्वज पारे से सोना बनाते थे

निश्चय ही, यह संभव है, यह विद्या लोप नहीं हुई है और इस लेख में उन गोपनीय विधियों को दे रहे हैं जिसके माध्यम से पारे को स्वर्ण में परिवर्तित किया जा सकता है।

रसायन विज्ञान या किमिया गीरी भारत की प्राचीन विद्या रही है रसायन विद्या पर सैकड़ों हस्त लिखित ग्रन्थ उपलब्ध हैं जिनमें पारे से या तांबे से सोना बनाने की क्रिया लिखी हुई है। इन ग्रन्थों में निम्न ग्रन्थ तो अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं, ये सभी ग्रन्थ अपने आप में प्रामाणिक है, और इनमें पारे से सोना बनाने के बारे में जो कुछ लिखा गया है उसमें सत्यता है। यदि व्यक्ति प्रयत्न करें तो निश्चय ही वह पारद से स्वर्ण का निर्माण कर सकता है। उन ग्रन्थों के नाम ये है-
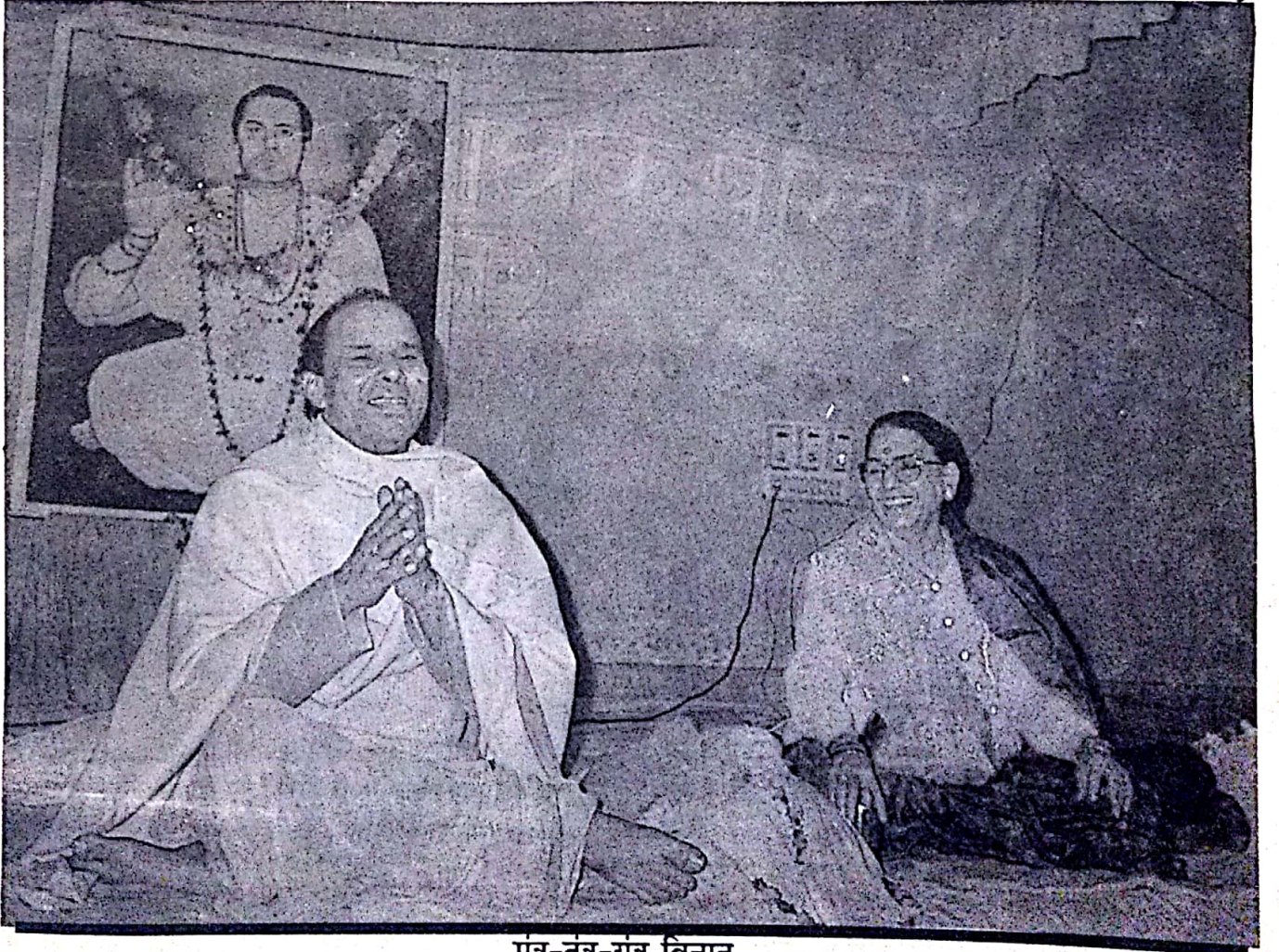
1. रसार्णव
2. नागार्जुन
3. काकचण्डीश्वर
4. रसचन्द्रचिन्तामणि
5. रसरत्नाकर
6. रसहृदय
7. रसरत्नसमुच्चम्
8. देव्यरसरत्नाकर
9. रसमंजरी
10. भावप्रकाश
11. लौह पद्धति
12. रसपद्धति
13. रसरत्नदीपिका
14. अजीर्णमंजरी
15. रसामृत
16. रसकामधेनु
17. क्षीरसिन्धु
18. रसपारिजात
19. योगसार
20. रसप्रकाश सुधाकर
21. गोयतरंगिणी
22. रसराजलक्ष्मी
23. रससारोद्धारपद्धति
24. रससार
25. रसचिन्तामणि
26. रस प्रकाश
27. रसविस्तार
28. गन्धककल्प
29. रसराजपद्धति
30. रस राजहंस
31. लोहदेह सिद्धि
32. निघंटुरत्नाकर
33. रसमंगल
34. रस संकेत कलिका
35. पुरन्दर रहस्य
36. अभिधानकामधेनु
37. टोडरा नन्दमंजरी
38. रसराजशंकर
39. रससिन्धु
40. धरणीधरसंहिता

लेखक ने इन सभी ग्रन्थों का अध्ययन किया है, और उसने यह अनुभव किया है कि वास्तव में ही रसायन विद्या के क्षेत्र में ये ग्रन्थ अपने आप में प्रामाणिक हैं, और इसमें कीमिया गिरी के बारे में जो कुछ लिखा हुआ है यदि उसके अनुसार प्रयोग किये जांय तो निश्चय ही कोई भी व्यक्ति इस कार्य में सफलता पा सकता है।

रस विज्ञान के क्षेत्र के अद्वितीय आचार्य

जैसा कि मैंने बताया कि सैकड़ों वर्षों से रस विज्ञान के क्षेत्र में शोध हो रही है, और इस क्षेत्र में अद्वितीय आचार्य बनें है, जो किसी भी धातु को दूसरी धातु में परिवर्तित करने में सक्षम रहे हैं। इनमें से कुछ नाम इस प्रकार से हैं-

(1) आदिम (2) चन्द्रसेन (3) लंकेश (रावण) (4) विशारद (5) कपाली (6) मत्त (7) माण्डव्य (8) भास्कर (9) शूरसेन (10) रत्नकोश (11) शम्भू (12) सात्विक (13) रत्नवाहन (14) इन्द्रद (15) गोमुख (16) कम्बलि (17) व्यालि (18) नागार्जुन (19) सुधानन्द (20) नागबोधि (21) यशोधन (22) खण्ड (23) कापालिक (24) ब्रम्हा (25) गोविन्द (26) लम्पक (27) हरि

वर्तमान काल में भी रस विज्ञान पर बराबर काम होता रहा है, और पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से जानकारी प्राप्त होती रही है। आज भी यह विज्ञान लोप नहीं हुआ है, और व्यक्तियों ने परिश्रम कर इसमें सफलता प्राप्त की है।

सन् 1933 में स्वामी श्यामगिरी सन्यासी अत्यन्त प्रसिद्ध हुए जो आयुर्वेद के बहुत अच्छे जानकार थे। लाहोर में उन्होंने रायबहादुर राम शरण दास को लगभग 10 सेर सोना कुछ ही मिनटों में बनाकर यह सिद्ध कर दिया था कि यह विद्या अभी तक जीवित है।

26 मई 1940 को कृष्णपाल शर्मा नामक पंजाब के रसाचार्य ने दिल्ली से बिड़ला हाऊस में पारे को सोने में बदल कर बता दिया था, उस समय उनके पास श्री युगल किशोर बिड़ला, श्री वियोगी हरि, स्वामी गणेशदत्त, बिड़ला मील के सेकेट्री श्री सीताराम खेमका आदि उपस्थित थे।

उन्हीं दिनों खारीबावली दिल्ली में गोरधन दास जी रसाचार्य का नाम अत्यन्त प्रसिद्ध हुआ जिन्हें पारद विज्ञान का पूर्ण रूप से ज्ञान था उन्होंने लगभग एक हजार लोगों की भीड़ में पारद से लगभग आधे घंटे में ही स्वर्ण बनाकर बता दिया था। उसी सोने से दिल्ली में एक प्रसिद्ध मंदिर में पंचपात्र और आचमनी बनाई जो आज भी मंदिर के भंडार में सुरक्षित है।

सन् 1942 में पंजाब के कृष्णपाल शर्मा ने ऋषिकेश में महात्मा गांधी उनके सचिव श्री महादेव देसाई श्री युगल किशोर बिड़ला आदि की उपस्थिति में मात्र 45 मिनिट में दो सौ तोला पारद को स्वर्ण बनाकर सब के सामने प्रत्यक्ष कर दिया, जो उस समय 75 (पचहत्तर हजार) रुपये में बिका, इस धनराशि को दान में दे दिया गया।

इस घटना का उल्लेख साप्ताहिक हिन्दुस्तान के 6 नवम्बर 1983 के अंक में भी है। उन्हीं दिनों हिमाचल प्रदेश के हरि कृष्ण वशिष्ट प्रसिद्ध रसाचार्य हुए थे, जिन्होंने महामना मदन मोहन मालवीय को पारे से स्वर्ण बनाकर कुछ ही मिनट में दे दिया था और वह स्वर्ण हिन्दू विश्व विद्यालय को दान में दे दिया गया।

शेष पृष्ठ 55 पर

बांझपन मिटाया जा सकता है- पुत्रदा तंत्र से

यह प्रामाणिक तंत्र है, स्पष्ट, सरल, बिना जोखिम का, और फिर पुत्रदा एकादशी-16-1-93 को यह तंत्र प्रयोग करें तो शत प्रतिशत सफलता की उम्मीद है और वह भी पुत्र प्राप्ति से ही।

- पुत्र प्राप्ति के लिये कई विधियां तांत्रिक ग्रन्थों में लिखी हुई हैं। जो कि अपने आप में प्रामाणिक हैं।
- पुत्रदा तंत्र से तो मनोवांछित सफलता मिलती ही है, और पुत्र की प्राप्ति होती है। पर इसके लिये विश्वास, श्रद्धा और धैर्य आवश्यक है।
- पिंकिंणी तंत्र में लिखा हुआ है कि जिस स्त्री को पुत्र नहीं हो रहा हो उसे चाहिये कि वह अपने बड़ों से या पति से आज्ञा लेकर अपने गुरु के पास जाय, पति के साथ जाकर गुरु की पूजा करें और उन्हें यथोचित दान दक्षिणा दें तथा उनसे आशीर्वाद प्राप्त करें, तब भी निश्चय ही पुत्र प्राप्ति होती है।
- यदि पुत्रेष्ठी जड़ के पाउडर को रजस्वला समय में तीन दिन तक लें तो अगले ही महीने गर्भ धारण हो जाता है।
- पुत्र प्राप्ति के लिये हरिवंश पुराण का पाठ भी उत्तम माना गया हे, पति-पत्नी दोनों अपने घर में किसी योग्य पंडित के द्वारा हरिवंश पुराण का पाठ करावें और नित्य श्रद्धापूर्वक सुने तो पुत्र प्राप्ति होती है।

पुत्र प्राप्ति का एक श्रेष्ठ मंत्र है
देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणागते॥

- पति-पत्नी दोनों जब भी समय मिले इस मंत्र का पाठ करे तब भी पुत्र प्राप्ति होने को सभावना होती है।
- जिसको पुत्र प्राप्ति नहीं हो रही हो वह स्त्री रविवार के दिन प्रातः काल उठकर सिर धोकर खुले बाल फैलाकर सूर्य उगते समय भगवान् सूर्य को अर्ध्य दें और उससे श्रेष्ठ पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद मांगे और इस प्रकार 16 रविवार करे तो निश्चय ही पुत्र प्राप्ति होती है।
- यह मेरा अनुभव है कि यदि जिस स्त्री को पुत्र नहीं हो वह अपने घर में 21 तोले का प्राण प्रतिष्ठायुक्त चैतन्य पारद शिवलिंग स्थापित करें और प्रति सोमवार सिर धोकर पीठ पर बाल फैलाकर ''नमः शिवाय'' मंत्र से उस पारद शिवलिंग पर धीरे-धीरे जल चढ़ावें और फिर सात बार उस जल का चरणामृत ले और इस प्रकार 16 सोमवार करें तो निश्चय ही पुत्र प्राप्ति होती है।

सही अर्थों में देखा जाय तो किसी भी नारी के लिये बांझपन एक प्रकार से अभिशाप है जीवन की न्यूनता है एक बहुत बड़ा अभाव है जो कि नारी को मातृत्व नहीं दे पाता, और जो नारी अपने जीवन में मां नहीं बन पाती उसका जीवन अधूरा सा ही होता है। वह हर समय एक तनाव में ग्रस्त रहती है, समाज की नजरें भी उसके प्रति बदल जाती है, और वह स्वयं अपने आपको दीन हीन अनुभव करने लगती है।

इसके लिये पिछले कई वर्षों से वैज्ञानिक प्रयत्नशील है कि नारी को पूर्ण रूप से मातृत्व प्राप्त हो सके। पर वे अभी तक न तो इस बात का पता लगा सकें है कि वह बांझ क्यों रहती है? जबकि मेडिकल दृष्टि से न तो उसके गर्भाशय में किसी प्रकार की न्यूनता होती है, और न पुरुष में ही कोई कमी अनुभव होती है। पति-पत्नी दोनों ही स्वस्थ होते हैं, चिकित्सा शास्त्र की दृष्टि से उनमें किसी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं होती, दोनों स्वस्थ और तरुण यौवनमय होते हैं, फिर वे क्या कारण है जिससे कि उनके संतान नहीं हो पाती? जिससे कि वे सही अर्थों में माता-पिता नहीं बन पाते।

पर अभी तक न तो डॉक्टर इस बात का पता लगा सकें हैं कि किन कारणों से यह बांझपन रहता है, और न ऐसी कोई औषधि का ही निर्माण हुआ है जिससे कि उनके बांझपन को मिटाया जा सके। मैने कुछ वर्षों पहले पत्रिका के इन्हीं अंकों में "अब कोई भी स्त्री बांझ नहीं रह सकती" लेख लिखा था, और उसमें मैंने "पुत्रदा" औषधि का वर्णन किया था, जिसके माध्यम से संतान उत्पन्न हो सकती है, और स्त्री का बांझपन हमेशा-हमेशा के लिये मिटाया जा सकता है।

उस लेख की काफी चर्चा हुई थी और सैकड़ों स्त्रियों ने इस पुत्रदा औषधि का प्रयोग कर अपने जीवन की न्यूनता को अपने जीवन के बांझपन को हमेशा-हमेशा के लिये समाप्त कर पुत्रवती होकर समाज में सम्माननीय स्थान प्राप्त किया था।

वास्तव में ही पुत्रदा औषधि में कुछ ऐसा ही विशेष गुण है जो पुरुष या स्त्री के शारीरिक न्यूनताओं को समाप्त करने में समर्थ है। यह औषधि जहां नारी के गर्भाशय को ताकत देती है, और उसे पुत्र धारण करने के योग्य बनाती है, वहीं इस औषधि के सेवन से पुरुष के शुक्राण बलवान् बनकर संतान उत्पन्न करने में समर्थ हो पाते हैं। इस औषधि की यह विशेषता है कि यदि पुरुष में शुक्राणु नहीं होते तो इस औषधि से उनका निर्माण होने लगता है, और यदि शुक्राणु कमजोर होते हैं, तो वे स्वतः ही बलवान् होने लगते है उनका अनुपात बढ़ जाता है, पुरुष में यौवन और शक्ति आने लगती है, और वह सही अर्थों में पूर्ण पुरुष बनकर जहां एक ओर अपनी पत्नी को संतुष्ट कर पाता है वहीं दूसरी ओर वह संतान उत्पन्न करने में भी समर्थ हो पाता है।

यह भी गारन्टी है कि यदि पुत्र नहीं हो रहा हो या बार बार गर्भ गिर रहा हो अथवा केवल कन्या संतान ही हो रही हो तो किसी योग्य पंडित द्वारा पुत्रेष्ठी यज्ञ संपन्न कराकर यज्ञ की आंच पर खीर बनाकर यज्ञ स्थल पर ही उस खीर का सेवन करें तो निश्चय ही पुत्र प्राप्ति होती ही है, इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं।

पुत्रदा तंत्रः

हमारे भारतीय ग्रन्थों में जहां पुत्रदा जड़ीबूंटी का वर्णन मिलता है वहीं तंत्र के माध्यम से भी संतान उत्पन्न होने की स्थिति या प्रयोग स्पष्ट किया। मैंने अनुभव किया है कि वास्तव में ही यह तंत्र अपने आप में समर्थ और सशक्त है, तथा इसके माध्यम से बांझपन का श्राप अपने जीवन से मिटाया जा सकता है।

यह प्रयोग या साधना किसी भी रविवार से प्रारम्भ की जा सकती है, परन्तु साल में एक दिन तो ऐसा है कि जब प्रत्येक स्त्री इस प्रयोग को संपन्न करती है। पुत्रदा एकादशी एक ऐसा ही समय है जो कि इस वर्ष 16 जनवरी 1993 को आ रहा है। 16-1-93 को पुत्रदा एकादशी है, और इस दिन इस प्रयोग को अवश्य ही संपन्न करना चाहिये। शास्त्रों के अनुसार पांच प्रकार की स्थितियों में इस प्रयोग को संपन्न किया जा सकता है। यदि (1) संतान नहीं हुई हो, और स्त्री बांझ हो तो (2) यदि बार-बार गर्भ गिर जाता हो और संतान धारण नहीं हो रही हो तो (3) यदि केवल लड़कियां ही लड़कियां हो रही हो तो पुत्र प्राप्ति के लिये (4) यदि पुरुष या नारी के शरीर में किसी प्रकार की कमजोरी, बीमारी या क्षीणता हो तो (5) सुन्दर, स्वस्थ पुत्र प्राप्ति के लिये, पुत्र की रक्षा के लिये, पुत्र के स्वास्थ्य के लिये और पुत्र को अकाल मृत्यु से बचाने के लिये भी पुत्रदा एकादशी के दिन ऐसा प्रयोग संपन्न करती है।
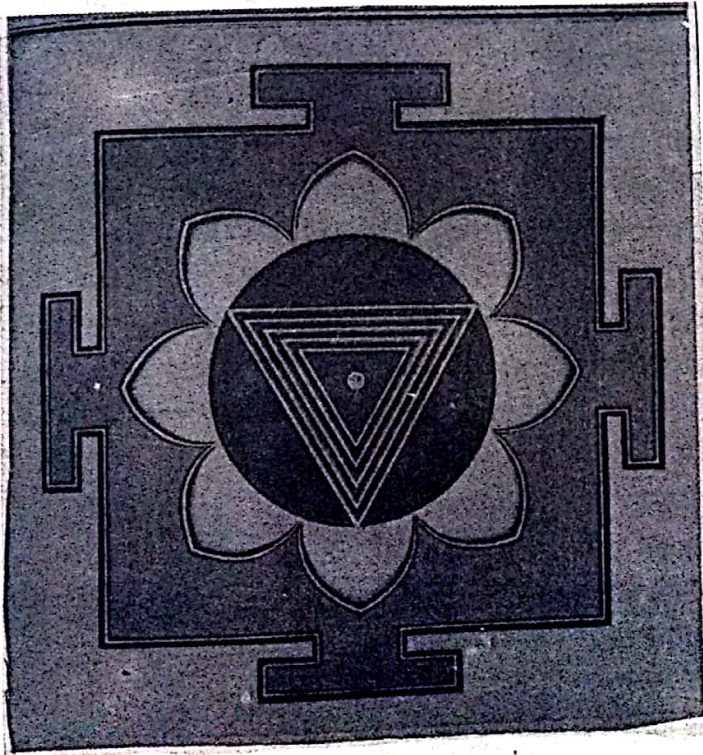
पर, जैसा कि मैंने ऊपर बताया कि यह प्रयोग पुत्रदा एकादशी के अतिरिक्त किसी भी रविवार के दिन संपन्न किया जा सकता है।

जो नारी इस प्रकार का प्रयोग संपन्न करना चाहती है, उसे चाहिये कि वह प्रयोग के दिन सुबह जल्दी चार बजे उठ जाएं और अपने बालों को भली प्रकार से धो लें तथा स्वयं स्नान कर स्वच्छ सफेद वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान में पति के साथ बैठ जाएं।

फिर अपने सामने किसी पात्र में पारे से निर्मित **"पारद शिवलिंग"** स्थापित करें, और स्वयं अपने पति के साथ भगवान् शिव की संक्षिप्त पूजा करें। फिर दूध और जल मिलाकर **"ॐ नमः शिवाय"** मंत्र से भगवान् शिव पर जल चढावें। लगभग एक घंटे तक पतली धारा से दूध और जल चढ़ाते हुए उपरोक्त मंत्र का उच्चारण पति-पत्नी दोनों करें। जब एक घंटा पूरा हो जाए तब भगवान् शिव को दूसरे पात्र में स्थापित कर उन पर चंदन या केशर पुष्प आदि भेंट चढावें, और उनकी संक्षिप्त आरती करें। इसके बाद भगवान् शिव पर जो जल चढ़ाया गया है, उसको थोड़ा-थोड़ा करके सात बार पीयें और हाथ जोड़कर भगवान् शिव और मां पार्वती से प्रार्थना करें कि वे उसके जीवन के बांझपन को समाप्त करने में सहायक हों और शीघ्र ही उसकी कोख से सुन्दर स्वस्थ पुत्र उत्पन्न हो।

इसके बाद पति तो वहीं बैठा रहे और पत्नी किसी लोटे में जल लेकर आंगन में भगवान् सूर्य को सात बार जल चढ़ावे और पुष्प या दूर्वा चढ़ावे फिर नीचे झुककर उस दूर्वा (बगीचे में जो द्रोब या दूब उगती है उसे दूर्वा कहा जाता है) को दांतों में चबा लें और भगवान् सूर्य से भी उनके ही समान तेजस्वी बालक उत्पन्न करने की प्रार्थना करें, तत्पश्चात् स्त्री वापिस पूजा स्थान में आकर अपने पति के दाहिनी ओर बैठ जाएं।

शेष पृष्ठ 56 पर

सहस्त्ररूपा लक्ष्मी सिद्धि

लक्ष्मी को स्थायी रूप से सिद्ध करने का सफल प्रयोग

मकर सक्रांति 14-1-93 के दिन, एक दुर्लभ अवसर

तांत्रिक दृष्टि से मकर सक्रांति का अपने आप में विशेष महत्व होता है। ग्रन्थों के अनुसार इस दिन जो भी साधना संपन्न की जाती है इसमें पूरी-पूरी सफलता प्राप्त होती ही है। विशेषकर लक्ष्मी साधना में या भगवती लक्ष्मी को अनुकूल बनाने में उसे वश में करने और उसे सिद्ध करने के लिये मकर सक्रांति का विशेष महत्व है।

प्रतिवर्ष मकर सक्रांति एक ही तारीख अर्थात् 14 जनवरी को ही स्पष्ट होती है। इस वर्ष 14 जनवरी 1993 को मकर सक्रांति है और यह वर्ष में केवल एक बार आती है। अतः प्रत्येक साधक को इसदिन का उपयोग करना चाहिये, और विशेषकर यदि साधक या गृहस्थ, पुरुष या स्त्री मकर सक्रांति के दिन सहस्त्ररूपा लक्ष्मी साधना करे तो वास्तव में ही लक्ष्मी सिद्ध होती है, घर का अभाव और दरिद्रता मिटती है, कर्ज समाप्त होने लगता है, और आमदनी के नये नये स्रोत बनने लगते हैं।

जो व्यक्ति अपने जीवन में लक्ष्मी की साधना नहीं करता उसके जीवन में सफलता और समृद्धि प्राप्त हो ही नहीं सकती। संसार के लगभग सभी देशों में अन्य देवताओं को तो भले ही मान्यता दी हो या न दी हो, परन्तु लक्ष्मी की पूजा या साधना तो प्रत्येक देश में होती ही है।

● हिमाचल के आदिवासी लक्ष्मी प्राप्ति के लिये प्रत्येक बुधवार को प्रातः चंदनचूरा कमलगट्टे के बीज तथा घी मिलाकर लक्ष्मी की 21 आहुतियां अग्नि में देते हैं, उनकी मान्यता के अनुसार इससे उनके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

● जापान में लक्ष्मी प्राप्ति के लिये सफेद आक के गणपति अपने घर में रखते हैं, और नित्य उनके दर्शन कर फिर अपने कार्य पर जाते हैं। ● अमेरिका के आदिवासी लक्ष्मी प्राप्ति के लिये गले में मधुरूपेण रूद्राक्ष के तीन मनके धारण करते हैं। ● ईरान में लक्ष्मी प्राप्ति के लिये तांबे का मंत्र सिद्ध कड़ा अपने हाथ में पहने रखते हैं, उनकी मान्यता के अनुसार इससे उनके जीवन में आर्थिक दृष्टि से कोई बाधा नहीं रहती। भारतवर्ष के प्राचीन तांत्रिक ग्रन्थों में उल्लेख मिलता है कि यदि व्यक्ति अपने गुरु के पास जाकर उनकी पूजा कर उनको दान दक्षिणा, भेंट देकर उनके द्वारा अपनी जीभ पर चांदी की सलाखा से अष्टगन्ध के द्वारा तांत्रोक्त लक्ष्मी बीज मंत्र अंकित कराता है तो उसी दिन से उसका भाग्य बदल जाता है, और वह निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर रहता है। ऐसा करने के बाद निश्चय ही उनके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

मेरे लम्बे जीवन के इतिहास में मैंने यह अनुभव किया कि सहस्त्ररूपा लक्ष्मी साधना से आकस्मिक धन प्राप्ति में विशेष अनुकूलता प्राप्त होती है। आर्थिक उन्नति के साथ-साथ व्यापार में वृद्धि होने लगती है, प्रमोशन के अवसर बनने लगते है, और कुछ ऐसी स्थितियां बनती है कि समाज में व्यक्ति का सम्मान, यश और प्रसिद्धि बढ़ जाती है।

यों तो शास्त्रों के अनुसार सहस्त्ररूपा लक्ष्मी साधना को किसी भी अमावस्या को संपन्न कर सकते है, इसके लिये मकर सक्रांति कोई आवश्यक नहीं है, परन्तु यदि मकर सक्रांति का अवसर मिल रहा है तो अवश्य ही इस दिन इसका प्रयोग संपन्न करें तो ज्यादा अनुकूलता प्राप्त होती है।

सहस्त्ररूपा लक्ष्मी

लक्ष्मी का तात्पर्य केवल धन ही नहीं होता, अपितु जीवन की सारी स्थितियों की अनुकूलता लक्ष्मी कही जाती है। सहस्त्ररूपा लक्ष्मी का तात्पर्य (1) धन लक्ष्मी (2) स्वास्थ्य लक्ष्मी (3) पराक्रम लक्ष्मी (4) सुख लक्ष्मी (5) संतान लक्ष्मी (6) शत्रु निवारण लक्ष्मी (7) पत्नी लक्ष्मी (8) दीर्घायु लक्ष्मी (9) भाग्य लक्ष्मी (10) राज्य सम्मान लक्ष्मी (11) वाहन लक्ष्मी (12) आनन्द लक्ष्मी (13) सौभाग्य लक्ष्मी (14) पौत्र लक्ष्मी (15) सर्वोन्नति लक्ष्मी, और इस प्रकार जीवन के जितने भी सुख एवं सौभाग्य होते हैं वह लक्ष्मी के अन्तर्गत आते हैं। इन समस्त प्रकार की लक्ष्मी को सहस्त्ररूपा लक्ष्मी कहा जाती है।

सहस्त्ररूपा लक्ष्मी को जैसा कि मैंने बताया कि अमावस्या की रात्रि को सिद्ध किया जाता है, अथवा मकर संक्रांति के दिन यह प्रयोग संपन्न करें तो ज्यादा उचित एवं अनुकूल रहता है।

यह प्रयोग या तो दिन में 11 बजे से 4 बजे के बीच अर्थात् मध्यान्ह काल में संपन्न किया जाता है, अथवा अर्द्धरात्रि अर्थात् 11 बजे रात्रि से 4 बजे रात्रि के बीच इस प्रयोग को संपन्न किया जाय तो ज्यादा उचित एवं अनुकूल होता है, आप इन दोनों समय में से कोई भी एक समय चुन सकते हैं।
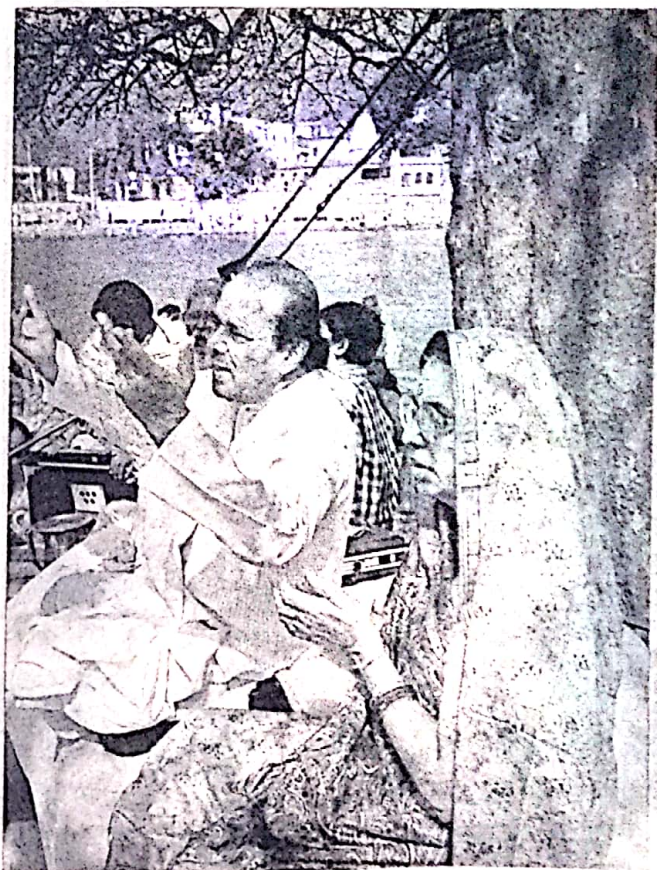
सहस्त्ररूपा लक्ष्मी प्रयोगः

जो साधक या व्यक्ति साधना करना चाहता है वह पीली धोती पहन कर कंधे पर भी पीला वस्त्र डालकर यज्ञोपवीत धारण कर उत्तर या पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाएं और सामने चांदी, पीतल या तांबे की थाली या प्लेट स्थापित कर दें, लोहे या स्टील का पात्र नहीं होना चाहिये।

इस साधना में **''सहस्त्ररूपा लक्ष्मी महायंत्र''** का प्रयोग किया जाता है जो मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त एवं चैतन्य हो, कोई भी विद्वान् जो इस विद्या को जानता है वह तांम्रपत्र पर अंकित सहस्त्ररूपा लक्ष्मी ''महायंत्र'' को चैतन्य बना सकता है।

नजर जिसकी तरफ करके निगाहें फेर लेते हो।
कयामत तक फिर उस दिल की परेशानी नहीं जाती।।

यदि साधक चाहे तो ऐसा चांदी का भी **सहस्त्ररूपा लक्ष्मी यंत्र** निर्मित कराकर अपनी पूजा स्थान में स्थापित कर सकता है, अन्यथा तांबे पर अंकित सहस्त्ररूपा लक्ष्मी महायंत्र तो अनुकूल एवं सिद्धिप्रद है ही।

इस यंत्र को पात्र में स्थापित कर दें और उसके चारों ओर तेल के दीपक लगा दें। दीपक की लौ साधक की ओर होनी चाहिये, और उसमें किसी भी प्रकार के तेल का प्रयोग किया जा सकता है

फिर इस यंत्र को साधक के बीच चावलों की एक ढ़ेरी बनाकर उसके सामने शुद्ध घृत का दीपक लगा लेना चाहिये, जिसकी लौ साधक की ओर हो।

यह प्रयोग साधक अकेले कर सकता है, या अपनी पत्नी के साथ संपन्न कर सकता है, यदि पत्नी साथ में बैठे तो उसे अपने दाहिनी ओर बिठाना चाहिये।

फिर केशर घोटकर उसकी 11 बिन्दियां यंत्र के ऊपर लगानी चाहिये और एक बड़ी बिन्दी यंत्र के मध्य में अंकित करनी चाहिये। फिर दाहिने हाथ में जल लेकर हिन्दी में ही कहे कि मैं अमुक नाम का व्यक्ति आज सहस्त्ररूपा लक्ष्मी प्रयोग संपन्न कर रहा हूं ऐसा कहकर हाथ में लिये हुए जल को जमीन पर छोड दें।

इस साधना में पहले से ही 108 पुष्प लाकर रख देने चाहिये ये किसी भी प्रकार के पुष्प हो सकते है, यदि गुलाब के पुष्प मिले तो ज्यादा उचित होता है, अन्यथा आप किसी भी पुष्प का प्रयोग कर सकते हैं।

फिर अन्य पात्र में सहस्त्ररूपा लक्ष्मी यंत्र को दूध से, दही से, घी से, शहद से, और शक्कर से स्नान कराकर फिर शुद्ध जल से या गंगाजल से स्नान कराकर उसे साफ वस्त्र से पौंछ लें और पहले वाले पात्र में केशर से स्वस्तिक का चिन्ह बनाकर उसके ऊपर इस यंत्र को स्थापित कर दें। यदि स्वस्तिक चिन्ह बनाना नहीं आता हो तो केशर से ॐ लिख दें और उस पर यंत्र को स्थापित कर दें। इसके बाद पुनः इस पर 11 केशर की बिन्दियां लगायें और मध्य में एक बिन्दी लगावें।

तत्पश्चात् सुगन्धित अगरबत्ती लगावें, और नीचे लिखे मंत्र का उच्चारण करते हुए उस पर पुष्प चढ़ावें। एक बार मंत्र पढ़ें और एक पुष्प सहस्त्ररूपा लक्ष्मी यंत्र पर चढ़ावें इस प्रकार 108 बार मंत्र पढ़ें और 108 पुष्प यंत्र पर चढ़ा दें।

सहस्त्ररूपा लक्ष्मी मंत्र

ॐ श्रीं श्रीं सहस्त्ररूपा लक्ष्मी सिद्धये श्रीं श्रीं ॐ नमः

फिर किसी पात्र में पतली-पतली लकड़ियों से अग्नि स्थापित करें और पहले से ही 108 कमलबीज या कमलगट्टे मंगवाकर रख लेने चाहिये, और फिर इसी मंत्र का उच्चारण करते हुए एक एक कमलबीज अग्नि में घी के साथ चढ़ाते रहें, अर्थात् एक मंत्र उच्चारण करें और चम्मच में घी तथा एक कमलबीज डालकर अग्नि को चढ़ा दें। इस प्रकार 108 बार करें

अन्त में एक थाली में 11 बत्तियां लगाकर भगवती लक्ष्मी की आरती करें। यदि आरती स्मरण न हो तो ''जय लक्ष्मी जय लक्ष्मी'' करते हुए आरती को संपन्न कर दें और लक्ष्मी के सामने दूध से बना हुआ जो प्रसाद चढ़ाया गया है उसे स्वयं भी ग्रहण करें और परिवार के अन्य सदस्यों को भी दें।

इसके बाद साधक चाहे तो विश्राम कर सकता है, और दूसरे दिन सुबह प्रातः काल उस सहस्त्ररूपा लक्ष्मी यंत्र को अपने पूजा स्थान में या अपने संदूक में अथवा दूकान में रख दें और उन पुष्पों को किसी पवित्र स्थान पर डाल दें।

इस प्रकार यह सहंस्त्ररूपा लक्ष्मी तांत्रिक प्रयोग संपन्न होता है। जो अपने आप में महत्वपूर्ण भाग्योदय कारक और प्रभावयुक्त होता है। अब तो कोई अभागा ही होगा जो ऐसा महत्वपूर्ण अवसर और ऐसा महत्वपूर्ण प्रयोग प्राप्त होने के बावजूद भी यह प्रयोग संपन्न न करे।

जो स्त्री अपने पति की निगरानी या सी.आई.डी. करती है, वह अपने ही गृहस्थ की जड़ों में मट्ठा डालकर उसे खोखला करती है।

समृद्धिशाली बनना आपकी इच्छा नहीं, आपका अधिकार है।

और आप इस अधिकार को कुछ ही सप्ताह में प्राप्त कर सकते हैं, आप स्वयं ही निर्णय कर लीजिये, हमारे कथन का, इस लेख को पढ़कर।

समृद्धिशाली या लखपति- करोड़पति होना कोई गुनाह नहीं है। यह तो जीवन का सौन्दर्य है, और आज के युग में सही दृष्टि से देखा जाय तो जीवन की पूर्णता है। यह जरूरी है कि अर्थ की जो भी प्राप्ति हो वह सामाजिक नियमों के अनुकूल तथा कानून की दृष्टि से उचित हो।

दरिद्रता को जीवन में कभी भी प्रश्रय नहीं मिला। यदि हमारे प्राचीन ग्रन्थों को टटोलकर देखें तो उसमें कहीं पर भी दीनता या दरिद्रता की सराहना नहीं की है। हमारे कोई भी ऋषि, मुनि सिद्ध योगी या तपस्वी दरिद्री नहीं रहे। धन की महत्ता को उन्होंने भी समझा था, और उन्होने भी स्वीकार किया था कि जीवन की पूर्णता भुखमरी, गरीबी, दीनता या दरिद्रता नहीं है, अपितु समृद्धता, सुख और सौभाग्य है।

परिश्रम से नहीं

यदि परिश्रम से ही समृद्धता प्राप्त होती हो तो जितने भी मजदूर पत्थर तोड़ने वाले या मेहनत करने वाले मजदूर कारीगर हैं वे सभी लखपति, करोड़पति अथवा समृद्धिशाली होते, क्योंकि वे नित्य आठ-दस घण्टे परिश्रम करते है, और जरूरत से ज्यादा मेहनत कर शरीर तोड़कर कार्य करने के बाद विश्राम करते हैं, फिर भी उनके जीवन में दरिद्रता या गरीबी बनी रहती है। इसका तात्पर्य यह स्पष्ट हुआ कि मात्र परिश्रम से जीवन में समृद्धता नहीं आ सकती।

और न भाग्य से ही जीवन की गरीबी मिट सकती है। यदि हम अपने चारों ओर दृष्टि डालें तों मुट्ठीभर लोग ही धनवान् या समृद्धिशाली हैं, और लगभग 80 प्रतिशत व्यक्ति गरीबी की रेखा से भी नीचे जीवन यापन कर रहे हैं। या औसत मध्यम वर्गीय जीवन जी रहे हैं।

तो क्या इन सबके भाग्य कमजोर है, क्या इन सबके भाग्य में गरीबी ही लिखी हुई है, क्या इन सबके जीवन में सामान्य जीवन जीने की लकीरें ही अंकित है? ऐसा तो संभव नहीं है, खाली भाग्य के भरोसे बैठे रहने से ही जीवन में समृद्धता और ऐश्वर्य प्राप्त नहीं हो सकता।

और जब तक आपके जीवन में समृद्धता सुख और सौभाग्य प्राप्त नहीं हो सकता, तब तक न तो आप अपनी इच्छाओं को पूर्णता दे सकते है, और न आपके मन में जो

कार्य करने की भावना है उनको संपन्नता श्रेष्ठता दे सकते हैं। यदि आपके मन में विदेश घूमना है, या आपको चित्रकला का शौक है, और इस कला को ऊंचाई पर उठाना है तो केवल रोटी रोजी के चक्कर में पड़कर अपनी मन की हसरत पूरा नहीं कर सकते। इसके लिये आप जब अपने जीवन की मूल आवश्यकताओं की समस्याओं से परे हटेंगे तभी अपनी मन में जो भावनाएं हैं उनको ऊंचाई पर उठा सकेंगे।

दैवी सहायता से ही संभव है:

अब यह प्रामाणिक रूप से स्पष्ट हो गया कि मनुष्य केवल अपने प्रयत्नों या परिश्रम से ही पूर्णता समृद्धता और ऐश्वर्य प्राप्त नहीं कर सकता इसके लिये यह जरूरी है कि उसे अपने परिश्रम के अलावा दैवी सहायता भी चाहिये। और जब तक हम इस दैवी सहायता को प्राप्त नहीं कर पाते, जब तक उन्हें अपने अनुकूल नहीं बना पाते तब तक हमारा जीवन सामान्य सा जीवन ही बना रहेगा, चाहे हम कितना ही परिश्रम कर लें, चाहे हम कितना ही भाग्य का रोना रो लें।

पूर्ण समृद्धि दैवी सहायता से ही हो सकती है, और दैवी सहायता तंत्र के माध्यम से आती है।
लक्ष्मी कवच या लक्ष्मी का मंत्र जपने से समृद्धि नहीं आ सकती उसके लिये तो साधक यह निश्चय कर लें तो संबंधित तंत्र का प्रभाव तुरन्त होता है, और उसके आय के स्रोत बढ़ जाते हैं, फलस्वरूप वह कुछ ही समय में पूर्ण समृद्धिशाली बन जाता है।
स्वस्थ चिन्तन ही जीवन को पूर्णता देता है। यदि आप अपने मन में निराशा की भावना रखेंगे या आप अपने आप को दीन-हीन निराश, दुःखी ही अनुभव करते रहेंगें तो आप कभी भी उन्नति नहीं कर सकते। इसकी अपेक्षा जो आत्म विश्वास से भरा हुआ होता है जो हर समय उन्नति का आकांक्षी होता है जिसके मन में निरन्तर आगे बढ़ने की भावना होती है वह निश्चय ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है निश्चय ही आप जैसा बोयेंगे, वैसा ही फसल काटेंगे। यदि आप अपने मन के खेत में निराशा के बीज बोयेंगे तो आशा के फलदायक वृक्ष नहीं लग सकते।
साधना ही जीवन है, साधना ही पूर्णता है, और साधना ही सफलता है। यह कोई आवश्यक नहीं है कि आप मांसाहारी या शाकाहारी हैं शराब या सिगरेट पीते हैं या नहीं, साधना में यह कोई बाधक तत्व नहीं है। आपके मन में हौसला और हिम्मत होनी चाहिये तो निश्चय ही आप साधना में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

पर यह विश्वास पर, श्रद्धा पर और धैर्य पर निर्भर है। इसके लिये यह आवश्यक है कि आपको कोई सही मार्ग दर्शक मिले। आपको अपने जीवन में सही गुरू की प्राप्ति हो, गुरु वह जो इस क्षेत्र में सिद्ध हो, सफल हो। उसको सही गुरु की प्राप्ति हो, उसका स्वयं का जीवन भी दैवी सहायता से पूर्ण समृद्धिशाली हो, वही गुरु आपको सही प्रकार से मार्ग दर्शन दे सकता है, कि आप किस प्रकार से दैवी सहायता प्राप्त करें, किस दृष्टि से उन्हें अपने अनुकूल बनायें जिससे कि हमें उचित अवसर मिल सकें जिस से कि हमें ऐसा वातावरण मिल सकें, जिसमें प्रगति करें, पग-पग पर जो हमें बाधाएं आ रही हैं वे दूर हों, और हम कम समय में तेजी के साथ चलते हुए समृद्धता के उस लक्ष्य पर पहुंच सकें जो हमारे जीवन का अभीष्ट है।

पर ऐसे गुरु गलियों में या राह चलते तो मिल नहीं सकते। इस क्षेत्र में पाखण्ड और ढोंग ज्यादा है, जिन्होंने बहुत ज्यादा तिलक छापे लगा रखें है वे सही गुरु हो ही नहीं सकते। जिन्होंने अपने शरीर का विज्ञापन कर रखा है वे आपको भली प्रकार से मार्ग दर्शन नहीं दे सकते। इसके लिये आपको अपनी आंखें खोलकर चलना पड़ेगा और प्रामाणिक तथा सही गुरु को ढूंढना पड़ेगा, अपनाना पड़ेगा,

उसे अपने विश्वास में लेना पड़ेगा और उस से वह रास्ता समझना पड़ेगा जिसके माध्यम से देवी कृपा प्राप्त होती है।

विलम्ब तो आत्मघात है:

आप निर्णय कर लीजिये, भली प्रकार से विचार कर लीजिये पर ऐसा न हो कि सोचने-सोचने में ही आपको कई वर्ष लग जाएं और जीवन व्यतीत हो जाय, ऐसा न हो कि आप यह सोचकर बैठ जायें कि इस क्षेत्र का मार्ग दर्शन या गुरु स्वयं आपके दरवाजे पर आकर दरवाजा खटखटायेगा और आपको मार्ग दर्शन देगा। इसके लिये आपको स्वयं को प्रयत्न करना पड़ेगा, स्वयं को आगे बढ़कर निर्णय करना पड़ेगा, और जल्दी से जल्दी निश्चय कर अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों को संभालते हुए इस क्षेत्र में तेजी के साथ आगे बढ़ना पड़ेगा।

जो गरीबी से समृद्ध बने:

यदि जीवन में देखा जाय तो हमारे सामने हजारों-हजारों उदाहरण है कि उन्होंने गरीबी में भूखमरी में कंगाली में जन्म लिया, और सही मार्ग दर्शन के साथ जीवन के उच्चतम सोपान पर पहुंचे। अमेरिका के रॉकफेलर अत्यन्त गरीबी में पैदा हुए, पर उन्हें जीवन में संत पीटर मिले, और उनके बताये हुए रास्ते पर चलकर वे करोड़पति-अरबपति बनें। ओनासिस जन्म के समय या बचपन में इतने गरीब थे कि कई बार उन्हें भरपेट खाना भी नहीं मिलता था, पर उन्हे संत बर्ग मिले और उन्होंने दैवी कृपा प्राप्त करने का रास्ता बताया जिससे ऑनासिस अपने जीवन में अरबपति बना। इसी प्रकार अमेरिका के राष्ट्रपति लिंकन, इंग्लैण्ड के कुबेरपति गुरूच जापान के अरब पति आनाविबा आदि सैकड़ों उदाहरण हैं, जिन्होंने अत्यन्त गरीबी में जन्म लेकर भी उच्च संतों या इस प्रकार के मार्ग दर्शक की छाया तले आगे बढ़कर समृद्धतम जीवन प्राप्त किया और अपने जीवन में ही अरबपति बनें।

आप भी कुछ ही महीनों में करोड़पति बन सकते है:

यह लफ्फाजी नहीं, अपितु हकीकत है, आप चाहें तो इस गरीबी से ऊपर उठकर अपने जीवन में ही पूर्ण समृद्ध जीवन प्राप्त कर सकते है। अपने घर की दरिद्रता को हजारों हजारों मील दूर धकेल सकते हैं, जीवन की कंगाली को परे हटा सकते हैं, और अपने जीवन में ही वह समृद्ध जीवन प्राप्त कर सकते हैं जो अपने आप में अद्वितीय हो, सौभाग्यदायक हो पूर्ण हो, और ऐश्वर्यमय हो।

इसके लिये सात सूत्र है जिनका मनन, चिन्तन करना जरूरी है, पर खाली चिन्तन, मनन सें ही नहीं, आज से ही अपने जीवन में उतारना आवश्यक है। और यदि दृढ़ता के साथ विश्वास और हौसले के साथ इन सूत्रों को अपने जीवन में उतार लेते है, तो निश्चय ही आप अपने जीवन में समृद्ध और ऐश्वर्यमय बन सकते हैं।

सात स्वर्णिम सूत्र

(1) आप आज से ही आलस्य छोड़ दें, भाग्य का रोना भुला दें और मन में यह निश्चय कर लें कि मुझे समृद्धिशाली होना ही है, मैं हर हालत में लखपति बनकर ही रहूँगा, तो आपके शरीर में अनुकू ल ऊर्जा बनेगी, जो आपके जीवन में ''निगेटिव थिंकिग'' है वह दूर हो सकेगी, क्योंकि हमारे मन में जो विचार है वही हमारे जीवन का निर्माण करते हैं, इसलिये हमेशा समृद्धमय होना ही सोचिये।

(2) रात को सोते या प्रातःकाल उठते समय यही प्रार्थना कीजिये कि आप जल्दी से जल्दी ऐश्वर्य के उस लक्ष्य को प्राप्त कर लेना चाहते हैं जो समृद्ध है। ऐसी प्रार्थना आपके मन को और विशेषकर अन्तःमन को संबल देगा, और आपको आत्मविश्वास से भरपूर बना देगा; क्योंकि हम जैसा बोयेंगे, वैसा ही काटेंगे, समृद्धमय चिन्तन ही हमें जीवन में समृद्धता दे सकता है।

(3) उस गुरु या मार्ग दर्शक को ढूंढ निकालिए जो पाखण्ड और ढोंग से परे हो, जिसे सही ज्ञान हो और जो भली प्रकार से इस क्षेत्र में आपका मार्ग दर्शन कर सकता है। और जब एक बार उसे गुरु या मार्ग दर्शक बना दिया तो उस पर विश्वास रखिये, अपने जीवन की नाव को उसके हवाले कर दीजिये, निश्चय ही वह आपको उस किनारे पर पहुंचाने में सहायक होगा।

(4) अपने जीवन में धैर्य और विश्वास बनायें रखें, एक या दो दिन में सब कुछ नहीं होता। उतावलापन, अविश्वास और कुतर्क आपके ही जीवन को समाप्त

कर देगा, इसके लिये लम्बे समय तक धैर्य और विश्वास की जरूरत है, सतत अभ्यास या प्रयत्न से ही समृद्धिमय जीवन प्राप्त हो सकता है।

(5) दैवी कृपा प्राप्त करने का प्रयत्न कीजिये हमारे सारे शास्त्र झूठे नहीं, हैं, उनमें जो कुछ साधनाएं या मंत्र प्रयोग दिये है वे अपने आप में प्रामाणिक है, यह अलग बात है कि समय के प्रभाव से उन मंत्रों में न्यूनता या परिवर्तन आ गया है, पर इसे गुरु सुधार सकता है, वह बता सकता है कि सही रास्ता क्या है, किस प्रकार की साधना से लक्ष्मी, कुबेर या समृद्धता के अधिपति आपके अनुकूल हो सकते हैं, और जीवन में पूर्णता, समृद्धता दे सकते हैं।

(6) समृद्धता के देव कुबेर या लक्ष्मी अथवा स्वर्णावती साधना की ओर बढ़िये- इसकी पूरी विधि जानिये और फिर अपने व्यस्त समय में से समय निकालकर इस प्रकार की साधना के माध्यम से दैवी सहायता प्राप्त कीजिये, तभी तो जीवन में सम्पन्नता और ऐश्वर्य प्राप्त हो सकेगा।

(7) कुबेर साधना या स्वर्णावती साधना अपने आप में शीघ्र अनुकूलता प्रदान करने वाले देव है- आप अपने घर में **कुबेर यंत्र** स्थापित कीजिये जो कि मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त हो, और फिर स्फटिक माला से निम्न मंत्र का जप करें-

मंत्रः- ऊं ह्रीं वैश्रवणाय कुबेराय धन धान्य समृद्धिं देहि देहि नमः॥

नित्य दीपक जलाकर शुद्ध सफेद धोती पहनकर पीले आसन पर बैठकर उत्तर की ओर मुंह कर माला मंत्र जप करें। कुल 1250 माला संपन्न होने पर एक पुरश्चरण पूरा होता है। आपको एक पुरश्चरण में ही सफलता मिल सकती है और कभी कभी तीन या चार अथवा कुछ ज्यादा पुरश्चरण करने से सफलता प्राप्त होती ही है। विश्वास, धैर्य, लगन और श्रद्धा से आप इन सात स्वर्णिम सूत्रों के माध्यम से कुछ ही दिनों में अवश्य ही समृद्धता प्राप्त कर सकेंगे।

फरवरी अंक के आकर्षण

- ***आप पांच दिनों में प्रसिद्धि के शिखर पर पहुंच सकते हैं।***
  साधना के बल पर यह संभव है कि प्रसिद्धि आपके चरण छू सकती है, विशेष प्रयोग स्वयं आजमाइये।

- ***वासन्तीय नवरात्रि कैसे मनाये?***
  नवरात्रि पर्व शक्ति साधना का अनुष्ठान पर्व है, शुद्धतम विधान एवं नौ दिन कैसे अनुष्ठान संपन्न करें? पढ़िये, इस विस्तृत लेख में।

- ***पूर्व जन्म कृत पाप दोष निवारण संभव हैं।***
  साधना के द्वारा वे दोष दूर किये जा सकते है, जो आपके इस जीवन में घुन की तरह आपकी शक्ति क्षीण करते हैं।

- ***मोटापा घटाइये, वैज्ञानिक पद्धति से।***
  नवीनतम् शोध के परिणाम योग, आयुर्वेद का अद्भुत संयोग, जिसके द्वारा मात्र तीस दिनों में बिना किसी "साइड इफेक्ट" के इस देह को सुन्दर छरहरा बनाया जा सकती है।

- ***सिद्धि-का पर्व: होलिका पर्व***
  होली के पीछे वैदिक वैज्ञानिक तथ्य क्या है, क्यों इसका तंत्र में इतना महत्व है?

- ***जब किसी भी छठी इन्द्रिय जाग उठती है-***
  ऐसा संभव है कि शक्ति स्फुरण द्वारा छठी इन्द्रिय जाग्रत कर हजारों मील दूर बैठे मित्रों, संबंधियो के साथ घटने वाली घटना, दुर्घटना का आभास हो, अपने लिये आने वाले संकट का पूर्वाभास हो, बैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित रहस्यमय रोचक लेख।

- ***पूर्व जन्म में झांक कर देखें-***
  व्यक्ति का पुनर्जन्म होता है, यह निश्चित रूप से सिद्ध हो चुका है लेकिन क्या आप भी अपने पूर्व जन्म में झांक कर देखना चाहेंगे, कि आप क्या थे? आश्चर्यजनक साधनात्मक ज्ञान, इस लेख में।

इसके अतिरिक्त सभी स्थायी स्तम्भ और महत्वपूर्ण लेख जो केवल पढ़ने के लिये ही नहीं हे, अपितु प्रायोगिक तौर पर स्वयं किये जा सकेत हैं।

अपने सूक्ष्म शरीर से कहीं पर भी यात्रा कीजिये न !

इस शरीर से परे एक और शरीर है—सूक्ष्म शरीर—जो आनन्द तृप्ति एवं परमोच्च सुख देने में समर्थ है, पर अब यह कोई गोपनीय तथ्य नहीं रहा, आप भी अपने सूक्ष्म शरीर से किसी भी स्थान की यात्रा कर सकने में समर्थ हैं।

जिस प्रकार से विज्ञान में नित नई खोज और शोध हो रही है, और विज्ञान निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर है, उसी प्रकार सिद्धाश्रम में भी योगियों के द्वारा ज्ञान के क्षेत्र में निरन्तर खोज हो रही है और नित नये प्रकृति के रहस्य उनके सामने स्पष्ट होते हैं।

अभी तक मानव शरीर को भली प्रकार से समझा

ही नहीं गया है। यह जो हमारा शरीर दिखाई देता है इसके अन्दर और भी कई शरीर हैं। इस खोज में यह पता चला है कि इस स्थूल शरीर में छः और शरीर हैं, जो कि निम्न प्रकार से हैं - (1) स्थूल शरीर (जो दिखाई देता है) (2) भुवः शरीर (3) स्व शरीर (4) मह शरीर (5) जन शरीर (6) तप शरीर (6) सत्य शरीर। इन सातों शरीरों का अपने आप में अलग-अलग महत्त्व है, अलग-अलग क्रियाएं हैं, और अलग-अलग उपयोग है।

अब यह भी स्पष्ट हो गया है कि यदि व्यक्ति चाहे तो यहां पर बैठे बैठे ही अपने सूक्ष्म शरीर को

इस स्थूल शरीर से बाहर निकाल कर उस सूक्ष्म शरीर से संसार के किसी भी भाग में कुछ ही सैकण्डों में यात्रा की जा सकती है, उस स्थान विशेष को देखा जा सकता है, और वापिस इस स्थूल शरीर में प्रवेश किया जा सकता है **(शेष पृष्ट 61 पर)**

कुछ दुर्लभ प्रयोग।

किसी भी इच्छा की पूर्ति - पारद मुद्रिका से

आदमी के मन में असंख्य इच्छाएं होती है, और यह स्वाभाविक है कि वह अपनी इन इच्छाओं की पूर्ति जल्दी से जल्दी करना चाहता है, कुछ इच्छाएं ऐसी भी होती है, जो कि गोपनीय होती है, और वह किसी को बता भी नहीं सकता।

तंत्र में ऐसे कई उपकरण यंत्र साधना सामग्री होती है जिनका उपयोग करने से मनोवांछित सफलता प्राप्त हो जाती है, मगर यह इच्छा स्वाभाविक और अपने स्तर के अनुकूल हो तो ज्यादा उचित रहता है, इसके लिये "मनोकामना पूर्ति पारद मुद्रिका" अत्यधिक सहायक है।

खाली पारे से मुद्रिका का निर्माण नहीं होता, इसको ठोस बनाने के लिये लोह तत्व भी इसमें अनिवार्य होता है, फलस्वरूप वह अंगुली में पहनने लायक होती है, फिर इस पर मनोकामना पूर्ति मंत्र प्रयोग संपन्न कर इसे अनुकूल बनाया जाता है।

इसके लिये किसी भी प्रकार के मंत्र या तंत्र की आवश्यकता नहीं होती, केवल इसे धारण करने से ही मन की इच्छा पूरी करने में सुगमता प्राप्त होती है, पर यदि आप यह इच्छा करें कि मैं ऐसी पारद मुद्रिका पहनते ही करोड़पति बन जाऊंगा या भारत का प्रधानमंत्री बन जाऊंगा तो यह बहुत बड़ी इच्छा है, इसकी अपेक्षा जो हमारे स्तर के अनुकूल इच्छा होती है तो निश्चय ही इसके पहनने से अनुकूल वातावरण बनने लगता है, और कुछ ही दिनों में इच्छा पूर्ति हो जाती है।

वे कफन ही पहनते हैं तांत्रिक साधनाओं के लिये

तंत्र साधना आज के युग की एक अनिवार्य आवश्यकता है। साथ ही इस बात का भी ध्यान रखना चाहिये कि प्रत्येक साधना पद्धति का अपना एक नियम होता है, अपना एक तरीका होता है।

तंत्र का तात्पर्य है कि जिस प्रयोजन के लिये साधना की जा रही है उसका फल निश्चित रूप से मिलें और तुरन्त मिले, इसलिये उग्र साधना के लिये उग्र स्वरूप और उग्र वस्त्र धारण करने आवश्यक होते है।

बंगाल के महिसीपुर इलाके में काली साधना का अत्यधिक प्रचलन है और उसमें भी उग्ररूपा काली साधना में तो वे सिद्धहस्त है। वे एक बार में ही उग्र काली सिद्ध कर देते है इससे उनकी आखों में इतनी अधिक ताकत आ जाती है कि वे किसी भी पुरुष, वह चाहे कितना ही बलिष्ठ हो, उसकी एक बार आंखों में आखें डालकर देखते हुए केवल पांच बार मंत्र जप उच्चारित कर लें तो उसकी आंखों के तेज से वह सामने वाला व्यक्ति बेहोश होकर गिर पड़ता है, और यदि

उस व्यक्ति का पुतला बनाकर उस पर उसका नाम लिखकर यदि उग्र काली सिद्ध व्यक्ति, काली हकीक माला से केवल एक बार इस मंत्र का जप कर लेता है तो निश्चय ही उस व्यक्ति की मृत्यु तक हो जाती है।

मंत्र :— "ॐ क्रीं क्रीं क्रीं उग्रकाल्यै क्रीं क्रीं क्रीं फट्"

मैं संन्यासी जीवन में जब उस क्षेत्र में घूमा तो मैने अनुभव किया कि छोटे-छोटे बालकों को भी उग्र काली सिद्ध है। और वे तत्क्षण प्रभाव बताने में भी समर्थ है।

वे साधना के लिये कफन ही पहनते है। श्मशान में जब गांव का कोई मुर्दा जलाने के लिये लाते है तो डोम उसका कफन हटा देते है और ये लोग कुछ पैसे देकर उस कफन को खरीद लेते है, और साधना काल में उसको धारण कर लेते है। एक उग्र काली सिद्ध व्यक्ति से पूछने पर उसने बताया कि कफन पहनकर उग्र काली साधना करने से आधी से ज्यादा सिद्धि तो प्रारम्भ में ही मिल जाती है।

श्मशान तो आनन्द शाला है, तान्त्रिकों के लिये

मंत्र का तात्पर्य है उस देवी या देवता को प्रसन्न करने के लिये प्रार्थना करना। हाथ जोड़कर निवेदन करना। नम्र भाव से विनीत होना और याचना करना कि मुझे अमुक पदार्थ प्राप्त हो जाय या मैं यह चाहता हूं।

इसके विपरित तंत्र प्रहार है अधिकार है, प्राप्त करने का एक प्रचड तरीका है, जिस देवी या देवता से हम जो चाहते है तंत्र में उसे प्रसन्न नहीं करना पड़ता, प्रार्थना नहीं करनी पड़ती, हाथ नहीं जोड़ने पड़ते, अपितु उस देवता या देवी की आंख में आंख डाल कर अपनी बात को मनमाने के तरीके को तंत्र कहते है। इसलिये तंत्र में वह देवी या देवता बाध्य हो जाता है उस कार्य को करने के लिये; एक प्रकार से साधक हावी हो जाता है उस देवता पर, इसलिए तंत्र का प्रभाव अपने आप में अचूक होता है निश्चित होता है।

जिस प्रकार युद्ध के लिये युद्ध स्थल आवश्यक है, जिस प्रकार पर्वतारोहण के लिये पहाड़ आवश्यक है, जिस प्रकार तैरने के लिये नदी या तालाब आवश्यक है उसी प्रकार तंत्र साधना के लिये श्मशान आवश्यक है, अनिवार्य है।

श्मशान कोई भयानक या तकलीफ दायक स्थान नहीं है। गलत लोगों के मुंह से सुनकर हमने गलत धारणा बनी रखी है कि वहां भूत प्रेत घूमते रहते है, या वहां जाते ही साधक को मार देते है, ये सब कपोल कल्पनाएं है, जबकि श्मशान तो एक शांत और आनन्दप्रद स्थान है, जहां पर बैठने से जीवन की निस्सारता का बोध होता है, जहां शांति मिलती है, जहां मन एकाग्र होता है, जहां चित्त विषय वासनाओं से परे हटकर साधना में एकाग्र हो जाता है, जहां साधना में सम्पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त होने की संभावना होती है।

पर यह अनिवार्य नहीं, साधक चाहे तो अपनी साधना के लिये श्मशान का उपयोग कर सकता है, या श्मशान की राख अपने घर लाकर आसन के नीचे रखकर उस पर बैठकर भी मंत्र जप करे तो वैसा ही परिणाम प्राप्त होता है, जैसा श्मशान में बैठकर साधना करने से, वास्तव में श्मशान तो शरीर की शक्तियों को पुंजीभूत कर पूर्णता तक पहुंचने का आधार है।

अघोरियों के कुछ जाग्रत तंत्र

जिस प्रकार से वैष्णव साधनां, शैव साधना, शाक्त साधना, होती है उसी प्रकार अघोर साधना भी होती है। यह भी साधना का एक तरीका है, और इस प्रकार से साधना करने से अनुकूलता प्राप्त होती है। हकीकत में देखा जाय तो तंत्र का श्रेष्ठतम स्वरूप है, "अघोर साधना।"

मुझे अपने जीवन काल में अघोरियों से कुछ अचूक मंत्र प्राप्त हुए थे जिनकों मैंने अपने जीवन में प्रयोंग किया और मैने यह अनुभव किया कि वास्तव में ये मंत्र तीक्ष्ण तलवार की तरह प्रभावशाली है, और यदि केवल इन मंत्रों का जप संबधित कार्यो के लिये कर दिया जाय तो उसके निश्चित परिणाम प्राप्त होते है कुछ अघोर साधनाओं से संबंधित मंत्र दे रहा हूं।

(1) लक्ष्मी सिद्धि का मंत्र :-"अघोर लक्ष्मी यंत्र को सामने रखकर किसी भी माला से केवल 101 माला मंत्र जप करने से यह सिद्धि प्राप्त हो जाती है। और मनोवांछित सफलता प्राप्त हो जाती है। अनुभव में यह आया है कि यदि इस मंत्र का सवालाख मंत्र जप लिया जाय तो लक्ष्मी के प्रत्यक्ष दर्शन संभव है।

मंत्र :-ऊँ अघोर प्रत्यक्ष लक्ष्मै सिद्धिं देहि देहि फद

(2) रोग निवारण मंत्र :-"अघोर आरोग्य सिद्धि" यंत्र" एक विशिष्ट प्रकार का यंत्र होता है, उसे रोगी की भुजा पर बांधकर एक ग्लास पानी पर निम्न लिखित मंत्र को 108 बार उच्चारण करे और फिर वह पानी थोड़ा थोड़ा करके दिन भर में रोगी को पिलाता रहे तो पहली ही बार में सफलता मिल जाती है, और रोगी रोग मुक्त हो जाता है। यदि वह गंभीर हो तो तीन चार दिन तक करने से काफी सफलता प्राप्त हो जाती है।

मंत्र :-ऊँ क्लीं सर्वरोग निवारणाय क्लीं फट्

(3) सम्मोहन मंत्र :-"अघोर सम्मोहन यंत्र अपने सामने रखकर उसके पास ही उसका फोटो भी रख दें जिस पर वशीकरण किया करनी है, और फिर किसी भी माला से केवल 108 बार उच्चारण कर उस फोटो को यंत्र के साथ ही बांध दें और किसी स्थान पर रख दें तो उसी क्षण से उस पर वशीकरण क्रिया संपन्न हो जाती है और अनुकूल परिणाम प्राप्त हो जाते है।

मंत्र :-ऊँ हलूं अमुक सम्मोहनाय हलूं फट्

जनवरी सन् 1993 में - गुरूधाम दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम व साधनाए

306 कोहाट इन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली

टेलीफोन -011-7182248

1-1-93 शुक्रवार

वर्ष पूजन साधना-इसमें साधक के स्वयं के और उसके समस्त परिवार के लिये एक ऐसी अनूठी साधना जो उन सबके लिये स्वास्थ्य, उन्नति शिक्षा एंव भाग्योदय के लिये विशेष रुप से सहायक है।

7-1-93 गुरूवार

शांकभरी साधना - आकस्मिक धन प्राप्ति एवं पूर्ण लक्ष्मी प्राप्ति की अद्वितीय एवंश्रेष्ठ साधना, जीवन की समस्त समस्याओं के समाधान में सहायक।

14-1-93

मकर सक्रांति साधना - पुष्पदेहा अप्सरा जो कि आर्थिक उन्नति एंव जीवन का समस्त सुख और भोग देने में सहायक, की विशेष साधना। आद्वितीय अवसर।

सिद्धिप्रद महाकालेश्वर साधना शिविर

उज्जैन (म० प्र०)

महाशिवरात्रि पर्व

17, 18, 19 फरवरी 1993

तंत्र के आदि रचयिता भगवान शिव की साधना का पर्व शिवरात्रि है, और शिवरात्रि की तुलना साधनात्मक उद्देश्यों से केवल काल रात्रि अर्थात् दीपावली की रात्रि तथा महारात्रि अर्थात आश्विन नवरात्रि से की जा सकती है। जो साधक शिव की आराधना शिवरात्रि को संपन्न करता है, वह अपने जीवन की प्रत्येक इच्छा को पूर्ण कर सकता है।

महाकालेश्वर उज्जैन

शक्ति पीठ में उज्जैन का स्थान प्रमुख है, और उज्जैन स्थित महाकालेश्वर मंदिर साक्षात शिव का ही स्थान है, जहां शिवलिंग के रूप में मानो साक्षात भगवान शिव विराजमान है, जो साधक शिवरात्रि को उज्जैन में अनुष्ठानं संपन्न करता है, वह अपने जीवन में महापुण्य का भागी होता है, वैदिक ग्रन्थों तक में उज्जैन स्थित महाकालेश्वर का वर्णन आया है।

महान आयोजन

इस महा शिवरात्रि पर्व पर तीन दिन का - दिनांक 17, 18, 19 फरवरी सन् 1993 को एक महान् आयोजन उज्जैन में अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार के ध्वज तले पूज्य गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त जी श्रीमाली के दिव्य निर्देशन में संपन्न होगा, पूज्य गुरुदेव द्वारा इस आयोजन में शिष्यों, साधकों के द्वारा अभूतपूर्व साधनाएं संपन्न की जायेगी जिनमें भाग लेकर साधक धन्य-धन्य हो उठेंगे।

विशेष पूजन

इस तीन दिन के शिविर में सर्व प्रथम तो समस्त भारत के 108 तीर्थों से लाये जल कुंभों का पूजन एवं शोभा यात्रा सम्पन्न होगी, जिससे साधक 108 तीर्थ स्थानों के पुण्य का सौभाग्य प्राप्त कर सकेंगे।

पारद शिवलिंग अनूठा अदभुत एवं पारद के 8 संस्कार संपन्न कर निर्माण किया जा सकता है, और इस आयोजन में परम पूज्य गुरुदेव डॉ. श्रीमाली जी द्वारा 5 किलो के विशिष्ट महाशिवलिंग का, चारों वेदों में वर्णित पूजन विधान के अनुसार चार प्रहर में चार पूजन संपन्न कराये जायेंगे जो जीवन की आध्यात्मिक एवं भौतिक पूर्णता को साकार करने में समर्थ है।

इस महान् शिवलिंग पर यदि कोई शांत मन से एक दृष्टि से एकटक होकर देखे, तो उसे कुछ ही समय में ऐसा लगने लगेगा मानों एक शक्ति का प्रवाह शिवलिंग से प्रवाहमान है, और साधक अपना भूतकाल तो क्या पूर्व जन्म तक देखने में समर्थ हो सकता है।

इस शिवलिंग को उच्चकोटि का साधक सूक्ष्मदर्शी यंत्र से देखे तो इसके चारों पार्श्व में विभिन्न स्तोत्र अंकित किये हुए है। उत्तर पार्श्व में श्रीसूक्त, पश्चिम में इन्द्रकृत स्वर्णावती स्तोत्र, दक्षिण पार्श्व में रावण कृत तांत्रोक्त कुबेर लक्ष्मी स्तोत्र एवं पूर्व पार्श्व में स्वर्णदेहा लक्ष्मी सिद्धि प्रद स्तोत्र अंकित है।

शिविर में भाग लेना सौभाग्य

जब जब जीवन के पुण्य उदय होते है तब तब ऐसे आयोजन संपन्न होते है, और ऐसे आयोजनों में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त होता है। इस साधना शिविर में ऐसे शिवलिंग की पूजा साधक द्वारा स्वयं हो और एक से बढ़कर एक साधनाएं संपन्न करें, यह आप सबके लिये नये जीवन निर्माण के समान है।

समय चक्र की गति किसी के लिये नहीं रुकती, आज सिद्धाश्रम साधक परिवार में इस आयोजन को संपन्न करने का जिम्मा उठाया है तो सभी पत्रिका सदस्यों से आग्रह है कि वे अपने पूरे परिवार सहित इसमें भाग लेकर भौतिक एवं आध्यात्मिक पूर्णता की ओर अग्रसर हों।

इस शिविर में सभी साधनात्मक सामग्री एवं व्यवस्था हेतु शुल्क 660/- रुपये रखा गया है।

आपके लिए उचित व्यवस्था हो इस हेतु आप पहले से पत्र लिखकर सिद्धाश्रम साधक परिवार केन्द्रीय कार्यालय जोधपुर को सूचना अवश्य दे दें।

इस आयोजन के संबंध में विशेष जानकारी हेतु पत्र नीचे लिखे पते पर भेंजे, आपको सहयोग देकर हमें प्रसन्नता होगी।

हमें आवश्यकता है ऐसे समर्पित शिष्यों, साधकों की जो इस विशेष आयोजन हेतु, तन, मन, धन से अधिक से अधिक सहयोग दें और भारतीय संस्कृति के पुनः उत्थान में सहयोग के भागी बनकर मानवता को नया अमृतपथ दिखा सकें

विनीत

अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार

प्रधान कार्यालय
द्वारा - मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग
हाई कोर्ट कालोनी
जोधपुर-342001
फोन नं. 0291-32209

दिल्ली कार्यालय
306, कोहाट एन्क्लेव
पीतमपुरा, नई दिल्ली-34
फोन नं. 011-7182248

शेष पृष्ठ 12 का

आत्म साधनाः- ऊपर मैंने बताया कि कोई भी व्यक्ति साधना के माध्यम से जो न दिखाई दे उस आभा मंडल को भी देख सकता है, और उसके माध्यम से उसके बारे में सब कुछ जान सकता है। इस प्रकार की साधना को "**आत्म साधना**" कहा गया है ।

इसके लिये "**आत्म महायंत्र**" की जरूरत पड़ती है, जो कि ताम्र पत्र पर अंकित हो तथा मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त हो इसे अपने सामने स्थापित कर दे और फिर प्रात:काल के समय इसके मध्य में एक टक दृष्टि डालते हुए आत्म मंत्र का मंद मंद उच्चारण करें ।

- आत्म मंत्र -

ॐ ऐं ब्रह्माण्ड चक्षुर्तेजसे नमः

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व मन में नकारात्मक विचार हटा दीजिए किसी प्रकार का भय, झिझक, संदेह, निराशा और घबराहट दूर करके ही इस यंत्र को देखने की क्रिया कीजिये, आप इस बात की चिन्ता न करें कि गलती हो रही है या नहीं, जब आप अपने आप को भुला कर उस यंत्र में खो जायेंगे तो स्वत: अनुकूलता प्राप्त होने लगेगी।

लगभग 15 दिनों के बाद आप किसी दूसरे व्यक्ति को सामान्य दृष्टि से उसके चेहरे की ओर देखिये, मगर यह ध्यान रखिये कि उसे घूरना या आंखों में आखें डालकर ताकना ठीक नहीं है । केवल आप उस सामने वाले पुरूष या स्त्री का सिर देखिये और फिर धीरे-धीरे नीचे उतरते हुए उसकी गर्दन को देखिये, यह परिधि अर्थात् सिर से गर्दन तक का क्षेत्र ही आभा मंडल की परिधि है । इसके बाद आप उसके सिर के ऊपर लगभग दो से सात इंच तक कई बार देखिये उस वायु क्षेत्र में आपको विविध रंग से युक्त एक प्रभामंडल दिखाई देने लगेगा ।

धीरे - धीरे आप उस यंत्र पर अभ्यास करते हुए सामाजिक जीवन में भी किसी भी व्यक्ति पर ऐसा प्रयोग करते रहिये । जब आप किसी व्यक्ति के सामान्य आभा मंडल को देख सकने की क्षमता प्राप्त कर लेंगे तो उस यंत्र पर की गई साधना के फल स्वरूप उसका भूत काल अथवा भविष्य काल अपने आप स्पष्ट होने लगेगा ।

पहले-पहले आप को हल्का सा आभामंडल दिखाई देगा पर, ज्यों-ज्यों आप अभ्यास करेंगे त्यों त्यों किसी भी व्यक्ति का पूर्ण आभा मंडल देख सकेंगे साथ ही साथ उस आभा मंडल के आकार, निरन्तर उस में होने वाले परिवर्तन, आभा मंडल के रूप, रंग भिन्नता और उसकी गतिविधियों से परिचित हो सकेंगे ।

आभा मंडल को गहरा और उच्च बनाकर व्यक्ति इस जमीन से ऊपर उठ सकता है अपने स्थूल शरीर से साथ साथ एक ही क्षण में सैकड़ों-हजारों मील दूर जा सकता है । किसी भी घटना को देख सकता है, और वह अपने आप में उच्च कोटि का व्यक्तित्व बन सकता है ।

शेष पृष्ठ 14 का

तत्पश्चात् सफेद हकीक माला से निम्न मंत्र की ३ माला मंत्र जप करनी चाहिये। यह मंत्र अपने आप में प्रभावयुक्त है, और इसमें जहां "अमुक" शब्द आया है, उस शब्द की जगह उस स्त्री या पुरूष का नाम लेना चाहिये, जिसे आप अपने वश में करना चाहते हैं ।

वशीकरण मंत्र

ॐ क्लौं अमुकं वशमानाय क्लौं फट् ॥

जब तीन माला पूरी हो जाये तो एक बार फिर आंखें बंद कर उसका बिम्ब सामने लाकर चिन्तन करें कि निश्चय ही यह मेरे वश मे हो जाय और हमेशा मेरी आज्ञा का पालन करे ।

फिर इस यंत्र और माला को दूसरे दिन सुबह किसी मंदिर में रख दें या नदी अथवा तालाब में विसर्जित कर दें, यदि ऐसा संभव न हो तो जहां चार रास्ते मिलते है वहां पर रख दें, परन्तु विसर्जित करने या रखने से पूर्व यंत्र पर सिन्दूर से जो नाम लिखे हैं, उसे अंगुली से मिटाकर उस सिन्दूर को अपने ललाट पर लगा दें । इसी प्रकार माला को भी विसर्जित कर देनी चाहिये अथवा यंत्र और माला दोनो को किसी सुनसान स्थान पर जमीन में गड्ढा खोदकर गाड़ देना चाहिये ।

इसके दूसरे दिन से ही आपको अनुकूल परिणाम प्राप्त होने लगेंगे आपको प्रयत्न यह करना है कि किसी तरीके से उसके सामने जायें जिससे कि वह आपको देख सके, यदि संभव हो तो आप उससे बात चीत करने का प्रयत्न करें, और यदि वह किसी दूसरे स्थान पर हो कोई चिन्ता की बात नहीं, केवल चिन्तन करने से ही उसी दिन से अनुकूलता अनुभव होने लगेगी ।

ऐसा हो सकता है कि दूसरे दिन ही अनुकूल परिणाम प्राप्त हो जाय और यह भी संभव है कि दो चार दिन में धीरे-धीरे उसकी तरफ से अनुकूलता प्राप्त हो, परन्तु यह प्रयोग अपने आप में महत्वपूर्ण है, और इससे मनोवांछित सफलता अनुभव होती ही है ।

तंत्र कोई दूषित या गलत क्रिया नहीं, यह तो ढोंगी या पाखण्डी लोगों के हाथों में पड़कर बदनाम हो गया है , उन्होने अपने स्वार्थ की वजह से तंत्र में शराब, स्त्री, या गांजा आदि को आवश्यक तत्त्व बना दिया है, जबकि तंत्र में इन वस्तुओं की उपयोगिता होती ही नहीं। ●

वशीकरण किसी एक व्यक्ति के ऊपर किया जा सकता है या सामने उपस्थित लम्बी-चौड़ी भीड़ अथवा उपस्थित जन समुदाय पर भी यह प्रयोग किया जा सकता है, जिसके फलस्वरूप सामने चाहे हजारों-लाखों की भीड़ हो वशीकरण के बाद वे प्रमुख व्यक्ति के वश में होकर वह अपने भाषण में जो भी कहेगा उसका पालन भी करेगे । कथावाचक अपने श्रोताओं पर, गुरु उपस्थित शिष्यों के समुदाय पर, नेता सामने बैठे जन समुदाय पर ऐसा प्रयोग कर एक बारगी ही उन सब को अपने वश में कर सफलता प्राप्त कर सकता है ।

शेष पृष्ठ 16 का

पुनर्जन्म साधनाः-

यह साधना किसी भी अमावस्या की रात्रि से प्रारम्भ की जा सकती है । अमावस्या की रात्रि को साधक को चाहिये कि वह स्नान कर लाल धोती धारण कर लें, इसके अतिरिक्त शरीर पर कोई वस्त्र न हो । यदि सर्दी का समय हो तो लाल कंबल ओढ़ सकते है ।

सामने घी का दीपक लगा दें, यह दीपक तब तक अखण्ड जलता रहेगा जब तक कि आपकी साधना पूरी नहीं हो पाती । इसमें लगभग सवा लाख मंत्र जप करना होता है, और यह मंत्र जप रात्रि में ही संपन्न होता है । दिन को आप चाहें तो अपना व्यापार अथवा नौकरी कर सकते हैं, पर दीपक चौबीसों घंटे बराबर जलता रहेगा, जब तक कि आपसे सवालाख मंत्र जप पूर्ण न हो जायें। इस प्रकार से प्रयोग को एक पुरश्चरण कहते है । कई बार एक पुरश्चरण में ही सफलता मिल जाती है, तो कई बार एक से ज्यादा पुरश्चरण करने पर ही सफलता अनुभव होती है ।

लाल आसन पर उत्तर या पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जायं और सामने किसी पात्र में चैतन्य "पुनर्जन्म यंत्र" स्थापित कर दें । यह यंत्र कागज पर सिन्दूर से विशेष मुहूर्त में अंकित हो अथवा ताम्रपत्र पर निर्मित हो, जिस पर प्राणश्चेतना संपन्न की हुई हो ।

यंत्र को स्थापित करने के बाद उसे जल से धोकर पोंछ कर अलग पात्र में स्थापित कर दें और उस पर सिन्दूर की 10 बिन्दियां लगावें जो दसों दिशाओं की प्रतीक होती हैं, एक बिन्दी मध्य में लगावें जो ब्रह्माण्ड की प्रतीक कही जाती है, फिर हकीक माला से मंत्र जप संपन्न करना चाहिये पर इस बात का ध्यान रहे कि वह माला पहले किसी अन्य प्रयोग में काम में न ली हुई हो, और इसका प्रत्येक मनका सिद्ध तथा चैतन्य हो इसके बाद इस माला से निम्न मंत्र का जप करें ।

पुनर्जन्म मंत्र

॥ ॐ ह्लौं ह्रीं गत जीवनं दर्शय दर्शय ह्रीं ह्लौं फट् ॥

मंत्र जप करते समय आपकी दृष्टि बराबर पुनर्जन्म यंत्र पर स्थिर रहे और मात्र होठों से धीरे-धीरे उपरोक्त मंत्र का जप करते रहें । इसमें नित्य आप कितनी मालाएं करें इसका कोई विधान नही है, पर कुल मिलाकर 1250 मालाएं संपन्न होने पर ही एक पुरश्चरण पूरा होता है । और यह मंत्र जप रात्रि में 10 बजे से चार बजे के बीच संपन्न होना चाहिये, चाहे आप एक या दो घंटे मंत्र जाप करें, या ज्यादा समय के लिये मंत्र जप संपन्न करें ।

जब मंत्र जप पूरा सवालाख हो जाता है तो स्वतः अपने पिछले जीवन के बारे में चिन्तन करते समय आपको विशेष स्थान, उसका नाम आदि आंखों के सामने दिखाई देने लगेगा । इसी प्रकार यह भी अनुभव होगा कि उस गांव, शहर में अमुक नाम की पत्नी है, पुत्र है, और यह भी ज्ञान हो जायेगा कि आप कितने वर्ष की आयु में किस प्रकार से कहां पर आपकी मृत्यु हुई थी ।

जब एक पुरश्चरण पूरा हो जाय तब उस यंत्र एवं माला को किसी लाल कपड़े में लपेटकर पूजा स्थान में ही रख देना चाहिये और यदि संभव हो तो नित्य एक माला मंत्र जप कर लेना चाहिये, जिससे कि साधना में चेतना बनी रह सके ?

आपको जो बिम्ब या दृश्य आंखों के सामने स्पष्ट हुए हैं उस स्थान विशेष पर जाकर अनुभव कर सकते हैं और देख सकते हैं कि यह साधना अपने पिछले जीवन को देखने में कितनी अधिक समर्थ, सशक्त और सफल है। ●

कई बार व्यक्ति को ईश्वर पर क्रोध भी आता है, और उसके न्याय पर संदेह होने लगता है कि कोई व्यक्ति जीवन भर दान, पुण्य भगवान् की सेवा पूजा करता हुआ सात्विक जीवन व्यतीत करता है फिर भी वह गरीब और पैसे-पैसे के लिये मोहताज रहता है, जबकि दूसरी ओर बदमाश, ठग हत्यारे, लूट खसोट करने वाले, झूठे और मक्कार व्यक्ति समाज में सम्मान नीय कहे जाते हैं वे भूलकर भी भगवान् की पूजा या साधना नहीं करते फिर भी उनके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं होता, तब हमें ईश्वर के न्याय पर संदेह होने लगता है । और इसका कोई समाधान दिखाई नहीं देता ।

पर इन सारे प्रश्नों के उत्तर उनके पूर्वजन्म में विद्यमान है उस जन्म को और उस जन्म के क्रिया कलाप देखने के बाद ही इन प्रश्नों का उत्तर मिल जाता है कि क्यों पति-पत्नी में परस्पर मतभेद बना रहता है, क्योंकि बाप के कंधे पर बेटे की लाश श्मशान तक पहुंचती है, क्यों व्यक्ति परिश्रम करने के बावजूद भी गरीब बना रहता है ? नहीं समझ में आने वाली बीमारी का रहस्य क्या है, क्यों इतना दुःख भुगतना पड़ता है ? जब तक हम पिछला जीवन नहीं देख लेते तब तक इन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त नहीं हो सकते ।

शेष पृष्ठ 22 का

हैं, और जीवन में वह सब कुछ प्राप्त कर सकते है जो अब तक आपको प्राप्त नहीं हुआ है, जिसकी वजह से अब तक आपका जीवन अधूरा है, जिसकी वजह से आपका यह जीवन परेशानियों एवं चिन्ताओं से घिरा हुआ है ।

तंत्र प्रतीक

प्रत्येक कार्य विज्ञान या ज्ञान के अपने नियम होते हैं, अपना तरीका होता है, जिसके माध्यम से ही उस ज्ञान या विज्ञान की पूर्णता को प्राप्त कर सकते हैं । भौतिक विज्ञान के अपने उपकरण होते हैं, और रसायन विज्ञान के अपने। इन उपकरणों के माध्यम से ही भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में प्रयोग और परीक्षण किये जा सकते हैं, जिससे कि संबंधित सफलता प्राप्त हो सके । ठीक इसी प्रकार तंत्र में सिद्धि और सफलता के लिये भी कुछ प्रतीकों की आवश्यकता होती है, जिनको समझना और प्राप्त करना आवश्यक होता है । इन प्रतीकों के माध्यम से ही तंत्र को पूर्ण रूप से अपने अन्दर समाहित किया जा सकता हैं, और सफलता पाई जा सकती है।

ये प्रतीक किसी लाल कपड़ों पर विशिष्ट चावलों की ढ़ेरी से भी बनाये जा सकते है, अथवा कागज पर अष्टगन्ध से अंकित किये जा सकते हैं, या फिर तांबे के पत्र पर अंकित किये हुए प्राप्त किये जा सकते है । अलग-अलग कार्यों या तंत्र साधनाओं में इन प्रतीकों का उपयोग होता है । तांबे के पत्र पर अंकित ये प्रतीक स्थायी रूप से अपने पास रखे जा सकते हैं, और काफी समय तक इनका उपयोग किया जा सकता है, पर यदि ताम्र पत्र पर ये प्रतीक अंकित है तो यह आवश्यक है कि वह ताम्र-पत्र मंत्र सिद्ध हो, प्राण प्रतिष्ठायुक्त हो, और चैतन्य हो तभी वह ज्यादा उपयोगी हो सकता है ।

ये प्रतीक हैं - (1) ब्रह्माण्ड तंत्र प्रतीक (2) कालदण्ड प्रतीक (3) सिद्ध प्रतीक (4) अप्सरा प्रतीक तंत्र (5) व्योमचार प्रतीक (6) निर्बीज तंत्र प्रतीक ।

किसी साधना में इन छहों प्रकार के प्रतीकों का उपयोग होता है, तो किसी में एक या दो प्रतीकों का । पर ये सभी प्रतीक अपने आप में उपयोगी है, और घर में रखने लायक है ।

मंत्रः-

मंत्र अपने आप में कार्य को सिद्धि देने वाले वाहक प्रतीक है, जिसके माध्यम से कार्य सम्पन्न होता है । विशिष्ट शब्दों के संगुंफन से मंत्रों का निर्माण होता है, और हमारे पूर्वजों, ऋषियों, और योगियों ने सैकड़ों-हजारों मंत्रों की रचना की, जो कई हस्तलिखित पुस्तकों और ग्रन्थों में सुरक्षित है, आवश्यकता है इन मंत्रों को शुद्ध रूप से प्रयोग करने की ।

यों तो अच्छा हथियार भी गलत और अनाड़ी व्यक्ति के हाथ में पड़कर बोथरा सा हो जाता है, ठीक इसी प्रकार आलोचक और व्यर्थ में तर्क करने वाले व्यक्ति के मुंह से भी मंत्र का प्रभाव क्षीण और निष्प्रभाव युक्त बन जाता है। आवश्यकता है मंत्र को समझने की, शुद्ध उच्चारण करने की, और इससे संबंधित जानकार या अपने गुरू से मंत्र के उच्चारण को समझने की । यों यदि गुरू नहीं भी मिले तब भी मंत्र का उच्चारण भली प्रकार से करके अपने कार्यों को संपन्न करने में सफलता पायी जा सकती है ।

और यदि मंत्र के साथ तंत्र का संबंध हो जाय तो इससे बड़ी और बात क्या हो सकती है। इस प्रकार के प्रयोग से निश्चय ही कार्य में सफलता प्राप्त होती ही है । जीवन में ऐसा कोई कार्य है ही नहीं, जिसका समाधान मंत्र और तंत्र के सम्मिलित प्रयोग से सम्पन्न न हो । मैंने अपने जीवन में कठिन से कठिन और असंभव से असंभव कार्यों को मंत्र और तंत्र के सहयोग से संभव किया है, और अपने जीवन में पूर्णतः सफलता प्राप्त की है ।

हो सकता है कि आपको इस प्रकार की साधना में पहली ही बार में सफलता प्राप्त न हो, पर यदि आप में धैर्य है, लगन है, विश्वास है, श्रद्धा है और बार-बार करके सफलता प्राप्त करने की आकांक्षा है तो निश्चय ही आप किसी भी तांत्रिक या मांत्रिक प्रयोग में सफलता प्राप्त कर सकते हैं, किसी को इस प्रकार के प्रयोग में पहली बार में ही सफलता प्राप्त हो जाती है, तो किसी को चार या पांच बार बराबर प्रयोग करने से, और किसी को बीस या पच्चीस बार प्रयोग संपन्न करने से, यह तो उसके विवेक, श्रद्धा और विश्वास पर संभव है ।

ब्रह्माण्ड में गूंजते हुए मंत्रः-

ब्रह्माण्ड अपने आप मे चैतन्य विस्तार है, मृत्युलोक या हमारा संसार तो उस ब्रह्माण्ड का छोटा सा भाग है, और मानव स्वयं उस ब्रह्माण्ड का ही एक अंश है, और छोटा सा अंश पूरे ब्रह्माण्ड को नाप सकता है, देख सकता है, समझ सकता है। यही तो मानव की विशेषता है, और इसी में साधक की सफलता है ।

जीवन की सफलता इसी में है कि हम सामान्य मनुष्य या साधारण साधक होकर भी उस ब्रह्माण्ड के रहस्यों को समझें, ब्रह्माण्ड का एक भाग बनें और ब्रह्माण्ड में निहित अन्य लोकों की यात्रा कर उसके रहस्यों को समझें, और यह सब कुछ संभव है, यह विद्या आसान और सरल है, कुछ विशेष प्रयोगों से ऐसा संभव हो सकता है ।

ध्वनि कभी भी समाप्त नहीं होती, एक बार हम जिस शब्द का उच्चारण कर लेते है वह पूरे ब्रह्माण्ड में फैल जाता है और फिर कभी उस ध्वनि का लोप नहीं होता, वह समाप्त नहीं होती, अपितु ब्रह्माण्ड में वह ध्वनि फैली हुई होती है, और हजारों-हजारों वर्षो तक बनी रहती है।

इसका मतलब यह हुआ कि हमारे पूर्वजों, ऋषियों सिद्धों और तपस्वियों ने जिन मंत्रों का उच्चारण किया, वे मंत्र आज भी ब्रह्माण्ड में गूंज रहे है, श्रीकृष्ण ने महाभारत में जिस गीता का उच्चारण किया, वह गीता का उच्चारण भी ब्रह्माण्ड में निहित है, और यदि हम किसी प्रकार से उस विद्या या साधना विधि को प्राप्त कर लें जिसके माध्यम से ब्रह्माण्ड में गूंजती हुई ध्वनियों को पकड़ सकें तो पुनः श्रीकृष्ण के मुंह से निकली हुई गीता को उन्हीं के मुंह से सुन सकते हैं । वशिष्ठ और विश्वामित्र के मुंह से निकले हुए मंत्रों को सुन सकते है, और ऋग्वेद तथा यजुर्वेद के मंत्रों को भी अपने कानों से सुनकर अपने शरीर में अपने प्राणों में आत्मसात कर सकते हैं ।

यह सब कुछ संभव है, और आप भी चाहें तो इस प्रयोगों को संपन्न कर उन मंत्रों को प्राप्त कर सकते हैं जो मूलध्वनि में सुरक्षित है, जो ब्रह्माण्ड में गुंजरित है, जो आपके लिये देवमंत्र है, आपके जीवन को पूर्ण रूप से ऊंचा उठाने में समर्थ और सफल है । इसे ब्रह्माण्ड प्रयोग "या "ब्रह्माण्ड तांत्रिक साधना" कही जाती है ।

तंत्र कोई दूषित या गलत क्रिया नहीं, यह तो ढोंगी या पाखण्डी लोगों के हाथों में पड़कर बदनाम हो गया है, उन्होंने अपने स्वार्थ की वजह से तंत्र में शराब, स्त्री, या गांजा आदि को आवश्यक तत्व बना दिया है, जबकि तंत्र में इन वस्तुओं की उपयोगिता होती ही नहीं। पंच मकार अर्थात् शराब, मांस मछली सम्भोग और क्रियाएं, तंत्र में अनिवार्य या आवश्यक नहीं है, तंत्र तो किसी भी साधना का श्रेष्ठतम विधान है ।

ब्रह्माण्ड तंत्र साधनाः-

इसके लिये दो तंत्रों की आवश्यकता होती है- (1) ब्रह्माण्ड प्रतीक और (2) ब्रह्माण्ड सिद्धि यंत्र ।

प्रातःकाल लगभग चार बजे उठकर स्नान कर शुद्ध सफेद धोती पहनकर सूती आसन पर उत्तर की ओर मुंह

तांत्रिक कोई अजूबा नहीं होता, या उसके शरीर में कोई परिवर्तन नहीं हो जाता, वह भी एक सामान्य व्यक्तित्व बना रहता है । जिस प्रकार ग्रेजुएट हो जाने पर शारीरिक रचना या चेहरे पर कोई परिवर्तन नहीं आता उसी प्रकार तंत्र साधना करने वाले के शरीर या चेहरे पर कोई विशेष परिवर्तन दिखाई नहीं देता, और न ही उसमें सिन्दूर का टीका लगाने, लाल-लाल आंखें करने, चरस या गांजा पीने या गालियां बकने की जरूरत होती है । सही अर्थों में तो तंत्र मनुष्य को भली प्रकार से मनुष्य बनाने की पद्धति है ।

कर बैठ जाएं। और सामने शुद्ध घृत का दीपक लगा लें तथा किसी एक थाली या पात्र में इन दोनों यंत्रों को रख दें अथवा चावलों से इन यंत्रों को भूमि पर बना लें या कागज पर अष्टगन्ध से इन दोनों यंत्रों का निर्माण कर लें ।

फिर जल से इन यंत्रों को धोकर थाली साफ कर उसमें इन यंत्रों को पुन: रख दें और लगभग पांच मिनिट तक बिना पलक झपकाये इन दोनों यंत्रों पर दृष्टि स्थिर कर लें, और होठों से निम्न मंत्र का अत्यन्त धीमें स्वर में उच्चारण करते रहें ।

मंत्रः- ऊँ ऐं ब्रं ब्रह्माण्ड सिद्धिं ब्रं ऐं फट् ॥

लगभग 10 मिनट तक ऐसा करने के बाद आंख बंद कर शांत चित्त से बैठ जायं, और लगभग 20 से 30 मिनिट तक बिना हिले डुले शांत बैठे रहें । धीरे-धीरे आपको अस्पष्ट सी आवाजें सुनाई देगी । हो सकता है वे आवाजें प्रथम दिन या पांच सात दिनों के बाद सुनाई दें, पर यह क्रम नित्य रखना चाहिये ।

पहले अस्पष्ट सी आवाजें सुनाई देंगी, फिर धीरे-धीरे ये आवाजें स्पष्ट भी सुनाई देने लगेंगी, और फिर किसी एक दिन आंखों के सामने नीली ज्योति सी अनुभव होगी, और सुनाई देगा वह मंत्र जो आपके लिये आवश्यक है । उन ऋषियों के मुंह से जो स्त्रष्टा और मंत्र द्रष्टा रहे हैं, वह मंत्र जो आपके जीवन का "आधार मंत्र" होगा, वह मंत्र जो आपके पूरे जीवन को परिवर्तित करने में समर्थ होगा, वह मंत्र जो आपके जीवन को पूर्णता तक पहुंचाने में सहायक होगा । ●

काश! जिन्दगी टेप रिकार्डर की तरह होती, तो हम झट से उसे 'रिवाइन्ड' कर लेते, और बीती हुई मधुर स्मृतियों में खो सकते।

रंक से राजा बनाने वाला पत्थर

पत्थरों के चमत्कार पिछले कई हजार वर्षो से सुनते आएं है । इन पत्थरों या रत्नों में सूर्य का रत्न माणिक्य, बुध का रत्न पन्ना तथा शनि के रत्न नीलम का विशेष महत्व है, और इन पत्थरों को धारण करने से पूर्व किसी अच्छे ज्योतिषी से परामर्श कर देना चाहिये ।

इसके अलावा भी सैकड़ों प्रकार के उपरत्न होते हैं जिनका प्रयोग अपने आप में महत्वपूर्ण है । इन उपरत्नों में एक "सूर्य कांत उपरत्न" भी है जो देखने में ऐसा लगता है मानों उस पर छोटे-छोटे दाने उभरे हों और वह थोड़ा बहुत चमकता भी हो।

यह रत्न कोई ज्यादा महंगा या मूल्यवान् नहीं है, परन्तु इसकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैली हुई है । इस पत्थर की यह विशेषता है कि या तो यह कोई प्रभाव दिखाता ही नहीं, पर यदि किसी को यह रास आ जाता है तो उसे रंक से राजा बनाने की सामर्थ्य रखता है, वास्तव में ही यह पत्थर अपने आप में ही चमत्कारिक है ।

मैंने अपने जीवन में भी अनुभव किया है कि इस पत्थर में वास्तव में ही कोई ऐसी शक्ति है जो अत्यधिक तेजस्वी और चमत्कारी है । इसे धारण करने के लिये किसी मुहूर्त या दिन की आवश्यकता नहीं होती और न इसके वजन पर विचार करना आवश्यक होता है, इसे किसी भी धातु में जड़वा कर धारण किया जा सकता है ।

पहिनने के कुछ ही दिनों बाद यह अपना चमत्कार दिखाने लगता है इस पत्थर को धारण करने से हानि तो बिलकुल ही नहीं होती, यह हो सकता है कि प्रभाव न दिखाई दे, पर जैसे कि मैंने ऊपर बताया यदि किसी को रास आ जाता है तो वह व्यक्ति चमत्कारिक ढ़ंग से उन्नति की ओर उठने लगता है और एक मामूली व्यक्ति भी लखपति या करोड़ पति आकस्मिक धन प्राप्ति से बन जाता है । यह कोई ज्यादा मूल्यवान् तो होता नहीं है, फिर इसका परीक्षण कर लेने में हर्ज ही क्या है ?

शेष पृष्ठ 32 का

तो रस गंधक मोरस पारा, जिन विच दोजे नाम सहारा
नाग मार मारले सूआ, कहे मच्छन्द कंचन हुआ।

दो राता दोय पीबला चंदा वर्णा चार।
चपट रांदी खीचड़ी सोना होय हजार।
पृथिव्य दुर्लभः श्रेष्ठ रसः जानाति यो नरः।
सिद्धि लक्ष्मीं पदे नित्यं अमृत्युं वापि परंभवेत्॥

संसार में ऐसा व्यक्ति दर्शनीय माना जाता है जो पारद संस्कार में सिद्धि प्राप्त करें, और गुरु चरणों में बैठ कर पूर्ण रस संस्कार ज्ञान प्राप्त करे, उसे कदम कदम पर सिद्धियां प्राप्त होती हैं, लक्ष्मी वरमाला उसके गले में डालने के लिए उद्यत रहती है, वह चिरयौवन वान सुखी अजर अमर हो जाता है।

अहमदाबाद में भी एक प्रसिद्ध वैद्य रामजी भाई पटेल पिछले दिनों काफी चर्चित थे उन्होंने वैद्यक पर कई ग्रन्थ भी लिखें है, उन्हें पारद सिद्ध था और अपने जीवन में कई बार पारे से स्वर्ण बनाकर हजारों लोगों की उपस्थिति में दिखाया था।

सन् 1945 में पारद विज्ञान के क्षेत्र में सिद्धनाथ का बहुत बड़ा नाम था वे मूलतः जैन थे और आबू की पहाड़ियों में अधिकतर विचरण करते रहें थे। इन्हें रसेश्वरी सिद्ध थी और ये पारे और धतूरे को मिलाकर उसके रस से तांबे पर प्रयोग कर उस तांबे को स्वर्ण में परिवर्तित कर देते थे।

अप्रैल सन् 1975 में गुजरात में तत्कालीन राजस्व मंत्री के सामने प्रेमजी भाई ठाकुर ने पारद से स्वर्ण बनाकर यह सिद्ध कर दिया था कि आज भी पारदविज्ञान अपने आप में पूर्ण है, और इसके माध्यम से स्वर्ण बनाया जा सकता है।

परम पूज्य गुरुदेव डॉ. श्रीमाली जी की पुस्तक ''स्वर्णतंत्रम्'' भी अपने आप में प्रामाणिक पुस्तक है जिसमें स्वर्ण बनाने की कई विधियां प्रचलित हैं।

स्वर्ण निर्माण: यों तो पारे से स्वर्ण निर्माण की कई विधियां और प्रयोग प्रचलित हैं पर स्थान की न्यूनता की वजह से उन सब प्रयोगों को यहां देना संभव नहीं है। मैं एक दो उदाहरण दे रहा हूं।

प्रयोग एक: **लेहु मंगाय सरी चौराई । धूरे ऊपर होत बुवाई॥**

सौ रंधिसके हांडी मांय । ऐसे चरवा देई चढ़ाय॥
काटि चौराई नीर पखारि । दे धनाव ऊपर पल चारि॥
पारो मुह दे लेहु पचाय । चारि पहर ज्यों आगि बराय॥
जो शुभ करम होय कवि कहे । दुरति निकसि के हांडी रहे॥
इह विधि काज करी है तेही । कंचन होत खरो कवि केहि॥

प्रयोग दो:

ताकत ताली मूलक अर्की
बिच्छू-बिछवी ढीकण कर्की।
नाग-नागनी मुंह सुत खाय।
गोरख कहे स्वर्ण होई जाय॥

किसी भी रसाचार्य द्वारा इन प्रयोगों को समझा जा सकता है, आवश्यकता है लगनशील , योग्य व्यक्तियों की जो इस क्षेत्र में कार्य करने के लिये प्रयत्नशील हों, और यदि वे प्रयत्न करें तो अवश्य ही पारे से स्वर्ण बनाकर पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

फिर अपने किसी पात्र में ताम्रपत्र पर अंकित मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त "**पुत्रदा यंत्र**" पर दूध मिला हुआ जल चढ़ावें फिर स्वच्छ पानी से धो लें और पोंछ लें। तत्पश्चात् उस पर केशर से तिलक करें, और सामने सुगन्धित अगरबत्ती तथा दीपक लगा दें फिर स्फटिक माला से निम्न लिखित मंत्र जप करें, नित्य एक माला मंत्र जप तो अनिवार्य ही है। रविवार के दिन पांच माला मंत्र जप करें। इस प्रकार लगभग चार महीने करें, पूरी पूजा तो खाली रविवार को ही करें। मंत्र जप नित्य एक माला होनी जरूरी है। यह मंत्र जप पुत्रदा यंत्र के सामने ही होना चाहिये।

पुत्रदा मंत्र

ॐ शं कुं पुत्र देहि देहि शाम्ब सदाशिवाय नमः

जब गर्भ धारण हो जाय तब भी इस मंत्र को अपनी पूजा स्थान में रहने दें और यदि संभव हो तो नित्य सामान्य पूजा और एक माला मंत्र जप करें। निश्चिय ही यह "**पुत्रदा यंत्र**" अपने आप में प्रभावपूर्ण और अनुकूल होता है। इसमें एक बात का ध्यान रखें कि कई बार कुछ कारणों से गर्भ धारण में विलम्ब हो जाता है तो विचलित नहीं हो और धैर्य पूर्वक मंत्र जप करती रहें। रजस्वला समय में मंत्र जप पांच दिनों तक नहीं करना चाहिये।

वास्तव में ही पुत्रदा तंत्र अपने आप में ही प्रभावपूर्ण और हमेशा हमेशा के लिये बांझपन के श्राप को पूर्णतः मिटाने में सहायक है।

जनवरी सन् 1993 के व्रत, पर्व, त्योहार

दिनांक	पर्व
1 जनवरी 93	नववर्ष शुभारम्भ
1 जनवरी 93	अन्नपूर्णा जयन्ती
4 जनवरी 93	पुत्रदा एकादशी
8 जनवरी 93	शांकभरी जयन्ती
11 जनवरी 93	संकष्टी गणेश चतुर्थि
15 जनवरी 93	काल भैरव जयंती
18 जनवरी 93	पट्तिला एकादशी
20 जनवरी 93	हिमगिरी सिद्धिजयन्ती
21 जनवरी 93	श्मशान काली जयन्ती
26 जनवरी 93	विनायक गणेश चतुर्थी
27 जनवरी 93	माघ मास गुरु पूजन सिहि पर्व
28 जनवरी 93	बसंत पंचमी, श्री पंचमी
28 जनवरी 93	वागेश्वरी सरस्वतत जयन्ती
28 जनवरी 93	काम संजीवनी तिथी, रति काम महोत्सव ययग
30 जनवरी 93	आरोग्य सिद्धि जयन्ती माधवाचार्य दयन्ती

जड़ी, बूंटियों से चमत्कारिक रोग निदान

एक प्रामाणिक यथार्थपरक लेख-पक्षाघात श्वास रोग, सफेद दाग, प्रोटेस्टेण्ड— पौरुष ग्रन्थि दमा, यकृत् कैंसर, चर्मरोग आदि की प्रामाणिक सचोट चिकित्सा एक आवश्यक लेख, आपके और आपके परिवार में से किसी के लिये भी—

चिकित्सा की चाहे कितनी ही विधियां प्रचलित हो जाएँ परन्तु इसके बावजूद भी आयुर्वेद का मुकाबला अन्य पद्धतियां नहीं कर पातीं, क्योंकि ऐलोपेथिक या अन्य पद्धतियों में जहा औषधि के सेवन से साइड इफेक्ट होने की संभावनाएं रहती है वहां आयुर्वेद अपने आप में स्पष्ट और प्रामाणिक चिकित्सा है, जिसके परिणाम भले ही थोड़े विलम्ब से प्राप्त हो परन्तु आयुर्वेद की यह विशेषता है कि यह मनुष्य के शरीर मे स्थित रोग को दबाती नही, अपितु उसका निदान करती है, और उस रोग को जड़मूल से समाप्त करने में सहायक होती है।

मैं अपने जीवनकाल में इस संबंध में कई चिकित्सकों से मिला, आयुर्वेद विशेषषों से जानकारी प्राप्त की, और मैंने यह अनुभव किया कि वास्तव में ही आयुर्वेद पद्धति अपने आप में प्रामाणिक है, यथार्थ है, प्राचीनतम है, और इसका प्रभाव निश्चित रूप से होता है।

मैंने यह भी अनुभव किया कि आयुर्वेद के क्षेत्र में कई लोग तो झूठे ही वैद्य बने हुए हैं, प्रचार माध्यमों की वजह से उनका नाम भारतवर्ष में अवश्य हो गया है परन्तु अंदर से वे खोखले हैं। उन्हें आयुर्वेद का अथवा जड़ी बूंटियों का प्रामाणिक ज्ञान नहीं हैं। पर जो प्रचार

प्रसार से सर्वथा दूर है जिन्होने वास्तव में आयुर्वेद के क्षेत्र में काम किया है मैं ऐसे ही व्यक्ति की खोज में था और मैने अनुभव किया कि प्रचार प्रसार से सर्वथा दूर डॉ. श्रीमाली इस क्षेत्र में अद्वितीय हैं।

मैने जब उनके जीवन के बारे में अध्ययन किया तो मैने अनुभव किया वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। सभी क्षेत्रों मे उनकी गति समान रूप से ऊचाई पर पहुंची हुई है। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होने काफी काम किया है, और डाक्टरेट की डिग्री कला के क्षेत्र में प्राप्त की है, तो ज्योतिष के क्षेत्र में आज भारत में निर्विवाद व्यक्तित्व हैं। ज्योतिष के क्षेत्र में वे जो भी बात कहते हैं वह प्रामाणिक मानी जाती है।

ज्योतिष के अतिरिक्त वेदों के अध्यपन में वे पारंगत हैं, और यजुर्वेद का काफी बड़ा भाग उन्हें कंठस्थ है। कर्म काण्ड के क्षेत्र में वे श्रेष्ठ व्यक्ति माने जाते हैं उन्होंने जीवन के कई आयामो को स्पर्श किया है, जीवन का काफी बड़ा भाग उन्होने हिमालय में विचरण करते हुए व्यतीत किया है, और उन्हें वर्तमान समय में जड़ी बूटियों और आयुर्वेद का जितना विशद और विस्तृत ज्ञान है उतना अन्य शायद ही किसी व्यक्ति को और आयुर्वेदज्ञ को हो।

यद्यपि वे अत्यधिक व्यस्त रहते हैं और उनसे मिलना व्यस्तता की वजह से सहज संभव नहीं, परन्तु फिर भी मैने जब कई बार समय के लिये उनसे आग्रह किया तो मुझे समय मिल ही गया। मैं उनके आयुर्वेद के ज्ञान को लोगों के सामने इन्टरव्यू के माध्यम से रखना चाहता था, इसलिये एक दिन प्रातः काल ही उनके दिल्ली निवास -306 कोहाट इन्कलेव, पीतमपुरा जा पहुंचा, उस समय वे अपनी दैनिक पूजा संपन्न करके उठे ही थे।

मेरा परिचय जानकर और यह जानकर कि मुझे साक्षात्कार के लिये समय दिया गया था वे अत्यंत विनम्र भाव से मुझे अपने ड्राइंग रूम में बिठाकर प्रश्नों के उत्तर देने के लिये तैयार हो गये।

प्रश्न :– मैने जानना चाहा कि आपको यह आयुर्वेद का ज्ञान कहाँ से मिला क्या आपको पैतृक परम्परा से इस ज्ञान की उपलब्धि हुई ?

डॉ श्रीमाली :–मुझे यह ज्ञान पैतृक परम्परा से नहीं मिला, अपितु मेरी खुद की रुचि आयुर्वेद में थी और जीवन में ऐसा संयोग मिला कि मुझे हिमालय की कई बार यात्राएं करनी पड़ी, मैं उस समय इन वनस्पतियों के संपर्क में आया और मैने यह अनुभव किया कि इन

कई बार हजारों-लाखों रुपये खर्च करके भी रोग से मुक्ति नहीं मिल पाती, वही रोग एक छोटी सी जड़ी बूटी से समाप्त हो जाता है। मेरे जीवन में ऐसे सैकड़ो अनुभव आए और मैं उन जड़ी बूटियों के प्रभाव को देखकर दंग रह गया हूं।

- **आधीशीशी या निरन्तर सिरदर्द की बीमारी में यदि अकलकरा जड़ के रस को दो तीन बार नाक में डाल दें तो आधा सिरदर्द की बीमारी हमेशा हमेशा के लिये समाप्त हो जाती है।**
- **नपुंसकता की स्थिति में यदि ग्वार पाठे के रस में अंकोड का चूर्ण मिलाकर दो तीन बार शहद के साथ चाटे तो तीसरे दिन ही उसे पूर्णतः अनुकूल परिणाम प्राप्त हो जाते हैं।**
- **कैंसर के रोग को समाप्त करने में तूंबी के रस में सेवन्तिका के बीजों का चूर्ण मिलाकर एक सप्ताह तक लिया जाय तो शरीर के किसी भी भाग में किसी भी प्रकार का कैंसर हो तो वह समाप्त हो जाता है।**
- **मोटापा दूर करने के लिये यदि चिनचिलिका के बीजों को चबाकर उस पर पाव भर दूध पी लें तो एक सप्ताह में ही कमर का तथा पेट का फालतू मांस और चर्बी समाप्त हो जाती है, और स्त्री या पुरुष छरहरा सुन्दर और सुडौल दिखाई देने लगता है।**

वनस्पतियों में असाध्य रोगों को समाप्त करने की शक्ति है, यदि इस जड़ी बूटियों का भली प्रकार से प्रयोग करें तो असाध्य से असाध्य रोग समाप्त हो सकते हैं।

प्रश्न :— आप कितने वर्षों से यह चिकित्सा कार्य कर रहे हैं?

डॉ श्रीमाली :—आयुर्वेद मेरे जीवन निर्वाह का माध्यम नहीं यह तो मेरी रुचि है, और पिछले 40 वर्षो से मैं आयुर्वेद के माध्यम से रोगों का निदान और चिकित्सा करता रहा हूं, यह सब कुछ जनसेवा और आत्मसंतोष के लिये ही करता हूं इसके लिये न तो मैंने कभी अर्थ प्राप्ति का उपक्रम किया और न आयुर्वेद के माध्यम से धन कमाने की लालसा ही है।

प्रश्न :— इन 40 वर्षों में आपने क्या अनुभव किया? क्या कभी आपको चिकित्सा में असफलता भी मिली?

डॉ श्रीमाली :—हकीकत में देखा जाय तो मैंने इस अवधि में सैकड़ों हजारों लोगों को निःशुल्क और मानवीय आधार पर चिकित्सा की, न तो मेरे पास आयुर्वेद का कोई सर्टिफिकेट है, और न कोई प्रचार ही, मेरी ऐसी लालसा भी नहीं। मै स्वयं ऐसी जड़ी बूटियों को जंगलों से ही प्राप्त करता हूं अपने हाथो से औषधि का निर्माण करता हूं और इच्छुक व्यक्तियो को देता हूं । इन चालीस वर्षों में मुझे तो एक बार भी असफलता नहीं मिली। जिस व्यक्ति की भी चिकित्सा की उसे पूर्ण सफलता ही मिली, जहां डॉक्टरो ने भी हाथ झटक दिये थे। उन मनुष्यों की चिकित्सा भी मैंने की और ईश्वर की मेरे ऊपर अत्यन्त कृपा रही है, जो जीवन से सर्वथा निराश हो चुके थे उन्हें भी नया जीवन मिला। वे पूर्णतः स्वस्थ हुए और आज भी वे इसके जीते जागते उदाहरण हैं।

प्रश्न :— आपने किन-किन रोगों की चिकित्सा की और आपने पूरी सफलता अनुभव की।

डॉ श्रीमाली :—यों तो मैं बहुत ही कम लोगों के केस हाथ में लेता हूं क्योंकि मुझे न तो इतना समय मिल पाता है कि मैं जंगलों में जाऊँ और जड़ी बूटियाँ लाकर उनसे औषधि का निर्माण करूँ, बाजार में जो आयुर्वेदिक औषधियां मिलती हैं उनमें से कई प्रामाणिक नहीं होतीं इसलिये मैं यथासंभव उनका उपयोग नहीं करता।

मैंने अपने जीवन में अन्य सभी प्रकार के रोगों की चिकित्सा के अलावा (1) पक्षाघात (2) श्वास रोग (3) सफेद दाग (4) प्रोटेस्टेण्ड (पौरुष ग्रंथी) (5) दमा (6) यकृत (7) कैंसर (8) चर्म रोग आदि की प्रामाणिक चिकित्सा की है, और उन रोगियों को सर्वथा रोग मुक्त किया है। जिस पुरुष या स्त्री की भी मैंने चिकित्सा की वे पूर्णतः स्वस्थ हुए हैं। नपुंसकता, वृद्धावस्था की वजह से इन्द्रिय शिथिलता, हृदय रोग आदि पर भी मैंने प्रामाणिकता के साथ चिकित्सा की है, और इन सभी रोगों में मुझे पूरी-पूरी सफलता मिली है। कायाकल्प के क्षेत्र में भी मैंने आयुर्वेद के माध्यम से
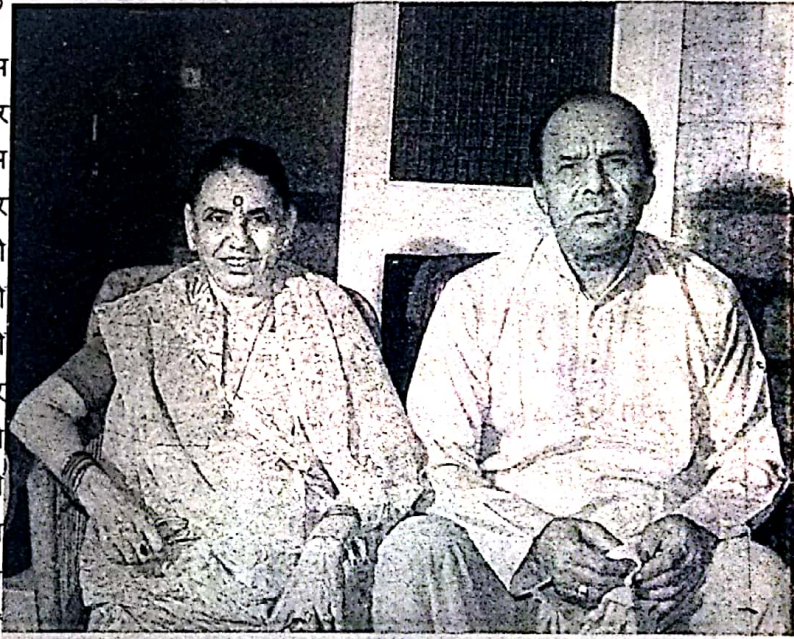
कार्य किया है और मुझे सफलता मिली है। कुछ समय पहले पूरे भारतवर्ष में यह चर्चा रही थी कि मैंने जो आयुर्वेदिक तेल का निर्माण किया था उससे गंजे व्यक्ति के सिर पर भी वापिस बाल आने लगे थे बालों का झड़ना, बालों की कमी आदि भी इस तेल के माध्यम से दूर की थी। इस तेल की यह विशेषता रही कि लम्बे और घने बाल बनाने में मेरा यह फार्मूला शत

प्रतिशत सफल रहा। शरीर की जड़ता शरीर की शिथिलता इन्द्रियों की क्षीणता आदि में भी मैंने जो औषधि दी उसका शत प्रतिशत अनुकूल परिणाम प्राप्त हुआ और कई तो 60 वर्षों की उम्र के बाद भी पिता बनने का गौरव प्राप्त कर चुके हैं। बांझपन मिटाने में भी मैंने आयुर्वेदिक प्रयोग किये हैं, और मुझे उनमें आशातीत सफलता प्राप्त हुई है।

प्रश्न :— आपने अभी बताया कि आपको ज्यादा समय नहीं मिल पाता कि आप जड़ी बूंटियों के लिये हिमालय की ओर जायें और वहां से जड़ी बूटियां लाकर औषधि का निमार्ण करें आप किसी फार्म में इस प्रकार की जड़ी बूंटियो को उगाने की ओर प्रयत्न क्यों नहीं करते, इससे आपका समय भी बचेगा और उन जड़ी बूटियों को संरक्षण भी प्राप्त हो सकेगा जो समाप्त हो रही हैं।

डॉ श्रीमाली :—मैं स्वयं भी इस दिशा में ही चिन्तन कर रहा हूं और चाहता हूं कि दिल्ली के पास में कोई अच्छा सा फार्म मिल जाय जहां पर मैं उन लुप्त प्रामाणिक और दुर्लभ जड़ी बूटियों को उगाने का प्रयत्न करू जिससे वास्तव में ही उन जड़ी बूटियों को संरक्षण प्राप्त हो सकेगा और उसके द्वारा अधिक से अधिक व्यक्तियों को लाभ पहुंच सकेगा।

प्रश्न :— आपकी आगे की क्या योजना है?

डॉ श्रीमाली :— यों तो मेरा व्यक्तित्व कई क्षेत्रों में फैला हुआ है, परन्तु जहां तक आयुर्वेद का प्रश्न है मेरे पास इस संबंध में जो विस्तृत ज्ञान का भंडार है उसे पुस्तक का आकार दे सकूं, जिससे कि आने वाली पीढ़ियों के लिये ऐसा ग्रन्थ मार्ग दर्शक के रूप में कार्य करता रहे।

साथ ही मैने अनुभव किया है कि कई जड़ी बूंटियों की जातियां समाप्त हो गई हैं, या बहुत कम बची हैं। यदि समय रहते उधर ध्यान नहीं दिया गया तो निश्चय ही वे जड़ी बूटियां समाप्त हो जायेंगी और आने वाली पीढियों के लिये वे जड़ी बूंटियाँ केवल पुस्तकों में ही लिखी रह जायेगी, इसलिये मैं ऐसा फार्म प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा हूं, जहां इन सब जड़ी बूंटियों को उगा सकूं, उन्हें संरक्षण दे सकूं और जो दुर्लभ जड़ी बूंटियां हैं उनको समाप्त होने से बचा सकूं।

इसके अलावा मैं कठिन और असाध्य रोगों की चिकित्सा निःशुल्क भाव से करते रहना चाहता हूं, जब कोई व्यक्ति रोग मुक्त होता है तो उसके चेहरे की प्रसन्नता देखकर मुझे आत्म संतोष होता है, मेरे जीवन का यही ध्येय है।

काफी समय हो गया था, वे कहीं जाने के लिये जल्दी में थे अतः मैंने उनसे विदा ली, मैंने वास्तव में ही अनुभव किया कि डॉ श्रीमाली अन्य क्षेत्रों के साथ-साथ आयुर्वेद के क्षेत्र में भी अपने आप में अद्वितीय हैं और यदि इनसे अनुभव प्राप्त किये जायें तो वे आने वाली पीढ़ियों के लिये धरोहर होंगे।

(पृष्ठ 43 का शेष)

आश्चर्य की बात तो यह है कि जिसे हम सूक्ष्म शरीर कहते है वह कोई छोटा या लघु शरीर नहीं होता, अपितु जितना लम्बा चौड़ा हमारा स्थूल शरीर हाता है उनता ही वह सूक्ष्म शरीर भी होता है, और इस स्थूल शरीर मे से उस सूक्ष्म शरीर को बाहर निकाला जा सकता है।

जिस समय यह क्रिया सम्पन्न होती है उस समय हमारा स्थूल शरीर निश्चल, निष्पन्द बना रहता है, उसमें किसी प्रकार की कोई हलचल नहीं होती केवल बहुत धीरे-धीरे प्राण धड़कते रहते हैं, जिससे कि यह स्थूल शरीर यथोचित ऊष्मा प्राप्त करता रहे और जीवित रहे।

यह स्थूल शरीर जहां पांच तत्वों से निर्मित होता है वहां सूक्ष्म शरीर केवल वायु तत्व, और आकाश तत्वो से ही निर्मित होता है, जिसकी वजह से वह हजारो-करोड़ों मील दूर एक ही सैकेण्ड मे जा सकता है और वापिस आ सकता है।

यही नहीं अपितु उस स्थान विशेष पर जाकर वह सूक्ष्म शरीर पूर्णतः स्थूल शरीर मे परिवर्तित भी हो सकता है। इस प्रकार जहां यह शरीर जाता है, और जिनसे यह मिलता है वे अचानक आपको अपने सामने देखकर आश्चर्यचकित रह जाते हैं परन्तु यह क्रिया अब कोई गोपनीय या रहस्यमय नहीं रही।

सूक्ष्म शरीर से अन्य लोकों की यात्रा :-

ब्रह्माण्ड में जैसे हमारा मृत्यु लोक है उसी प्रकार से चन्द्र लोक, सूर्य लोक, इन्द्र लोक, स्वर्ग लोक और ऐसे कई लोक हैं जिनका अस्तित्व ब्रह्माण्ड में है, यद्यपि वैज्ञानिक या बुद्धिजीवी यह कहते हैं कि अमेरिकां का चन्द्रयान चन्द्रमा की धरती पर उतरा था पर वहां तो किसी का कोई अस्तित्व दिखाई नहीं दिया यह तो ठीक वैसी ही बात हुई कि जैसे हजारों मील लम्बे-चौड़े सहारा के रेगिस्तान मे चन्द्रलोक का कोई जहाज उतरे और वह चारों ओर देखें तो उस रेगिस्तान में उन्हें किसी प्राणी का अस्तित्व दिखाई नहीं देता और वे यदि वापिस चन्द्र लोक जाकर कहें कि मृत्यु लोक में किसी भी प्रकार के प्राणी का अस्तित्व नही है, वह बंजर और रेतीली भूमि है तो उनका यह कथन प्रामाणिक नहीं होगा, ठीक ऐसी ही स्थिति चन्द्रयान की रही है।

जो अपने सूक्ष्म शरीर के माध्यम से यात्रा करना चाहते हैं तो उसे ध्यान प्रक्रिया का अभ्यास करना चाहिये। इसके लिये आप प्रातः चार या पांच बजे उठ जाय, स्नान कर स्वच्छ वस्त्र पहन कर आराम से एकान्त कक्ष में बैठ जाय और आंख बंद कर अपने अंदर उतरने का प्रयत्न करें आपको ऐसा लगना चाहये कि आप धीरे-धीरे अपने भीतरी शरीर की ओर जा रहे हैं, और आपको बाहर के वातावरण का कोई भान नहीं रहा है। ऐसा आप लगभग आधे घंटे तक करिये शुरू शुरू में आपका ध्यान उचट जायेगा या ध्यान नहीं लगेगा परन्तु 15-20 दिनों के बाद आपका अभ्यास होने के बाद आपको आनन्द की अनुभूति होने लगेगी।

ध्यान की अवस्था में आप दूर बैठे हुए किसी मित्र को मनसः वेग से आज्ञा दीजिये कि वह आपको अभी और तुरन्त टेलीफोन करे। पहले इसका प्रयोग अपने शहर में ही रहने वाले किसी पुरूष या स्त्री पर करे, और ऐसी आज्ञा 15-20 बार दें। आप यह देखकर चकित रह जायेगें कि अगले ही क्षण उनका टेलीफोन आ जायेगा, और वह कहेगा कि इतना जल्दी टेलीफोन करने के लिये क्षमा जाहता हूँ, परन्तु मैं रह नहीं सका और मैंने तुम्हें टैलीफोन कर दिया। यह अपने सूक्ष्म शरीर को उस स्थान पर भेजने और आज्ञा देने का पहला चरण है।

देवी के सम्मुख सांध्य तांडव में लीन शिव. (मैसूर शैली, १८ वीं शताब्दी)

वह चन्द्र लोक के ऐसे भूभाग मे उतरा, जहा वास्तव में ही किसी प्राणी का अस्तित्व नही था और उन्होने यहां आकर फतवा दे दिया कि चन्द्र लोक में मनुष्य है ही नहीं और वहां जीवन का कोई अस्तित्व नहीं है।

पर वास्तव में योगियों ने जो जानकारी प्राप्त की है उसके अनुसार चन्द्रलोक इन्द्र लोक आदि सैकड़ों लोकों का अस्तित्व ब्रह्माण्ड में है, उन लोकों में व्यक्ति निवास करते हैं उनमें से कई लोकों के प्राणियों का ज्ञान हमसे बढ़ चढ़ कर है, वे ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में हमसे आगे है।

अब सूक्ष्म शरीर के माध्यम से कोई भी आलोचक कोई भी वैज्ञानिक या कोई भी व्यक्ति इन लोगो की यात्रा कर सकता है, और इस कथन की प्रामाणिकता को अपनी आंखों से अनुभव कर सकता है।

इस सूक्ष्म शरीर के माध्यम से आप एक या दो सैकण्ड मे ही अमेरिका या इग्लैण्ड में एक निश्चित स्थान पर जा सकते हैं, और वहां जाकर अपने इस सूक्ष्म शरीर को स्थूल शरीर मे पूर्णतः परिवर्तन कर सकते हैं। उस समय आपके दो शरीर होंगे, एक तो जो स्थूल शरीर आप छोड़ कर गये हैं और दूसरा वह स्थूल शरीर जिसका उपयोग आप कर रहे हैं। इन दोनों शरीरों में किसी प्रकार का कोई अन्तर नहीं रहता, इसी प्रकार आप अपने इस स्थूल शरीर से अन्य कई स्थूल शरीर बना सकते हैं जिस प्रकार श्रीकृष्ण ने रास लीला के समय प्रत्येक गोपी के साथ अपना एक स्थूल शरीर बना दिया था और प्रत्येक गोपी यह समझ रही थी कि उसके प्रियतम श्रीकृष्ण तो उसके पास ही है।

सूक्ष्म शरीर परिवर्तन

जैसा कि मैंने बताया इस स्थूल शरीर के अन्दर छः और शरीर है अंतिम शरीर सूक्ष्म शरीर है। उस सूक्ष्म शरीर को पकड़ने के लिए ध्यान पद्धति ज्यादा प्रामाणिक और अनुकूल है।

प्रातः काल लगभग चार बजे उठकर साधक को स्नान कर सफेद धोती पहन कर शुद्ध सफेद आसन पर बैठ जाना चाहिये और बिलकुल शांत चित्त से आंखें वद कर अपने भीतर गहराई के साथ उतरना चाहिये। धीरे-धीरे वह बाहरी वातावरण से कट जायेगा और अन्दर जाने की क्रिया संपन्न होने लगेगी। इस प्रकार का ध्यान या इस प्रकार की अन्दर उतरने की क्रिया एक या दो दिन में संपन्न नहीं हो सकती, परन्तु यदि निरन्तर अभ्यास करें तो वह स्थूल शरीर से भुव शरीर, भुव से स्व शरीर इसी प्रकार इन शरीरों को स्पर्श करता हुआ अंत में सूक्ष्म शरीर तक पहुंच जाता है, और जब सूक्ष्म शरीर से उसका संपर्क बन जाता है तो सूक्ष्म शरीर स्थूल शरीर से अलग होकर वायुमंडल में विचरण करने में समर्थ हो पाता है।

"ब्रह्माण्ड तंत्र" सर्वोपरि विधि है इसकी :-

ध्यान के साथ-साथ ब्रह्माण्ड यंत्र के माध्यम से ही सूक्ष्म शरीर तक पहुंचा जा सकता है, और सूक्ष्म शरीर के माध्यम से मृत्यु लोक से परे अन्य लोकों की यात्रा भी सहज संभव है, इसे "ब्रह्माण्ड तंत्र" कहा गया है।

साधक को चाहिये कि किसी भी दिन से इस साधना को प्रारम्भ कर सकता है, पर इसकी सिद्धि के लिये लगन निरन्तरता और धैर्य की आवश्यकता होती है। अपने सामने किसी पात्र में यंत्र रखकर उस यंत्र के मध्य में दोनों आंखों को स्थिर करें और निम्न लिखित

मंत्र का अपने होठो ही होठो में जप करें -

— ब्रह्माण्ड मंत्र —

ॐ ब्रं ब्रह्माण्ड वैचार्य ब्रं फट्

यह ध्यान रहे कि मंत्र का उच्चारण जोर से नहीं करना है तथा वातावरण को शांत शोरगुल से परे बनाया रखना है। पहले पहले साधक लगभग 15-20 मिनिट ध्यान करने का प्रयत्न करें और अपने शरीर के अन्दर पहुंचने का प्रयत्न करें। फिर 20 मिनिट के बाद इस यंत्र को, जो कि प्रामाणिक चैतन्य और प्राण प्रतिष्ठा युक्त होने चाहिए, अपने सामने किसी पात्र में रख दे और उसके मध्य में दोनो आखों को स्थिर करके उपरोक्त मंत्र जप करे, एक बात का ध्यान रहे कि आपकी आखें खुली और अपलक रहे, अर्थात ज्यादा से ज्यादा समय तक आप बिना पलक झपकाये उस यंत्र के मध्य भाग को देखते रहें।

जब आपकी आंखे थक जाए तब कुछ क्षणों के लिये आंखे बंद कर विश्राम कर लें, और यदि आंखों में आंसू निकलने लगे तो पास में रखे हुए जल से धो लें।

इस प्रकार के त्राटक से आंखे कमजोर नहीं होती जैसा कि कुछ लोगों का भ्रम है, परन्तु फिर भी यदि आप संशय ग्रस्त है तो आपको ऐसा त्राटक या साधना नहीं करनी चाहिये, क्योकि सशयग्रस्त व्यक्ति कभी भी सफलता प्राप्त नहीं कर पाता. यह आपके स्वयं के विवेक पर और अपनी ही जिम्मेदारी पर निर्भर है कि आप यह त्राटक या साधना संपन्न करें या न करें।

त्राटक करते समय बरावर मंत्र जप करते रहें। इसमें किसी भी माला का प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं है, और न अगरबत्ती या दीपक लगाने की जरूरत है, लगभग आधे से एक घंटे तक इस प्रकार का प्रयोग करें।

कुछ ही दिनों के बाद आपको अनुभव होने लगेगा कि आपके शरीर से परे भी एक शरीर विद्यमान है जो किसी भी स्थान को जाने के लिये मचल रहा है, फिर आप हजारों मील दूर अपने किसी सम्बन्धी का चिन्तन करे और आप देखेंगे कि आपका स्थूल शरीर तो जड़वत् हो गया और आप उस संबंधी के घर पहुंच गये हैं. वहाँ आप मिल रहे हैं, बात कर रहे हैं, खाना खा रहे हैं, और वे सब क्रिया कलाप कर रहे है जो स्थूल शरीर से संभप है।

कुछ समय के बाद जब आप वापिस लौटने का चिन्तन करते हैं, तो आप एक सैकण्ड मे ही अपने स्थूल शरीर में लौट आते है और आप चैतन्य तथा जाग्रत हो जाते हैं। कुछ थोड़े से समय में आपने निश्चय ही उस संबंधी के यहां यात्रा की है इसका प्रमाण यह होगा कि आप टेलीफोन कर ज्ञात कर लें, आप स्वयं आश्चर्यचकित रह जायेगें कि अभी तो आप वहां थे और फिर इतनी जल्दी आप यहा कैसे पहुंच गये।

इसी प्रकार आप अन्य लोकों की भी यात्रा कर उन लोगों मे विचरण कर सकते है, देख सकते हैं, और वापिस अपने स्थूल शरीर में आ सकते है। इस प्रकार का प्रयोग करते समय वह "ब्रम्हाण्ड यंत्र" आपके लिये विशेष उपयोगी बना रहता है, क्योकि वही यंत्र आपके स्थूल शरीर में से सूक्ष्म शरीर को अलग करता है वहीं यंत्र आपको विचरण करने की ऊर्जा और शक्ति देता है, वहीं यंत्र आपके स्थूल शरीर की रक्षा और उसकी ऊर्जा बनाये रखता हैं, और उसी यंत्र के माध्यम से आप वापिस सूक्ष्म शरीर से स्थूल शरीर में आने में समर्थ हो पाते हैं।

वास्तव मे ही यह साधना आज के युग मे वरदान स्वरूप है, और प्रत्येक साधक को यह साधना अवश्य ही संपन्न करनी चाहिये।

नववर्षांक: सामग्री परिशिष्ट

पत्रिका पाठकों की विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए, पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक साधनाओं से संबंधित सामग्री की व्यवस्था करने का अथक प्रयास किया जाता है, दुर्लभ एवं कठिनाई से प्राप्त होने वाली सामग्रियों को उचित न्यौछावर पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाती है।

शीर्षक	पृष्ठ संख्या	सामग्री का नाम	न्यौछावर
आप भी अपना आभामंडल देख सकते है।	9	आत्म महायंत्र	600
सूर्य ग्रहण: जब वशीकरण क्रिया सिद्ध होती है	13	वशीकरण यंत्र	300
आप अपना पिछला जीवन देख सकते है	15	पुनर्जन्म यंत्र	295
कुछ दुर्लभ तांत्रिक यंत्र	17	श्री यंत्र	330
		बगलामुखी यंत्र	330
		कामदेव रति यंत्र	450
ब्रह्माण्ड में गूंजते हुए रहस्यमय यंत्र	21	ब्रह्माण्ड तंत्र प्रतीक	200
		कालदण्ड तंत्र प्रतीक	280
		सिद्ध तंत्र प्रतीक	280
		अप्सरा तंत्र प्रतीक	300
		व्योमचार तंत्र प्रतीक	170
		निर्बीज तंत्र प्रतीक	205
सिद्धाश्रम पृथ्वी पर स्वर्ग की सुगन्ध	27	सिद्धाश्रम यंत्र	300
क्या हमारे पूर्वज पारे से सोना बनाते थे	31	रसेश्वरी यंत्र	310
बांझपन मिटाया जा सकता है पुत्रदा तंत्र से	33	पुत्रदा यंत्र	300
		21 तोले का पारद शिवलिंग	600
सहस्त्ररूपा लक्ष्मी सिद्धि	36	21 कमलगट्टे के बीज	150
		श्वेतार्क गणपति	410
		तीन मधुरूपेण रुद्राक्ष	240
		सहस्त्ररूपा लक्ष्मी यंत्र	300
समृद्धिशाली बनना आपकी इच्छा नहीं आपका अधिकार है	39	कुबेर यंत्र	350
अपने सूक्ष्म शरीर से कहीं पर भी यात्रा कीजिये न	43	ब्रह्माण्ड यंत्र	600
कुछ दुर्लभ प्रयोग		पारद मुद्रिका	150
		काली हकीक माला	110
		उग्रतारा यंत्र	150
		अघोर लक्ष्मी यंत्र	201
		सर्व रोग निवारण यंत्र	30
		सम्मोहन यंत्र	400

* आप एक पत्र में हमें लिख भेजें, कि आपको क्या सामग्री चाहिए, हम वह सामग्री वी. पी. से सुरक्षित रूप से आपके हाथों में पहुंचा देंगे।
* चेक स्वीकार्य नहीं होंगे।
* ड्राफ्ट किसी बैंक का हो, वह ''मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान'' के नाम से बना हो, जो जोधपुर में देय हो।

मनियार्डर या ड्राफ्ट भेजने का पता

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कालोनी, जोधपुर -342001 (राजस्थान), टेलिफोन-0291-32209

मेरे परम आत्मीय शिष्यों और शिष्याओं !

आज मैं पुनः उन्हीं शब्दों को दोहरा रहा हूँ, जो वर्षों से कहता आ रहा हूँ– जब कोई लोहे का टुकडा पारस का स्पर्श पाकर भी कंचन न बन पाए, तो कितना आश्चर्य होगा! मैं निखिलेश्वरानन्द हूँ। मेरे जैसे व्यक्तित्व से जुड़कर भी अपने आपको नहीं संवार पा रहे हो, तुम में दिव्यता नहीं आ पा रही है, तो कुछ छण सोचने के लिए बाध्य हो जाता हूँ कि जरूर इनके और मेरे बीच में कोई अवरोध है, जहाँ मेरा स्पर्श पाकर भी तुम विकसित एवं सुवासित नहीं हो पा रहे हो।

मुझे खेद यही है कि अभी भी तुम अधूरे हो, अपने पैरों पर खड़े नहीं हो पा रहे हो। मैं बार-बार प्रयास कर रहा हूँ कि तुम सबल होकर अपने पाँव से चल सको। किसी सम्पन्न बाप का बेटा यदि गलियों में भीख माँगे तो पिता ही अपमानित एवं दुखी होता है। तुम विपन्न और व्यथित हो! इसीलिए सिद्धाश्रम जाने से पूर्व ही तुम्हें अनेक सिद्धियों एवं साधनाओं से परिपूर्ण करके अद्वितीय बना देना चाहता हूँ। आध्यात्मिक एवं भौतिक रूप से अपना तपस्यांश देकर इतना सबल बना देना चाहता हूँ। जिससे तुम समाज में सम्मानपूर्वक जी सको तथा संसार देख सके तुम किसके प्राणांश हो, किस की प्राणश्चेतना तुम में समाहित है।

जीवन में अवसर बार-बार नहीं आते जब मैं पुकारता हूँ तो उस पुकार के पीछे कई कारण होते हैं, तुम्हें अपनी अनुभूतियों को अपनी चेतनाओं को तीव्र बनाना है तो अपने आप को नए रूप में देखना आरंभ कर दो और यह तुम्हें साधना के माध्यम से ही प्राप्त हो सकता है।

निखिलेश्वरानन्द

परम पूज्य गुरुदेव के इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रत्येक गुरुवार को गुरूधाम, दिल्ली में एक दिवसीय साधना प्रयोग रखा जाता है। दिल्ली में प्रयोग सम्पन्न करवाने का विशेष कारण यही है कि यहाँ दूसरे प्रान्तों से भी साधक सुविधानुसार समय पर पहुँच सकते हैं तथा साधनोपरान्त अपने गन्तव्य स्थान पर सरलता से जा सकते हैं।

तुम गृहस्थ हो और व्यस्त भी हो, यदि चारों गुरुवार को साधनाओं में सम्मिलित होनां संभव न हो तो कम से कम एक या दो साधना तो करनी ही चाहिए क्योंकि तुमको पूज्य गुरूदेव से मिलने का कोई न कोई बहाना तो चाहिए और फिर इन साधनाओं की न्यौछावर भी मात्र 100/- है।

21-1-93 गुरू प्रत्यक्ष सिद्धि साधना

- सिद्धाश्रम गमन जीवन का परम सौभाग्य है, जो देवताओं के लिए भी दुर्लभ एवं अन्यतम स्थान है। जिसे प्राप्त करने के लिए उच्चकोटि के योगी भी लालायित रहते हैं। जहाँ भगवान श्रीकृष्ण, युधिष्ठिर, कृपाचार्य, गोरखनाथ, शंकराचार्य आदि योगी सशरीर आज भी विचरण करते हैं, जो प्रकृति के समस्त द्वन्द्वों से निर्मुक्त हैं– इसमें प्रवेश पाने के लिए 'गुरु प्रत्यक्ष सिद्धि साधना' आवश्यक है।

- गुरु समस्त संसार का मूल है। साधना की पूर्णता का आधार भी गुरु ही है। एक मात्र गुरु ही भौतिक एवं आध्यात्मिक सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाला साक्षात् शिव स्वरूप है, गुरु ही परम तत्व है, गुरु की प्रसन्नता एवं कृपा के बिना करोड़ों-करोड़ों साधनाओं का भी कोई फल नहीं मिलता है। इसके लिए एक मात्र 'गुरु प्रत्यक्ष सिद्धि साधना' ही उपाय है।

- इस वैज्ञानिक एवं वैज्ञापनिक युग में यदि पूर्णता तक पहुँचना है, यदि कुण्डलिनी जागृत करनी है, आध्यात्मिक उन्नति करनी है, पूर्ण भौतिक सुख-सुविधाएँ प्राप्त करनी है और विविध प्रकार की साधनाओं में सिद्धियाँ प्राप्त करनी है तो

इस साधना के द्वारा गुरु को अपने हृदय-प्राण में स्थापित करना ही होगा।

- यदि साधक थोड़ा सा भी विवेकवान है तो वह अपने जीवन में 'गुरु प्रत्यक्ष सिद्धि साधना' को अवश्य ही महत्व देगा।

28-1-93 पूर्णता प्राप्ति सिद्धि दिवस

- माघ शुक्ल पंचमी अत्यन्त महत्वपूर्ण दिवस है इसे वसंत पंचमी तथा सरस्वती दिवस के रूप मे जाना जाता है। वास्तव में यह जीवन में पूर्णता प्राप्ति का दिवस है।
- अपने विचारों को समयानुकूल यथातथ्य धाराप्रवाह रूप से व्यक्त करना एक कला है। व्यक्ति कितना भी योग्य हो यदि वह अपने मूल विचारों को व्यक्त नहीं कर सकता तो वह पंगु है। 'पूर्णता प्राप्ति सिद्धि' प्रयोग से साधक में धाराप्रवाह बोलने की क्षमता, व्यक्तित्व में आकषर्ण, वशीकरण तथा सुख-सौभाग्य स्वतः आ जाते हैं।
- परीक्षाओं में सफलता, श्रेष्ठ अंक प्राप्त करने की क्रिया, इण्टरव्यू में सफलता, अधिकारी के सामने सफलता, भाषण देने की कला, बातचीत करने में चतुराई तथा समाज में पूर्ण लोकप्रियता प्राप्त करने के इच्छुक साधकों (स्त्री, पुरूष, बच्चें।) को यह साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

4-2-93 धूमावती सिद्धि साधना

- धूमावती साधना साधक के लिए शीघ्र फलदायी मानी गई है। जो इस साधना को सिद्ध कर लेता है उसके जीवन में किसी प्रकार का अभाव रह नहीं सकता। भोग और मोक्ष दोनों दृष्टि से पूर्ण हो जाता है।
- दसों महाविद्याओं में धूमावती का स्वरूप अत्यन्त तीव्र है, ये अत्यन्त तीव्र क्रोध मुद्रावाली महाविद्या हैं इसीलिए जो धूमावती को सिद्ध कर लेता है इस धरती पर उसका कोई शत्रु शेष नहीं रह जाता है।
- समस्त प्रकार के रोगों, मानसिक परेशानियों, हीन भावनाओं से मुक्ति तथा जीवन में निर्भयता के लिए यह श्रेष्ठतम तथा अचूक साधना है।
- इस साधना के सम्पन्न करने से धन एवं सम्पत्ति में स्थायित्व आता है, प्रचण्ड से प्रचण्ड शंत्रु पराजित हो जाता है, मुकदमें में निश्चित तौर पर विजय प्राप्त होती है, समस्त आपत्तियाँ-विपत्तियाँ जीवन से दूर हो जाती है।
- पुत्र-लाभ तथा संतान स्वास्थ्य रक्षा के लिए भी यही साधना शास्त्र सम्मत है।

परम पूज्य गुरुदेव के मारिशस पहुँचने पर वहाँ की जनता ने भव्य स्वागत किया। गुरुदेव की आगवानी के लिए हवाई अड्डे पर मारिशस सरकार की ओर से उद्योग मंत्री श्री अनिल बांचू व वाणिज्य मंत्री श्री सुरेश रम्भण पहुँचे। विशाल जन समूह के जय घोषों से हवाई-अड्डा गूंज उठा।

इस बार गुरु शक्ति पीठ जोधपुर में इस महोत्सव पर विशेष आयोजन होगा, और इस अनूठे आयोजन में तीन विशेष प्रकार की साधनाएं संपन्न कराई जायेंगी

(1) भाग्येश्वरी सरस्वती साधना–सरस्वती शब्द का अर्थ है कि सरस=गति, और मति=गतिशीला, अर्थात निराकार ब्रह्म की क्रिया शक्ति। सरस्वती ही ब्रह्म का सक्रिय रूप है जीवन के सबसे मुख्य तत्व वाणी को गति प्रदान करने वाली, बुद्धि को तीव्र करने वाली देवी है। जीवन में जितनी क्रियाएं और विचार है उनका सृजनात्मक रूप होना आवश्यक है, तभी सिद्धि प्राप्त हो सकती है, और यही इस बार की सरस्वती साधना का आधार रहेगा। बालक अल्प बुद्धि नहीं होते उनकी बुद्धि का सृजनात्मक विकास आवश्यक है और यह सरस्वती साधना की कृपा से संभव है।

(2) **रतिकाम जयंती** :- जीवन में रति और काम एक दूसरे के पूरक है, और जब इन दोनों का सहयोग होता है तो एक नये संक्षिप्त संसार की रचना होती है, और यही हर गृहस्थी का आधार है, जिस गृहस्थी में भी रतिकाम संयोग पूर्ण रूप से नहीं है वहां प्रेम पनप नहीं सकता, सुख सौभाग्य आ ही नहीं सकते, बसंत पंचमी के सिद्ध मुहूर्त पर गृहस्थ जीवन संबंधी बाधाओं की मुक्ति रतिकाम पूजा साधना से संभव है, जिससे कि गृहस्थ जीवन के दोनों पक्षों-पुरुष अथवा स्त्री-किसी में भी कोई कमी हो तो वह दूर हो सकती है, जीवन का सौभाग्य आनन्द सहस्त्र गुना बढ़ जाता है।

यह तो **अनंग सिद्धि दिवस है**, जीवन की कमियों को दूर कर आपस में नये प्रेम सृजन प्रारम्भ करने का सिद्धि दिवस है। इस अवसर पर विशेष साधना हर शिष्य गृहस्थ के लिये एक नवीन अध्याय खोलेगी, प्रेम के क्षेत्र में पूर्ण सिद्धि ही वसन्त पंचमी की इस साधना का आधार है।

(3) **श्री जयंती**:- जो अपने जीवन में गरीबी में ही पैदा हुए और संघर्षो की लम्बी लड़ाई बचपन से ही लड़ते आ रहे है उनके लिये बसंत पंचमी को "श्री सिद्धि दिवस" के रूप में साधना संपन्न कर जीवन में नया भाग्य द्वार खोलने का प्रयास अवश्य करना चाहिये।

श्री जयन्ती की साधना हर उस व्यक्ति के लिये है जो अपने प्रयत्नों में थक गया है जिसे जीवन में निराशा ही अनुभव हो रही है, वह इस विशेष शक्ति दिवस पर अपने जीवन का नया सुख सौभाग्य और श्री का बसंत प्रारम्भ कर सकता है।

ये तीनों प्रयोग पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में उनके द्वारा विशिष्ट दीक्षा देकर गुरु शक्ति पीठ जोधपुर में संपन्न कराये जायेगें।

एक दिन के इस शिविर का शुल्क 351/- रुपये है और जो साधक इस शिविर में भाग लेना चाहते है, वे समय रहते सूचना अवश्य भिजवा दें और अपना स्थान आरक्षित करा लें। जो साधक पूरे परिवार सहित आ रहे हों तो उसकी भी सूचना अवश्य दें। निवेदन केवल ना है कि 28-1-93 के प्रातः 10 बजे तक अवश्य ही गुरु शक्ति पीठ जोधपुर पहुंच जायें।

सम्पर्क सूत्र-

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग: हाईकोर्ट कोलोनी
जोधपुर-342001 (राजस्थान)

स्वर्ण तंत्रम्
रसायन विद्या पर एक दुर्लभ पुस्तक

लेखक- डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

प्राचीन काल से भारतीय ग्रन्थों में 'कीमियागिरी' या रसायन विद्या पर प्रामणिक रूप से बहुत कुछ लिखा गया है, पर इनमें से अधिकतर ग्रन्थ लुप्त से हो गये थे, या संस्कृत में थे।

लेखक ने वर्षों के परिश्रम से सैकड़ों ग्रन्थों को छान कर इस अचरज भरे ग्रन्थ की रचना की है, जिसमें पारद (पारा) विज्ञान, उसका शोधन एवं पारे से स्वर्ण बनाने की विधियां दी है,

पुस्तक को दो भागों में विभक्त किया है, और प्रत्येक भाग में उससे संबंधित पूर्ण प्रामाणिक गोपनीय एवं दुर्लभ जानकारी दी है, जो सरल भाषा में है, और प्रत्येक पाठक इसे पढ़ कर इस क्षेत्र में सफलता पा सकता है - प्रवेश, पारद के विभिन्न नाम, पारद सिद्ध योगी, पारद से संबंधित दुर्लभ ग्रन्थ, रसायन विद्या, पारद विद्या का प्रामाणिक इतिहास, चौसठ औषधियां और उससे स्वर्ण निर्माण, निखिलेश्वरानन्द, पारद संस्कार-स्वेदन, मर्दन, मूर्च्छन, उत्थापन, पातन, रोधन, नियमन और दीपन प्रयोग। पारे से स्वर्ण निर्माण।
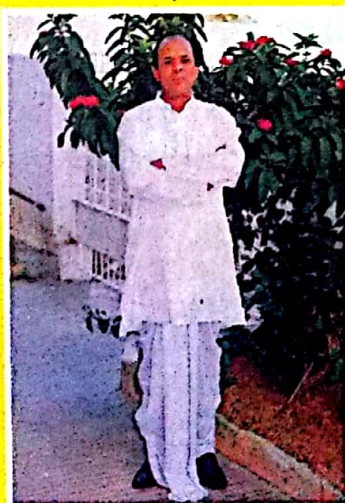
इसके अतिरिक्त भी इस विषय से संबंधित गोपनीय एवं दुर्लभ सामग्री संकलन।

स्वर्ण तंत्रम्

आपके और आपके परिवार के लिए महत्वपूर्ण पुस्तक

(मूल्य 30/-)

प्रत्येक बुक स्टाल पर उपलब्ध। या निम्न पते पर पत्र व्यवहार कर ग्रंथ प्राप्त कर लें- इसके लिए मनियार्डर या बैंक ड्राफ्ट से आधा मूल्य अग्रिम भेजना जरूरी है।

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान कार्यालय

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कोलोनी, पोस्ट जोधपुर (राजस्थान) पिन-342001

एजेंट बन्धु ऐजन्सी के लिये ऊपर लिखे पते पर पत्र व्यवहार करें.।